भिक्खु दृष्टान्त

संग्रहकर्ता :

श्रीमद् जयाचार्य

'थ-द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता

◇

प्रथमावृत्ति

जून, १९६०

◇

प्रति संख्या

१५००

◇

पृष्ठ संख्या

१४८

◇

मूल्य :

दो रुपये पच्चास नये पैसे

◇

मुद्रक :

रेफिल आर्ट प्रेस

कलकत्ता—७

प्रकाशकीय

भिक्षु-विचार ग्रन्थावली का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठको के समक्ष है। इसमे तेरापन्थ के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी के कतिपय जीवन-प्रसंगो का संग्रह है। इन बहुमूल्य संस्मरणों का तेरापंथ-इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनसे स्वामीजी के जीवन की वास्तविक झाँकी पाठको के सामने आयगी और उनको उनकी भावनाओ के मूलस्रोत तक पहुँचने का अवसर प्राप्त होगा।

आशा है, पाठको को प्रस्तुत प्रकाशन अत्यंत प्रिय प्रतीत होगा।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१
१ जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक,
साहित्य-विभाग

भूमिका

यह पुस्तक आकार मे इतनी छोटी होने पर भी सामग्री की दृष्टि से बहुत ही महत्व-पूर्ण है। इसमे स्वामीजी के ३१२ जीवन-प्रसगो का सकलन है। ये जीवन-प्रसग मुनि श्री हेमराजजी के लिखाये हुए हैं जो स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे और शासन के स्तम्भ स्वरूप माने जाते थे। इन प्रसगो को श्रीमद् जयाचार्य ने लिपिबद्ध किया। इस पुस्तक के अन्त में जयाचार्य की कृति 'भिक्षु यश रसायण' के जो दोहे उद्धृत हैं उनसे यह बात स्पष्ट है। इन प्रसगो में सहज स्वाभाविकता है। रग चढाकर उन्हें कृत्रिम किया गया हो ऐसा जरा भी नही लगता। इन हूबहू चित्रित जीवन-पटो से स्वामीजी के जीवन, उनकी वृत्तियो, उनकी साधना और उनके विचारो पर गभीर प्रकाश पडता है। स्वामीजी की सैद्धान्तिक ज्ञान-गरिमा, प्रत्युत्पन्न बुद्धि, हेतु-पुरस्सरता, चर्चा-प्रवीणता, प्रभावशाली उपदेश - शैली और दृढ अनुशासनशीलता आदि का इन जीवन प्रसगो से बडा अच्छा परिचय होता है। जीवन प्रसगो का यह संकलन एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति है जो स्वामीजी के समय की जैन धर्म की स्थिति, उस समय के साधु-श्रावको की जीवन-दशा तथा उनके आचार-विचारो की यथार्थ भूमिका को प्रामाणिक रूप से उपस्थित करती हुई स्वामीजी की जीवन-व्यापी अखण्ड साधना का एक सुन्दर चित्र उपस्थित करती है। श्रीमद् जयाचार्य ने इन दृष्टान्तो का सकलन कर स्वामीजी के जीवन और शासन के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओ को ही सुरक्षित नही किया वरन् उस समय की स्थिति का दुर्लभ इतिहास भी गुम्फित कर दिया है, जिसके प्रकाश में स्वामीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का सही मूल्याङ्कन किया जा सकता है।

मुनि हेमराजजी की दीक्षा स० १८५३ मे हुई थी। उनकी दीक्षा का प्रसग बडा रसपूर्ण है। उसमें स्वामीजी की वैराग्यपूर्ण उपदेश-शैली का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। साथ ही उससे मुनि हेमराजजी के व्यक्तित्व की सुन्दर झांकी मिलती है। इस पुस्तक में मुनि हेमराजजी और स्वामीजी के साथ घटे हुए अन्य भी कई प्रसगो का उल्लेख है जो दोनो की जीवन-गरिमा पर गहरा प्रकाश डालते हैं। मुनि हेमराजजी दीक्षा के बाद चार वर्ष तक स्वामीजी की सेवा में रहे। बाद में स्वामीजी ने उनका सघाडा कर दिया और उन्हें अलग विचरना पडा। इस पुस्तक मे दिये गये प्रसगो में से कुछ हेमराजजी स्वामी के रूबरू घटे हुए हैं। कुछ उन्होने स्वामीजी से सुने। कुछ दृष्टान्त ऐसे हैं जो दूसरो से उन्होने सुने और प्रामाणिक समझ श्री जयाचार्य को लिखाये।

स्वामीजी से चर्चा करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकृति और धर्मों के लोग आते। कुछ स्वामीजी को नीचा दिखाने के लिए आते, कुछ उनकी बुद्धि की परीक्षा करने, कुछ धर्म-चर्चा के नाम पर उनसे झगडा करने, कुछ सैद्धान्तिक चर्चा करने और कुछ जडभरत—दूसरो के सिखाए हुए। जो व्यक्ति जैसा होता उसके अनुरूप हेतु तर्क, बुद्धि-कौशल, दृष्टान्त अथवा सूत्र-साक्षी से स्वामीजी चर्चा करते या उत्तर देते। लिफाफा देख-कर मजमून समझ लेना यह उनकी बुद्धि की सबसे बडी विशेषता थी और इस विशेषता के कारण वे आगन्तुक व्यक्ति के मानस का चित्र पहले से ही खीच लेते और अपनी औत्पातिक बुद्धि से युक्ति-पुरस्सर प्रत्युत्तर दे चमत्कार-सा उत्पन्न करते। इन दृष्टान्तो मे उनकी इस विशेषता के अनेक अद्भुत चित्रण मिलते हैं।

उनकी वाणी सहज ज्ञानी की वाणी है। वह स्वय स्फुरित है। उसमे अध्यात्म, सवेग तथा वैराग्य-रस भरा हुआ है। निर्मल ज्ञान-रश्मियो का प्रकाश है। स्पष्ट और सही सूझ तथा दृष्टि है। उसमे जैन दर्शन के मौलिक स्वरूप पर दिव्य प्रकाश है तथा क्रांत वाणी की तीव्र भेदकता और उद्बोधन है।

स्वामीजी महान् धर्मकथी थे। छोटे-छोटे दृष्टान्तो के सहारे गूढ दार्शनिक प्रश्नो का उत्तर उन्होने इतने सुबोध और सरल ढग से दिया है कि उन्हे पढ कर हृदय विस्मय-विमुग्ध हो जाता है।

स्वामीजी की सी दृढता बहुत कम देखी जाती है। न्याय मार्ग-पर चलते हुए वे विघ्न-बाधाओ से कभी नही घबडाए। वे दुर्दान्त योद्धा का सा मोर्चा लेते हैं और कभी पीछे नही ताकते।

शिष्यो के साथ उनका व्यवहार जितना वात्सल्यपूर्ण होता उतना ही अवसर पर कठोर भी। अनुशासन के समय यदि वे वज्रादपि कठोर थे तो अन्य प्रसगो पर कुसुमादपि मृदु भी।

चर्चा के समय वे दुर्भेद्य व्यूह से देखे जाते हैं। सिद्धान्त-बल, बुद्धि-बल, तर्क-बल, हेतु-बल, परम्परा-बल—इनकी अनोखी छटा सूर्य की रश्मियो की तरह एक चकाचौंध पैदा कर देती है। गभीर ज्ञान और लक्ष्य-भेदी गिरा समुद्र की ऊर्मियो की तरह छल-छल निनाद करते हुए देखे जाते हैं। पैनी तर्क-शक्ति और अवसर-अनुकूल व्यङ्गोक्ति तीक्ष्ण तीर की तरह सीधा लक्ष्य-भेद करती सी दीखती है।

स्व-समय और पर-समय का सूक्ष्म विवेक उनकी लेखनी द्वारा जैसा प्रगट हुआ है वैसा अन्यत्र नही देखा जाता। जैन धर्म को मलीन करने वाली मान्यताओ और आचार का धान और तुस की तरह पृथक्करण जैसा उन्होने किया अन्यत्र दुर्लभ है। मिथ्या अभिनिवेशो और मान्यताओ पर उनके प्रहार तीव्र रहे।

उनका बल शुद्ध आचार पर रहा। केवल वेष के वे जीवन भर विरोधी रहे। इसके लिए उन्हें बड़े कष्ट सहने पड़े पर वे कभी पश्चात्पद नहीं हुए। शुद्ध श्रद्धा और आचरण के साथ सयमी का प्रमाणपुरस्सर वेष हो, यदि साधु का बाना धारण किया हो तो उसके साथ शुद्ध श्रद्धा और आचार भी हो—यही उनका प्रतिपाद्य रहा। 'कृत्रिम ब्राह्मणी', 'खोटा सिक्का', 'छिद्रवाली नौका', 'लूकडी का चौधरपन' आदि दृष्टान्त उनकी इस भावना के प्रतीक हैं।

उन्होंने एक व्यंग किया है 'पति के मरने पर स्त्री को उसकी अरथी के साथ बांधकर जला दिया गया और उसे सती घोषित कर दिया गया। यदि कोई इस तरह जबरदस्ती सती की गई स्त्री का स्मरण कर प्रार्थना करे—हे सती माता! मेरा बुखार दूर करो तो स्वयं क्रूरता की शिकार बनी वह सती क्या बुखार दूर करेगी? वैसे ही यदि रोटी का भूखा कोई साधु का वेष पहरे और उससे कोई कहे कि तुम श्रामण्य का अच्छी तरह पालन करना तो वह क्या खाक पालन करेगा?'

अनेक दृष्टान्तो मे बडा सुन्दर तत्त्व निरूपण मिलता है। उदाहरण स्वरूप थोडे से दृष्टान्तो की हम यहां चर्चा करेंगे।

पुस्तक और ज्ञान मे क्या अन्तर है, इसकी भेद-रेखा एक दृष्टान्त मे बडी ही सुन्दर रूप से प्रगट हुई है 'पुस्तक के पन्नो को ज्ञान कहते हो सो पुस्तक के पन्ने फट गये तो क्या ज्ञान फट गया? पन्ने अजीव हैं, ज्ञान जीव है। अक्षरो का आकार तो पहचान के लिए है। पन्नो में लिखे हुए का जानना ज्ञान है। वह आत्मगत है। स्वय के पास है। पन्ने भिन्न हैं।' (२०८)

सगठन का प्रश्न अनेक बार सामने आता है। स्वामी जी के सामने भी वह आया था। उनका चिन्तन है 'विचार और आचार की एकता के बिना साधु जीवन की एकता सम्भव नही। श्रद्धा और आचार की एकता हो जाने पर द्वेष नही टिकता। उसके अभाव मे द्वेष नही मिट सकता।' (२०६)

आइस्टीन से उसकी स्त्री ने पूछा—'तुम्हारा सापेक्षवाद क्या है सरलता से बतलाओ।' आइस्टीन ने उत्तर दिया—'सुहाग रात्रि छोटी लगती है और एक क्षण का भी अग्नि का स्पर्श बडा दीर्घकालीन लगता है यही सापेक्षवाद है।'

स्वामी जी रात्रि मे व्याख्यान दिया करते। जैन साधु को रात्रि मे एक प्रहर के बाद जोर से बोलने का निषेध है। द्वेषी हल्ला मचाते—'रात्रि बहुत हो गयी। १। पहर १॥ पहर बीत गई फिर भी व्याख्यान चलता है। यह साधु का काम नही।' स्वामी जी ने एक बार उत्तर दिया 'विवाहादि सुख की रात्रि छोटी मालूम देती है। यदि मनुष्य सध्या-समय मर जाय तो दुख की वह रात्रि अत्यन्त दीर्घ हो जाती है। इसी तरह

जिन्हे द्वेषवश व्याख्यान नही सुहाता उन्हें रात्रि अधिक आई दिखाई देती है। जो अनुरागी हैं उन्हें तो वह प्रमाण से अधिक आई नही दिखाई देगी।' (१८) स्वामी जी ने लोगो को समझाने मे ऐसे सापेक्षवाद का अनेक जगह उपयोग किया है।

धन और ज्ञान के साथ गठबधन होता ही है ऐसा मानना निरी भूल है। धनी जो कुछ करता है वह ज्ञान से ही करता है—यह सिद्धान्त नही हो सकता। उत्तमो जी ईराणी बोले—'आप देवालयो का निषेध करते हैं पर पूर्व मे बडे-बडे लखपति करोडपति हो गये हैं उन्होने देवालय बनवाये हैं।' स्वामी जी ने पूछा—'तुम्हारे पास ५० हजार की सम्पत्ति हो जाय तो देवालय बनावाओगे या नही ?' वह बोला—'अवश्य बनवाऊँगा।' स्वामी जी ने पूछा—'तुममें जीव के कितने भेद हैं ? कौन सा गुणस्थान है ? उपयोग, योग, लेश्या कितनी है ?' वह बोला—'यह तो मुझे मालूम नही।' स्वामी जी बोले—'पूर्व के लखपति करोडपति भी ऐसे ही समझदार होगे। सम्पत्ति मिलने से कौन-सा ज्ञान आ जाता है।' (३६)

इन दृष्टान्तो मे कई अनुभव-वाक्य भरे पडे हैं 'आत्म-प्रदेशो में झामना हुए बिना निर्जरा नही होती', (१२०), 'धान मिट्टी की तरह लगने लगे तब सथारा कर लेना चाहिए', (१२१) 'आडम्बर न रखने से ही महिमा है' (१२५), 'साधु गृहस्थ के भरोसे न रहे', (२६०-२६१), 'जिस चर्चा से भ्रम उत्पन्न हो वैसी चर्चा नही करनी चाहिए' (२५६)। आदि आदि।

उनकी दृष्टि भविष्य को भेदती। वे बहुत आगे की देखते। उनका कहना था छिद्र से दरार होती है। पहले कोपल होती है और फिर वृक्ष। एक बार किसी ने कहा : 'आप काफी वृद्ध हो चुके हैं। अब बैठे-बैठे प्रतिक्रमण क्यो नही करते ?' स्वामी जी बोले 'यदि मैं बैठ कर प्रतिक्रमण करूगा तो सम्भव है बाद वाले लेटे-लेटे करें।'

अहिंसा के क्षेत्र मे उन्होने जितना सोचा, विचारा, मनन किया, मंथन किया उसकी अपनी एक निराली देन है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना के वे एक सजीव प्रतीक थे। 'छहो ही प्रकार के जीवो को आत्मा के समान मानो'—भगवान की यह वाणी उनकी आत्मा को भेद चुकी थी।

अहिंसा विपयक कितने ही सुन्दर चिन्तन इस पुस्तक मे हैं। स्वामी जी से किसी ने पूछा—'सूत्रो मे साधु को त्रायी-रक्षक कहा है। जीवो की रक्षा करना उसका धर्म है।' स्वामी जी ने कहा—'त्रायी ठीक ही कहा है। उसका अर्थ है जीव जैसे हैं उन्हें वैसे ही रहने देना, किसी को दुःख न देना।' (१५०)

उस समय एक अभिनिवेश चलता था—'हिंसा बिना धर्म नही होता।' इस बात की पुष्टि मे उदाहरण देते—'दो श्रावक थे। एक को अग्नि के आरम्भ का त्याग था, दूसरे को नही। दोनो ने चने खरीदे। पहला उन्हें यो ही फाँकने लगा, दूसरे ने उन्हें भूनकर भूने

बना लिए। इतने में साधु आये। पहले के पास कच्चे चने होने से वह बारहवा व्रत निष्पन्न नही कर सका। दूसरे ने भूने वहरा कर बारहवां व्रत निष्पन्न किया। तीव्र हर्ष के कारण उसके तीर्थंकर गोत्र का बधन हुआ। यदि अग्नि का आरम्भ कर वह भूने नही बनाता तो इस तरह उसके तीर्थंकर गोत्र का बधन कैसे होता ?'

स्वामी जी ने उत्तर मे दृष्टान्त दिया—'दो श्रावक थे। एक ने यावज्जीवन के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। दूसरा अब्रह्मचारी ही रहा। उसके पाच पुत्र हुए। बड़े होने पर दो को वैराग्य हुआ। पिता ने हर्षपूर्वक उनको दीक्षा दी। अधिक हर्ष के कारण उसके तीर्थंकर गोत्र का बधन हुआ। यदि हिंसा में धर्म मानते हो तो सन्तानोत्पत्ति मे भी धर्म मानना होगा। हिंसा बिना धर्म नही होता तब तो अब्रह्मचर्य बिना भी धर्म नही होना चाहिए ?'

किसी ने कहा—'एकेन्द्रिय मार पचेन्द्रिय जीव पोषण करने मे धर्म है।' स्वामी जी बोले—'अगर कोई तुम्हारा यह अगोछा छीनकर किसी ब्राह्मण को दे दे तो उसमे उसे धर्म हुआ कि नही ?' वह बोला—'इसमे धर्म कैसे होगा ?' स्वामी जी ने पुन पूछा—'कोई किसी के धान के कोठे को लुटा दे तो उसे धर्म होगा या नही ?' उसने कहा—'इसमें धर्म कैसे होगा ?' स्वामीजी बोले—'धर्म क्यो नही होगा ?' वह बोला—'मालिक की इच्छा बिना ऐसा करने मे धर्म कैसे होगा ?' स्वामीजी बोले—'एकेन्द्रिय जीवो नें कब कहा—हमारे प्राण लेकर दूसरे को पोषो। एकेन्द्रियो के प्राण लूटने से धर्म कैसे होगा ?' (२६४)

किसी ने प्रश्न किया 'एक बालक पत्थर से चीटियो को मार रहा था। किसी ने उससे पत्थर छीन लिया तो उसे क्या हुआ ?' स्वामीजी ने पूछा 'छीनने वाले के हाथ क्या लगा ?' उसने जवाब दिया—'पत्थर।' स्वामीजी ने कहा—'तुम्ही विचार लो छीनने वाले को क्या होता है ?' (५३)

दूसरा अभिनिवेश था—'एकेन्द्रिय को मार पचेन्द्रिय को पोषण करने मे धर्म अधिक होता है।' स्वामीजी बोले 'एकेन्द्रिय से द्वीन्द्रिय के पुण्य अनन्त होते हैं। द्वीन्द्रिय से त्रीन्द्रिय के। त्रीन्द्रिय से चोइन्द्रिय के और चोइन्द्रिय से पचेन्द्रिय जीव के। एक मनुष्य पचेन्द्रिय को पैसे भर लट खिला कर उसकी रक्षा करे तो उसे क्या हुआ ?' इस प्रश्न का वह जवाब देने मे असमर्थ हुआ। स्वामीजी बोले 'जिस तरह द्वीन्द्रिय को मार पचेन्द्रिय को बचाने में धर्म नही, वैसे ही एकेन्द्रिय मार पचेन्द्रिय बचाने मे धर्म नही।' (२४८)

किसी ने कहा—'भगवान् ने वनस्पति खाने के लिए बनाई है।' स्वामीजी ने पूछा 'गाँव मे अगर एक भूखा सिंह आ जाये तो तुम क्या करोगे ?' वह बोला 'मैं भाग

कर गाँव के बाहर चला जाऊँगा।' स्वामीजी ने कहा 'भगवान् ने मनुष्य को सिंह का भक्ष्य बनाया है। तुम सिंह के भक्ष्य होकर क्यो भाग कर गाँव के बाहर चले जाओगे ?' वह बोला 'मेरा जी कष्ट पाने को तैयार नही। इसलिये भाग कर चला जाऊँगा।' स्वामीजी बोले 'सर्व जीवो के विषय मे यही बात जानो। मौत सबको अप्रिय है। उससे सब जीव दुःख पाते हैं।' (२३६)

स्वामीजी के सामने जिज्ञासा थी—'किसीने पैसा देकर सर्प छुडाया। वह सीधा चूहे के बिल मे गया। वहाँ चूहा नही था। सर्प छुडाने वाले को क्या हुआ ?' स्वामीजी ने कहा 'किसी ने काग पर गोली चलाई। काग उड गया, उसके गोली नही लगी। गोली चलाने वाले को क्या होगा ? काग उड गया इससे उसके गोली नही लगी यह उसका भाग्य पर गोली चलाने वाले को तो पाप लग चुका। इसी तरह किसी ने सर्प को छुडाया, वह चूहे के बिल मे गया अन्दर चूहा नही यह उसका भाग्य। पर सर्प को छुडाने वाला तो हिंसा का कामी हो गया।' (२७२)

स्वामीजी ने एक बार कहा 'एक मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य को कटारी से मारने लगा। वह मनुष्य बोला—'मुझे मत मारो।' तब वह बोला—'मेरे तुझे मारने के भाव नही हैं। मैं तो कटारी की परीक्षा करता हूँ। देखता हूँ वह कैसी चलती है।' तब वह बोला—'गनीमत तुम्हारे कीमत आंकने को। मेरे तो प्राण जाते हैं।' (१०१)

अहिंसा के क्षेत्र मे कार्य और भावना दोनो पर दृष्टि रखनी पडती है यह उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है। स्वामीजी ने अहिंसा के क्षेत्र मे तुच्छ एकेन्द्रिय जीवो के प्राणो का भी उतना ही मूल्यांकन किया है जितना कि सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य के जीवन का। एकेन्द्रिय जीवो के भी प्राण हैं। उन्हे भी सुख-दुःख होता है। मनुष्य के लिए उनके सहार मे पाप नही, यह धर्म और अहिंसा के क्षेत्र मे नही टिक सकता।

स्वामीजी कइयो को प्रिय थे और कइयो को अप्रिय। कइयो के लिए स्वागतार्ह थे और कइयो के लिए एक महान् भय। इस तरह एक ही व्यक्ति के अलग अलग रूप दिखाई देते हैं। इसके कारण की स्वय स्वामीजी ने ही मीमासा की है। इसमे अपेक्षा-वाद है। स्वामीजी कहते हैं—'एक ही पकवान दो मनुष्यो के सामने आता है। निरोग को वह मीठा लगता है और रोगी को कडवा। यह वस्तु का अन्तर नही उसके भोक्ता का अन्तर है। सम्यक् दृष्टि को साधु अच्छा लगता है और मिथ्या दृष्टि को बुरा।' (३०३)

'गाँव के मनुष्य दो व्यक्तियो के सामने आते हैं। एक व्यक्ति पीलिये का रोगी है वह उन सबको पीला ही पीला देखता है। दूसरा व्यक्ति स्वस्थ है। उसे वे पीले नही मालूम देते। वैसे ही मेरे श्रद्धा-आचार उनको प्रपंच मालूम देते हैं जिनमे स्वय मे प्रपच है। जिनमे शुद्ध दृष्टि है उन्हे मेरे श्रद्धा-आचार मे कोई खोट नही दिखाई देती।' (३००)

स्वामीजी के विचारो को सही रूप से तोलने की यदि कोई शुद्ध तुला हो सकती है तो वह आगम-वाणी है। स्वामीजी जैन-मुनि थे। जैन-शास्त्रो के आधार पर वे मुण्डित हुए थे। उसमे उनकी अनन्य श्रद्धा थी। उनके आचार, विचार और व्यवहार में जिन-वाणी का प्रत्यक्ष प्रभाव है। इस कसौटी पर देखा जाय तो वे सौ टच सोने की तरह खरे उतरते हैं।

स्वामीजी के इन दृष्टान्तो का श्रीमद् जयाचार्य ने अपने 'भिक्षु यश रसायण' नामक सुदर चरित्र-काव्य मे भरपूर उपयोग किया है। सगीतमय मधुर पद्य मे उन्हें गुम्फित कर स्वामीजी के एक मार्मिक जीवन-चरित्र की धरोहर उन्होंने भावी पीढी को सौंपी है।

लेखक की 'आचार्य सत भीखणजी' नामक पुस्तक में अनेक दृष्टान्तो का हिन्दी अनुवाद और भाव स्फोटन है। इसी पुस्तक के द्वितीय खण्ड (अप्रकाशित) मे अवशेष अन्य दृष्टान्तो का प्रकरणानुसार उपयोग किया गया है।

सद्य प्रकाशित 'भिक्षु-विचार दर्शन' नामक सुन्दर पुस्तक मे भी अनेक दृष्टान्तो के गाभीर्य उद्घाटित हैं।

स्वामीजी के दृष्टान्त आज तक हम लोग व्याख्यानो मे सुनते रहे। प्रथम बार वे सम्पूर्ण रूप में मूल राजस्थानी भाषा में पाठको के सामने उपस्थित हैं। यह प्रकाशन तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर अवश्य ही बडा समीचीन माना जायगा। इन दृष्टान्तो मे स्वामीजी का जीवन-सन्देश भरा पडा है। तेरापन्थ के वे शिलान्यास से हैं और उच्च धार्मिक जीवन की प्रेरणा देते हैं।

१५, नूरमल लोहिया लेन,
कलकत्ता
१ जून, १९६०

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

——०——

भिक्खु दृष्टान्त

: १ :

बून्दी में सवाईराम ओस्तवाल चर्चा करता भिक्खु कह्यो : गाय भैंसरा मूहडा आगै घणो चारो नाख्या ओगालो करै। जब तेह कहै : मौनें ढाढो कह्यो। वैराजी थयो। तब स्वामीजी कह्यो : थें ढाढा थया म्हारो ज्ञान चारो थाय। इम कह्या राजी थयो। पछै सवाईराम गुरु किया।

एकदा सवाईराम ने · कह्यो : म्हे तेरापन्थ्या नै यूं जाब दिया यूं हठाया। जद सवाईराम बोल्यो : दोया रे झगड़ो लागा एक क्षणै तो पोतारो घर कुण्णार पुन कियो। दूजो कजियो करतो डरै। घर को जावतो करै, सो बोलता डरै। थें थारो घर कुण्णार पुन कियो। साध पणारो जावतो नहीं। सो मन आवै ज्यूं बोलौ। इम कही कष्ट कीधो।

एक दिन चरचा करता सवाईराम ने · · कह्यो : थें म्हांने दोषीला कह्यो, पिण थारा गुरा ने पिण किंवारिया रो दोष लागै छै। जब सवाईराम कह्यो : एक राजा रो प्रधान राजा रो माल खावै नहीं, पिण दूजा प्रधान द्वेषी। सो राजा कने चुगली खाधी ए प्रधान आपरो माल खावै छै। जब राजा दोयां ने भेलाकर पूछ्यो। तब ते चुगलखोर कहै : डावड़ा नें दरबार रा पाना स्याही लेखणा दीधी। जद प्रधान कह्यो : पाना स्याही लेखणा तो भणवानै दीधी छै। ए भणिया राजा रै इज काम आवसी। राजा सुणीनै राजी थयो। चुगल फीटो पड्यो, चुगल झूठी चाड़ी खाधी, अणहुंतो खूंचणो काढ्यो, ज्यूं थें किंवाड़िया रो दोष बतावो सो थें पिण झूठा छो।

※

: २ :

पाली में भिखणजी स्वामी आज्ञा लेइ नै एक हाठ में ठहर्या। सो रुघनाथजी रा दुकान वाला रै घरे जाय बाइ ने कह्यो : ए काती सुद नमपू

ताई जाय नहीं। जद तिण बाई स्वामीजी ने कह्यो : म्हारी आज्ञा नहीं। जद भिक्खु कह्यो : चोमासै में पिण तू कहसी जद परहा जासा। जद बाई कह्यो : मोने था सरिखा कहि गया—चौमासौ लागा पछै जाय नहीं, तिणसूं आज्ञा नहीं। पछैं स्वामीजी आप गोचरी ऊठ्या। उदैपुरिया बाजार में एक मैड़ी जाची। आप बेठा ने साधा ने मेल उपगरण मंगाय लिया। दिन ऊँचा रहै। रात्रि हेठे दुकान में वखाण देवै। परखदा घणी होवै। लोक घणा समज्या। रुघनाथजी सिज्यातर ने घणोई कह्यो—थे जागा क्यूँ दीधी। ए अवनीत निन्हव छै। जब ते कहै—काति सुदी १५ ताई ना कहुं नहीं। पछै थोड़ा दिना में मेह घणो आया थी पहिली उतरिया तिण हाट रो पाट भागो। सैंकड़ा मणा बोझ पड्यो। ए बात स्वामीजी सुण कह्यो : म्हाने हाट छुडाई त्यां ऊपर छद्मस्थ रा स्वभाव थी लहर आवारो ठिकाणो, पिण म्हा सूं तो उपगार ईज कीधो, ऐसा खिमावान। ❀

: ३ :

पींपाड़ में भीखणजी स्वामी ने रुघनाथजी रो साध जीवणजी कहै : साधु रो आहार अव्रत प्रमाद में है। जद स्वामीजी कह्यो : भगवान री आज्ञा छै सो काम चोखो। पिण जीवणजी मान्यो नही। फेर स्वामीजी पूछ्यो : साधु आहार करै सो काम चोखो के खोटो ? जीवणजी बोल्यो : साधु आहार करे, ते खोटो काम, त्यागै ते चोखो काम। दिशा आदि जाता मिलै जद स्वामीजी पूछे जीवनजी ! खोटो काम कीधो के करणो है ? इम बार-बार पूछनां लातरियो। कहै—भीखणजी ! साधु आहार करै सो काम चोखोइ है। ❀

: ४ :

कंटालीया में भीखणजी स्वामी रो मित्र गुलोजी गाधइयो। तिणने स्वामीजी पूछ्यो। गुला ! काइ खेती कीधी ? हॉ स्वामीनाथ कीधी। वामीजी पूछ्यो : उपत खपत कीकर है ? जद गुलजी बोल्यो : स्वामीनाथ ! रुपिया दश लागा, कांयक हल रै भाडारा, कायक निनाणरा कायक बीजरा, सर्व दस रुपिया लागा। स्वामीजी पूछ्यो : पाछो कितरोक आयो ? जद

गुलजी कह्यो : स्वामीनाथ । रुपिया दशेक रो माल पाछो आयो । इतराक रुपिया का मूँग, इतरोक चारो, इतरीक बाजरी, सर्व रुपया दशेक रो माल पाछो आयो । लागो जितरो तो आ गयो, खेती वापरी मे तो चूक नहीं । जद स्वामीजी बोल्या : गुला ! दश रुपिया कोठा री माली में पड़िया रहता तो इतरो पाप तो न लागतो । इसो आरम्भ क्यूँ कीधो । ❀

: ५ :

देसूरी नो नाथो साधु स्त्री बेटी माँ छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकृति करडी, आछी तरह आज्ञा मे चालै नहीं । तीन वर्ष आसरे टोला मैं रह्यो । पछै टोला बारै निकल गयो । कनै हुंता त्या साधा स्वामीजी ने आय कह्यो : नाथो छूट गयो । जद स्वामीजी कह्यो : किणहिरे गूबड़ो दुखतो घणों ने पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै के वैराजी हुवै ? जद कह्यो राजी हुवै । ज्यूँ दुखदाइ छूटा वेराजीपो नहीं । ❀

: ६ :

राग द्वेष ओलखायंवा स्वामीजी दृष्टांत दियो । किणहि डावरा रे माथा मैं दीधी । जद तो लोक उणनें ओलंभो देवे । भला आदमी छोहरा ना माथा मे क्यू दे । अनै किणही डावरा ना हाथ में लाडू दियो । तथा मूलो दियो । उणने कोई वरजै नहीं । ओ राग ओलखणो दोहरो, अनें ऊ द्वेष ओलखणो सोहरो । तिण सू वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेप न कह्या । राग मिट्या द्वेप तो पहिलाइज मिट जाय । ❀

: ७ :

जयमलजीरा टोला माहि थी संवत १८५२ रै आसरे गुमानजी, दुर्गदासजी, पेमजी, रतनजी, आदि सोलै जणा नीकल्या । थानक, नित्य पिण्ड, कलालरो पाणी वहिरणो आदि छोड, नवो साधपणो पचख्यो, पिण सरधा तो वाहिज पुन री । जद लोक कहिवा लागा : भीखणजी नीकल्या ज्यू एहि नीकल्या । जद स्वामीजी बोल्या : सिरोईना राव वालों पालखो खड़ो कियो है । सिरोईना रावना अमराव, कामदार, आदि मतो कियो :

उदैपुर, जैपुर, जोधपुर, वाला रे पालखी आपारेइ पालखी बणावो। इम विचार वांस बाध ऊपर छाया करी लाल वस्त्र ओढाय पालखो वणायो। पालखी रो वांस तो लाक सहित वक्र पणै हुवै, तिणमें तो समझै नहीं, अनै या पालखो वणायो ते पाधरो वास घाल। विपरीत पणै दीसै। एहवा पालखा में रावने वेसाण हवा खावा नीकल्या। साथै मनुप आगै पाछै घणा गाम वारे आया। जब खेत कने रूंखरी छाया विश्राम लियो। जद करसणी बोल्या : अठै मां वालो रे मा बालो। छोहरा छोहरी बीहेला। जद त्यारा चाकर साथै हुंता ते बोल्या : मा बोल रे मां बोल रावजी है रे रावजी। जद करसणी बोल्या : बूडगइ बात रावजी मर गया। म्हे तो रावजी री मा जाणी थी। जद चाकरां करसण्यां नें कह्यो : जयपुर, जोधपुर, उदयपुर वाला रे पालखी तिणसूं यांरेइ पालखो वणायो है। सो रावजी अठै हवा खावा आया है। जद करसण्या कह्यो : डोल सरिखो क्यूं वणायो ? स्वामीजी कह्यो : जेसो सिरोइना रावनो पालखो जिसो यां नवो साधपणो पचख्यो है। पिण सरधा खोटी। जीव खवाया पुन सरधै। सावद्य दान में पुन सरधै तिणसूं समकत चारित्र एक ही नहीं। ❀

: ८ :

गुमानजी रो साध दुर्गदासजी तिणनें भीखणजी स्वामी कह्यो : म्है आधाकर्मी थांनक में दोप वतावता, जद थे मानता नहीं अनै अबै उणानैं छोड्यां पछै थेइ थानक निषेधवा लागा। जद दुर्गदासजी बोल्या : रावण रा उमराव रावण ने खोटो जाणता था, पिण गोली राम कानी वाहता। ज्यूं उणां भेला हुंता, जद म्हे पिण थानक न निषेधता। अने थे थानक निषेधता जद म्है द्वेप करता। ❀

: ९ :

गुमानजी रो साध पेमजी, हेमजी स्वामी ने बोल्यो : हेमजी तीन तूंबड़ा वधता हुंता ते आज फोड़ न्हाख्या। जद हेमजी स्वामी कह्यो : उणा माहिं थी नीकलने नवो साधपणो पचख्या ने तो घना दिन थया, अनें तीन तूम्बड़ा

वधता परठ्या कह्यो ते किण कारण ? जद पेमजी कह्यो : ढीला पडिया था सो सांकडा ह्वैता २ हुस्यां। पछै हेमजी स्वामी भीखणजी स्वामी नें कह्यो : महाराज ! आज पेमजी इसी बात कही : ढीला पड्या सो साकडा ह्वैता २ हुस्या। जद स्वामीजी बोल्या : थे यूं क्यूं नहीं कह्यो। किणहि जावजीव शील आदर्‌यो। अब महिना पछै बोल्यो : एक स्त्री म्है आज छोडी। जद किण ही कह्यो : थे शील आदर्‌या नें तो घणा महिना थया है नी ? जद ते बोल्यो : ढीला पड्या हा सो सांकडा ह्वैता २ हुस्या। ॐ

: १० :

पादुरा उपाश्रय मे भीखणजी स्वामी ने हेमजी स्वामी गोचरी उठता था। इतरे सामीदासजी रा दोय साध मेला वस्त्र, खावे पोथ्यारा जोडा, विहार करता 'भीखणजी कठै' 'भीखणजी कठै' इम करता आया। स्वामीजी कह्यो : म्हारो नाम भीखण। तब उवे बोल्या : थाने देखवारी मनमें थी। जद स्वामीजी कह्यो : देखो। जद उवे बोल्या : थे सर्व बात आछी करी पिण एक बात आछी न करी। स्वामीजी कह्यो : काइ ? जद त्या कह्यो : बावीस टोलारा म्है साध, त्यानें असाध कहो छो ते। जद स्वामीजी कह्यो : थे किणरा साध ? जद त्या कह्यौ : म्है सामीदासजी रा साध। जद स्वामीजी कह्यो : थारा टोला में इसो लिखत है—इकीस टोला रो थामें आवै तो दिक्षा देइ माहे लेणो। इसो लिखत है सो थे जाणो हो ? जद त्या कह्यो : हा जाणा छा। जद स्वामीजी कह्यो : इकीस टोला तो थेइ उथाप्या। गृहस्थ नेइ दीक्षा देइ लेवो। अनें त्यानेइ दीक्षा देइने माहे लेवो। इण लेखै त्या इकीस टोलानें गृहस्थ बरोबर गिण्यां। सो इकीस टोला तो थेइ उथाप्या। एक थारो टोलो रह्यो सो भगवान कह्यो—बेलो प्रायश्चित्त रो आया तेलो देवे तो देवणवालानें तेलो आवै। थे उणाने साध सरधो हो ने फेर उणानें नवो साधपणो देवो, सो थारे लेखे थानें साधपणो आवे। इण लेखे थारो पिण टोलो उथप गयो। ते सुणनें बोल्या : भीखणजी थारी बुद्धि जबरी। इम कहि जावा लागा। स्वामीजी कह्यो : अठै रहो तो आज चरचा करां। जद ते बोल्या : म्हारै तो रहिवारी थिरता नहिं। ईम कहि चालता रह्या। ॐ

: ११ :

एक गाम में स्वामीजी ऊतर्‌या। अमरसिंहजी रा दो साध, इसरदासजी कोजीरामजी, आया। उवै ऊनर्‌या तिहा स्वामीजी जाय ऊभा प्रश्न पूछ्‌यो। अणुकम्पा आणने किणही भूखा मरता नें मूला दिया, तिणमें काइ हुवो ? जद उवे बोल्या : इसो प्रश्न मिथ्याती हुवे सो पूछै। जद स्वामीजी बोल्या : पूछणवाला तो पूछ लीधी। पिण कहिणवाळा कह्या मिथ्याती हुवै तो मत कहो। जद ते बोल्या : म्है तो कहां छा—मूलामें पाप। जद स्वामीजी कह्यो : मूलामें तो पुण्य पाप दोनू है। पिण मूला अणुकंपा आणनें खुवायां केइ मिश्र कहै। जद कह्यो : मिश्र कहै सो पापी। फेर पूछ्‌यो—केइ पाप कहै। जद कह्यो : पाप कहे सोई पापी। फेर पूछ्‌यो केइ पुण्य कहै। जद त्यां कह्यो : पुन कहै सोइ पापी। जद स्वामीजी फेर विचारणा ऊंडी करनें बोल्या : केइ पुन सरधै है। जद त्या कह्यो : सरधसी मन आइ ज्यूं। जद स्वामीजी कह्यो थारे श्रद्धा पुन री। थे पुन परूपो नहीं। पिण पुन सरधो हो। इत्यादिक कहि कष्ट करी ठिकाणे पधार्‌या। ※

: १२ :

पाली में एक जणो भीखणजी स्वामी सूं चरचा करता ऊंधो अवलो बोलै। कहै—थारा श्रावक इसा दुष्टी सो किणही रा गला माहिं थी पासी नहीं काढै। घणो विपरीत बोलतां स्वामी भीखणजी बोल्या : थांरा ने म्हारा मत कहो, समचैइ वात करो। जब कांयक नजीक आयनें कहै : कांइ समचै बात कहो। तब स्वामीजी बोल्या : एक जणै रूंखड़ा सूं पासी खाधी। दोय जणा मारग जाता उणनें देखी। पासी काढै ते किसोयक ? अनें नहिं काढै ते किसोयक ? तब ते बोल्यो : पासी काढै ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनों जाणहार, देवलोक में जाणहार, दयावंत। घणा गुण कीधा। नहीं काढै जिको महापापी, महादुष्टी, नरक रो जावणहार। जद स्वामीजी कह्यो : थें नै थांरा गुरु दोनूं जणा जाता हा। उणरी पासी कुन काढै। जब उ बोल्यो : हुं काढुं। थारा गुरु काढ के नहीं। जब कहै उवे क्यानैं काढै। उवे तो साधु

है। जव स्वामीजी कह्यो ' मोक्ष देवलोक रो जाणहार तो तूं ठहर्‌यो। थारे लेखै नरक जावणहार थांरा गुरु ठहर्‌या। जब घणो कष्ट हुवो। जाब देवा समर्थ नहीं। ❀

: १३ :

किण ही कह्यो. अहो भीखणजी। वाइसटोला वाला थारा अवगुण काढै है। जद स्वामीजी कह्यो : अवगुण काढै है के घालै है? जव ते बोल्यो : अवगुण काढै है। जद स्वामीजी कह्यो : छांनी काढता। कायक तो उवे काढै। कायक म्है काढा। म्हारै अवगुण काढणा इज है। ❀

: १४ :

पीपार मे कितरा इक जणा मनसोबो करनें पूछ्यो—भीखणजी। लोक मे यूँ कहै छै—'सात-सात तो देस्यूँ अने एक-एक गिणस्यूँ', तेहनो अर्थ काई? जद स्वामीजी कह्यो : एतो पाधरो अर्थ छै। सात सुपारी देवे अनें एक सातो गिणै। लोक सुणनें आश्चर्य थया। ❀

: १५ :

भीखणजी स्वामी देसूरी जाता घाणेरावना महाजन मिल्या। पूछ्यो : थारो नाम काइ? स्वामीजी बोल्या : म्हारों नाम भीखन। जव ते बोल्या : भीखण तेरापन्थी ते तुम्हें? जद स्वामीजो कह्यो : हाँ, उवेहीज। जव ते क्रोधकर बोल्या ' थारो मूँहडो दीठा नरक जाय। तिवारे स्वामीजी कह्यो : थारो मूँहडो दीठा? जव त्या कह्यो : म्हारो मूँहडो दीठा देवलोक ने मोक्ष जाय। जद स्वामीजी कह्यो ' म्हे तो यूँ न कहा—मूँहडो दीठाँ स्वर्ग नरक जाय पिण थारी कहिणी रे लेखे थारो मूँहडो तो म्है दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हे जास्या। अने म्हारो मूँहडो थे दीठो सो थारी काहिणी रे लेखे थारे पानें नरक ईज पडी। ❀

: १६ :

संवत अठारे पंतालीस रे वर्षे पीपार चोमासो कीधो। हस्तुजी, कस्तुरा जी रो पिता जगू गांधी, तिण रे चरचा करता श्रद्धा वेठी। पछै जगू

गाँधी ने कह्यो : भीखणजी री श्रद्धा खोटी। किण ही श्रावक ने वासती दीधा में ई पाप कहै। किण ही गृहस्थ री वासती चोर ले गयो तिण में ई पाप कहै। इम चोर ने श्रावक सरीखो गिणै। तव जगू गाँधी स्वामीजी नें ए वात पूछी। एक न्याय किम ? जद स्वामीजी कह्यो : उणाने पूछणो थारी पछेवड़ी एक तो चोरनें ले गयो, एक थे श्रावक नें दीधी थाने किण बातरो प्रायश्चित्त आवै ? जो उवे चोर ले गयो तिणरो प्रायश्चित्त न कहै अनें श्रावक नें पछेवड़ी दीधी रो प्रायश्चित्त कहै तो उणारे लेखे इज देणो खोटो ठहर्यो। पछै जगू गाँधी उणानें छोडने स्वामीजी नें गुरु किया। ❀

: १७ :

संवत अठारे पैंतालीसे पीपार चोमासै घणां लोक समझ्या। जगू गाँधी पिण समझ्यो। जिणरो ·रे श्रावका ने दोरो घणो लागो। जब लोक कहै : भीखणजी जगूजी समजतां बीजा ने इ दोरो लागो पिण खेतसीजी लुणावत ने तो दोहरो घणों इज लागो। सोच घणों करे। जद स्वामीजी कह्यो : परदेश में चल्यांरी सुणावणी आयां सोच तो घणाइ करे, पिण लांबी कांचली तो एक जणी पहरै। ❀

: १८ :

तिणहिज चोमासै वखाण सुणनें लोक राजी घणा हुवै। कोई द्वेषी कहै रात्रि घणी आई सवापोहर, दोढपोहर। जब स्वामीजी कहै : दु ख री रात्रि मोटी लखावै। विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनें समीं सांझ मनुष मूँया ते दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै। ज्यूँ वखाण न गमें ज्यानें रात्रि घणी मोटी लखावै। ❀

: १९ :

तिणहि चोमासै केइ वखाण तो नहिं सुणैं अनें अलगा वेठ निंदा करै। जद किणही कह्यो : भीखणजी। थे तो वखाण देवो अनें ए निंदा करे। जद स्वामीजी कह्यो : श्वान रो स्वभाव झालर वाज्या रोवण को पिण यूँ न समझै या झालर विवाह री छै कै मूवांरी छै। ज्युँ ए यूँ न समझै वखाण

में ज्ञानरी बात आवै, तिणसूँ राजी होणो जठैइ रह्यो अपूठी निंदा करै। थारै निंदारो स्वभाव छै, तिणसूँ ऊँधी सूझै। ❀

: २० :

तिण पींपार में एक गैबीराम चारण भगत थयो। ते लोकामे पूजावै। भगता ने लापसी जीमावै। तिणने लोकां सीखायो : तूं भगताने लापसी जीमावे तिणमे भीखणजी पाप कहै। जब ते गैबीराम घोटो हाथ में ले गूघरा धमकाव तो स्वामीजी कनें आयो। कहै हे भीखण बाबा। हूँ भगतांनें लापसी जीमाऊँ सो काइ हुवै ? स्वामीजी बोल्या : लापसी मे जैसो गुळ घाले जैसी मीठी हुवै। इम सुणने घणो राजी हुवो। नाचवा लागो। भीखण बाबै भलो जाब दीधो। लोक बोल्या : भीखणजी पहिलां उत्तर जाणै घड़इज राख्यो हुँतो। ❀

: २१ :

संवत अठारे तेपनें सोजत में चोमासो किधो। लोका घणां समझ्या। जब किणहि कह्यो : भीखणजी। उपगार तो आछो कियो। घणा नें समझाया। जद स्वामीजी बोल्या : खेती कीधी पिण गाम रै गोरवे है सो गधा आय न बड़िया तो टिकसी बाकी काम कठिन। ❀

: २२ :

स्वामीजी नीकल्या। साधवियां न हुई तठा पहिला किणहि कह्यो : थारे तीरथ तीन हीज है ? लाडू है पिण खाडो है। जद स्वामीजी बोल्या : खाड़ो है पिण चोगुणी रो है। ❀

: २३ :

रांयांमें वखाण वाचता आचार नीं गाथा सुणनें मोतीराम बोहरो बोल्यो : भीषणजी। बादरो बूढो हुवो है तो हि गुलाच खेलणी छौडै नहिं। ज्यू थे बूढा थया तोहि बीजानें निषेधणा छोड्या नहिं। जद स्वामीजी बोल्या : थांरै बाप हुंड्यां लीखी, थारे दादे हुंड्या लिखी, पाटा पाटी थेइ संवेट्या कोइ नहीं। दीपचंद मुणोत मन में घरो देई आपरा हेतू मिन्नाने कह्यो—भीखणजी

री वचन इसो निकल्यो सो पाटा-पाटी समेट तो दीसे है। जब त्या आप आप रा रुपइया खांच लीया। पछै थोडा दिना में परवार गयो। पाटा पाटी सांवट लिया। ❀

: २४ :

रीयां में अमरसांहजी रो साधु तिलोकजी स्वामीजी कनें आय बोल्यो: सूत्र में अन्न पुण्ये पाण पुण्ये आदि नव प्रकारे पुण्य कह्या है। भगवंत प्रदेशी री दानशाला कही पिण पापशाला न कही। भगवंत अन्न पुण्य कह्यो पिण अन्न पाप न कह्यो। अरे थे दान दया उठाय दीधी। स्वामीजी बोल्या: अनुकंपा आणनें कोइ ने सेर बाजरी दीधी तिणमे छै तो पुण्यक ? जद बोल्यो: हम क्या जाणै। हम तो मंड़िया वाचते। हम आगरे के पाणी पीधे। हम दिल्ली के पाणी पीधे। जद स्वामीजी बोल्या: दिल्ली आगरा में तो गाया कटै। इण वात में कांइ सिधाई। सूत्र भण्या ह्वे तो कहो। इतलै रतनजी जती लूंको आयो। ए बात सुण तिणनें निषेधनें बोल्यो: म्हे ढीला पड गया हां तो ही माना एक दांणा में च्यार पर्याय च्यार प्राण ते खुवाया पुण्य किम हुसी अनैं थे मुंहपती वाधने क्यूं खोटी हुवा ? एकेन्द्रि खुवाया पुण्य कहो छो ! इम कष्ट कीधो जब चालतो रह्यो। ❀

: २५ :

रीयां में हरजीमल सेठ कपड़ा री वीनती कीधी। स्वामीजी बोल्या. थे साधा रे अर्थे मोल लेइ कपड़ो वहिरावो ते म्हानै कल्पै नहीं। जब सेठ बोल्यो: बीजा तो लेवै। हूं माल लेइ वहिरावूं मौनें कांइ हुवो ? जद स्वामीजी बोल्या: उणानें इज पूछ लेवो। जद सेठ बोल्यो: कहिण में तो मोल ले दिया में उवे ही पापइ कहै पिण लेवे तो उरहो। म्हारा पहिरण ओढण माहिलो कपड़ो आप लेवो। जद स्वामीजी बोल्या: उ पिण नहि ल्या। बीजा पिण कपड़ो ले गया भीखणजी पिण ले गया। कुण तार काढै। ❀

: २६ :

हरजीमल सेठ रागी थयो जद रुघनाथजी से उरजोजी साधु मोटो ओलिया लेइ वांचवा लागो। भीखणजी उठै अमकड़िये गामें काचो पाणी

लीधो, अमकड़िये गाम कंवाड जड़नें सूता, अमकड़िये नित्य पिण्ड लीधो, इत्यादिक अनेक दोष पाना सू वांचवा लागो। जब सेठजी बोल्या . जोधपुर जावो राजा कनै पुकारो। आ तो ब्यावट है। ओ झगड़ो म्हासूँ नहीं मिटै। थे इतरा दोष बतावो अनें उवें कहसी एकइ दोष न सेव्यो। इणरो तार किसतरा काढा ? जद उरजोजी बोल्या . भीखणजी पिण म्हानें कहै उ थानें दोष लागै। जद सेठ बोल्या उवे तो सूत्ररी साख सूं समचै दोष कहै—साधानै ओ काम करणो नहीं। इम कहि कष्ट कीधो। ❁

: २७ :

पींपार में वखाण मे घणां लोक सुणता ताराचंद संघवी बोल्यो . थे वखाण सुणो थारे दाझो लाग जावेला। जद स्वामीजी बोल्या · दाझो लागै ते निला रूंखड़ा नै लागै पिण सूका ठूठा नें काइ दाझो लागै ? सुणनें लोक घणा राजी थया आछो जाव दियो। ❁

: २८ :

कृष्णगढ में स्वामीजी पधारया। गोचरी ऊठ्या। चरचा करवा पूठै आया। स्वामीजी पाडियां रा वास मोहला मै गोचरी पधारया। मोहला रे मूंहढै ऊभा चरचा करण रे मते। जद मलजी मूंहतो बोल्यो : इण चरचा मे स्वाद न पावोला। मोकलो कह्यो पिण मान्यो नहीं। इतलै स्वामीजी गोचरी करनें पाछा पधारया। जद · ए कह्या : भीखणजी। थे वैरागी वाजो नें इण मोहला में नुखतो थयो तिणरा घर सूं पकवान लाया। तिवारै भीखणजी स्वामी बोल्या · इणरो दोष काइ ? जद ए कह्यो थे वैरागी वाजो नें इसा काम करो। मनुष मोकला भेला थया। स्वामीजी बोल्या : म्है तो न आण्यो। जद··· ए कह्यो न ल्याया हो तो पात्रा खोलो। जद स्वामीजी घणीं वेला ताइ पात्रा खोल्या नहीं। पछै ए पात्रा खोलवारी घणी खांच कीधी, जद घणा लोक देखता पात्रा उघाड्या। लाडू न दीठा जद ए घणा फीटा पड्या। जद मलजी कह्यो : म्है थानें पहिला वरज्या हुता—थे भीखणजी सू चरचा मत करो। घणा लोका मे भूंडा दीठा। ❁

: २९ :

खेरवा में स्वामीजी कनें ओटौ स्याल डंधो अँवलो बोल्यो : थें श्रावक नें दियांइ पाप कहो नें वेश्या नें दियाइं पाप कहो छो, इण लेखे श्रावक अनें वेश्या सरीखा गिण्या। जद स्वामीजी बोल्या : ओटाजी लोटी भरनें काचो पाणी थांरी मांनै पायां कांइ हुवै ? जद ते बोल्यो पाप हुवै। जद स्वामीजी फेर बोल्या : एक लोटी पाणी वेश्यानै पायां कांइ हुवै ? जद बोल्यो : इणमैइ पाप हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : थारै लेखै थारी मां ने वैश्या सरीखी गिणी कांई ? जब घणो कष्ट हुवो। लोक बोल्या ओटैजी मा नैवैश्या सरीखी गिणी। ॐ

: ३० :

ढूंढार मैं स्वामी भीखणजी पासे श्रावगी चरचा करवा आया। बोल्या : मुनी नें तार मात्र वस्त्र राखणो नहीं। राखै ते परीसह थी भागा। जद स्वामीजी कह्यो : परीसह कितरा ? जब ते बोल्या : परीसह बावीस। स्वामी जी कह्यो : पहलो परीसह किसो ? जब त्यां कह्यो क्षुधा रो। स्वामीजी पूछ्यो : थांरा मुनि आहार करे कै नहीं करै ? जब त्या कह्यो एक टक करै। जब स्वामीजी कह्यो : थांरा मुनी प्रथम परीसह थी थांरे लेखै भागा। जब ते बोल्या : भूख लागा आहार करै। जद स्वामीजी कह्यो म्हेइ सी लागां कपड़ो ओढा। वलि स्वामीजी पूछ्यो : थांरा मुनी पाणी पीवै कै नही ? जब त्या कह्यो पाणी पिण पीवै। जद स्वामीजी कह्यो : इण लेखै थांरे मुनी दूजा परीसह थी पिण भागा। जद ते बोल्या : तृषा लागा पाणी पीयै। जद स्वामीजी कह्यो : सीतादिक टालवा म्है पिण वस्त्र ओढा अनें जो भूख लागां अन्न खायां, तृषा लागां पाणी पीधां परीसह थी न भागै तो सीतादि टालवा वस्त्र राख्यां पिण परीसह थी न भागै। इत्यादिक अनेक चरचा सूं कष्ट कीधो। हिवे दूजे दिन घणां भेला होय नें आया। स्वामीजी दिशां पधारता था सो साहमां मिल्या। करड़ा होय ने बोल्या : म्है तो चरचा करवा आया नें थें दिशां जावो छो। उणांरी नूराणी देखने स्वामीजी बोल्या : आज तो थे कजिया रे मते आया दीसो छो। जब ते बोल्या : थांनै किस तरै खबर पड़ी ?

स्वामीजी कह्यो म्हां में अवधि आदि ज्ञान तो छै नहीं। पिण थारी नूराणी देखने कह्यो। जद साध बोल्या : आया तो कजिया रे मतै, दान दयारी चरचा करणी। जद स्वामीजी बोल्या : थारा जावतो घणाइ लिख्या पढ्या है चरचा तो काल कीज करडी थी। पछै त्यां माहिला केयक चरचा करनें समज्या।

: ३१ :

एक दिन घणा श्रावगीयां स्वामीजी नें कह्यो : आप वस्त्र न राखो तो आपरी करणी भारी घणी। जद स्वामीजी कह्यो : म्हें श्वेताम्बर शास्त्र थी घर छोड्या है। तिणमें तीन पछेवडी, चोलपटो आदि कह्या है जिणसूं राखा हाँ। दिगम्बर शास्त्र री प्रतीत आया वस्त्र न्हाख नग्न होय जावाला। पछै कपडो नहीं राखा। ❀

: ३२ :

एक बाइ स्वामीजी सूं आहार नी वीनती घणी वार करै—कदेइ म्हारे घरेइ गोचरी पधारो। एक दिन स्वामीजी पधार्‌या। ते देख घणी राजी होय वहिरावा लागी। जद स्वामीजी पूछ्यो : थारै हाथ तो धोवणा पडता दीसै है। जद ते बोली : हाथ तो धोवणा पडसी। जद स्वामीजी पूछ्यो : हाथ काचा पाणी सूँ धोवसी के उन्हा पाणी सूं ? जद ते बोली : उन्हा पाणी सूं धोवसूं। जद स्वामीजी कह्यो : कठै धोवसी ? जद तिण मोख री जागा बताइ—अठै धोवसूं। जद स्वामीजी कह्यो : ओ पाणी कठै पडसी ? जद तिण कह्यो : हेठै पडसी। स्वामीजी कह्यो : इहा पाणी पड्‌ता वाउकाय आदि जीवांरी अजयणा हुवै। सो मोनें ए आहार लेणो न कल्पे। जद तिण कह्यो : आपतो आहार देखनें लीजै, लारै म्हे गृहस्थ कार्य सारा तिणमे आपरै काइ अटकै ? म्हारी संसार नीं क्रिया है किस तरा छोडा। जद स्वामीजी कह्यो : हे बाई। थारी कर्म बंधवारी सावद्य क्रिया ही तू नहीं छोडै तो रोटी रे वासते म्हारी साची क्रिया हूं किम छोडू ? इम कहिनै चालता रह्या। ❀

: ३३ :

माधोपुर में भाया तो घणा समज्या सो गोचरी गया कहै आघा पधारो। वायां रो मन नहीं। जद भाया वायां ने कह्यो : सगला में सिरै तो मस्तक, देही में उत्तरता पग। यारे पगा में तो माथो देवा फेर चोका री किसी गिणत ? इम कही नें समझाय स्वामीजी नें मांही लेजाय नें वहिरायो। ए कला पिण भायां नें स्वामीजी सिखाइ दिसै। ❀

: ३४ :

काफरला में साध गोचरी गया। एक जाटणी रे धोवण, पिण वहिरावै नहीं। कहै—देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसू पीवणी आवै नहीं। साधां आय स्वामीजी ने कह्यो : एक जाटणी रे धोवण मोकलो। पिण इम कहै। जद स्वामीजी पधार्‌या। वाइ नै कह्यो : धोवण वहिराव। जब ते वाइ कहै : जिसो देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसूँ पीवणी आवै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : गाय नें चारो देवै नाखें ते दूध देवे ज्यूं साधाने धोवण दियां आगै सुख पावै। इम सुणनै कह्यो : ल्यो महाराज। पछै धोवण लेइ ठिकाणै पधार्‌या।❀

: ३५ :

खारचिया में स्वामीजी पधार्‌या। एक वाई कह्यो स्वामीजी म्हार भैंस व्यावै जब पधारो तो लाहो लेवूँ। ते किम भैंस व्याया एक महिना ताइ दूध दही वावर देवै, पिण विलोवै नहीं। ते देवी रे टाणै पधारज्यो। जद स्वामीजी कह्यो : थांरै कद भैंस व्यावै ने कद देवी हुवे। म्हानै कद समाचार हुवें ने म्है आवा। ❀

: ३६ :

केलवा में एक वाई कहै स्वामीजी पधारै तो साधपणो लेवूं। इम बात करवो करै। पछै स्वामीजी पधार्‌या। धसका सूं बाई ने ताव चढ़ गयो। साम्है दर्शण करवा आई जद स्वामीजी पूछ्यो : कांइ थयो ? यूं क्यूं बोलै है। जद री राटा करती कहै स्वामीजी। आपरो पधारणो हुवो नें मोने ताव चढ़ गयो। जद स्वामीजी पूछ्यो दिक्षा रा धसका सूं तोने ताव न चढ्यो

हैक। जद् तिण कह्यो मन मैं आइ तो खरी। जद स्वामीजी कह्यो : यूं धसको पड़ै तो दिक्षा री काम जाव जीव री है । ❀

: ३७ :

खेरवा री चतुरो साह स्वामीजी नें कह्यो : महाराज ! साधपण रा भाव ऊठै है। जद स्वामीजी कह्यो : थारो हीयो काचो है। घर रा पुत्रादिक रोवै जद थेइ रोवणा लाग जावो तो पछै काम कठण। जद त्यां कह्यो : आंसु तो आय जावै। जद स्वामीजी कह्यो : सासरै आणो लेवा जमाई जावै जद स्त्री तो रोवै। पिण उणरै देखादेख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक मैं भूंडी लागै। ज्यूं साधपणो लेवे जरे उणरा न्यातीला रोवै ते तो आपरै स्वार्थ पिण उणरी देखादेख दीक्षा लेणवालो रोवा लाग जावै तो बात विपरीत। ❀

: ३८ :

पींपार मे स्वामीजी गोचरी पधार्‌या। एक बाई इम बोली : भीखणजी री श्रद्धा लीधी तो उणरो धणी मर गयो। जब स्वामीजी बोल्या : बाई ! तूं ही बालक इज दीसै। थारो धणी किणसूं मूवो ? तूं तो भीखणजी री निंदा करै है। जद और बायां बोली : भीणखजी एहीज छै एहीज। तिवारे लच-काणी पडणे घरमें न्हास गई। ❀

: ३९ :

आऊवा मैं उत्तमोजी ईराणी बोल्यो : भीखणजी थें देवरा निषेधो छो पिण आगै तो वड़ा-वडा लखेसरी कोड़ेसरी त्यां देवल कराया। जद स्वामीजी बोल्या थारा घरै पचास हजार रो डैरो थया देवल करावो के नहीं। जब ते बोल्यो : हूं करावू। जद स्वामीजी पूछ्यो थामें जीवरा भेद, गुण स्थान, उपयोग, जोग, लेश्या किती ? जद ते बोल्यो : या तो मोनें खबर नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : इसा समझणा आगैइ हुवैला। डेरो किल्या किसो ज्ञानं आय जावै ? ❀

: ४० :

आऊवा मैं नगजी सादूलजी रो बेटो बोल्यो : भीखणजी तस्सुत्तरी मैं 'ता' कितरा ने 'तं' कितरा ? जद स्वामीजी बोल्या : भगवती में 'का' कितरा ने 'कं' कितरा ? 'खा' कितरा ने 'खं' कितरा ? 'गा' कितरा ने 'गं' 'कितरा' ? 'घा' कितरा नें 'घं' कितरा ? जब कष्ट हुवो। ❀

: ४१ :

किणही पूछ्यो भीखणजी थे यूं कहो एक महाव्रत भागा पांचूई भागै सो यूं साथे पांचू किम भागै ? जद स्वामीजी बोल्या : पापरो उदै हुवै जब संसार मैं इ जीव दुःख भोगवै। जिम एक भिक्षाचर नें शहर में फिरतां पांच रोटी रो आटो मिल्यो। रोटी करवा लागे। एक तो रोटी उतारनें चूला लारै मेली। एक रोटी तवै सिकै। एक रोटी खीरा सिकै। एक रोटी रो लोयो हाथ में। अनैं एक रोटी रो आटो कठोती में। एक कुत्तो आयो सो कठोती में एक रोटीरो आटो ते ले गयो। तिण कुत्ता लारै भिख्यारी न्हाठो। हेठै पड़ियो सो हाथ माहलो लोयो धूल में मिल गयो। पाछो आय देखै तो चूला लारै रोटी पडी हुंती ते मिनकी ले गइ। तवेरी तवे बल गइ। खीरां री खीरां बल गइ। इण रीते एक महाव्रत भागा पांचु भाग जावै। ❀

: ४२ :

स्वामी भीखणजी वीलाड़ै पधारया। गाम में लोक लुगाइ द्वेष घणो करै। आहार पाणी री संकड़ाई। जद स्वामीजी साधा नें कह्यो : मासखमण इहां रहिवा रा भाव है। जद साधु बोल्या : आहार पाणी री संकड़ाइ घणी। घणां लोक आहार दे नहीं। जद स्वामीजी एक गोचरी तो बाहरला गाम री करावै। एक गोचरी बड़ेर री। एक गोचरी महाजनां री करावै। सो स्वामीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोकां रै बंदोवस्ती, भीखणजी ने एक रोटी देवे तो इग्यारै समाइ दंड री। जठै जाय जठै आहार पाणी री जोगवाइ पूछ्या कहै म्है तो थानक मांह समाइ करां। एक जायगां आहार पाणी री जोगवाइ पूछ्यां कहै म्हारी नणद थाकत्त समाइ करै। सो भीखणजी नें रोटी दियां

नणंदरी समाइ गल जावै। एहवी ऊँधी सरधा। इम कठेइ भायो दे देवै, कठेइ बाइ दे देवै। कितरायक दिन नीकल्या। रुघनाथजी ने खबर हुइ जद जोधपुर सूँ चाल्या आया। लोक बखाण सुणवा आया पिण ताकीदरा विहार सू रुघनाथजी नें ताव चढ़ गयो। कनै ठोट चेला नें ल्याया ते बखाण दे जाणे नहीं। जद परिषद पाछी फिरी। बजार मैं केयक स्वामीजी रो बखाण सुणवा लाग गया। पछै लोक कहै आपस में चरचा करो। पछै ब्राह्मणा ने सिखाया म्हारे चेलो अवनीत होय गयो सो ब्राह्मणा नें दिया पाप कहै। पछै ब्राह्मण स्वामी जी कनैं आय वेदो करवा लागा। जद रामचन्द कटारियो बोल्यो थानें दिया रुघनाथजी धर्म कहै तो पचीस मण गुहा री कोठी भरी है ते परही देऊं। जद ब्राह्मण रामचन्द सारा रुघनाथजी कने आया। रामचन्दजी रुघनाथजी नें कह्यो, थे धर्म कहो तो पचीस मण गोहांरी कोठी भरी है जिका ब्राह्मणा नें गाठ बंधाय देऊं। कहो तो घूगरी रंधाय देऊं। कहो तो आटो पीसाय देऊं। कहो तो रोट्या करायनें दो मण चणा रे आटा रो खाटो कराय नें ब्राह्मणा नें जीमावूं। घणो धर्म हुवै सो बतावो। जद रुघनाथजी बोल्या : म्हे तो साध हा। म्हारे कठै कहणो है रे ? म्हारै तो मूंन है। जद रामचन्द बोल्यो : थारे नहिं कहणो तो हवे किम कहसी ? था विचे तो डवे सांकड़ा चालै। मोटा होयने काइ लोका ने लगावो हो। चरचा करणी ह्वै तो न्याय री चरचा करो। यूँ कहीनें पाछो आयो। स्वामीजी रे मास खमण होवारी त्यारी थई। जद भारीमलजी स्वामी ने रुघनाथजी कने मेल्या थांरा श्रावक चरचा री कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करो। जद रुघनाथ जी बोल्या किणरै चरचा करणी है रे ? पछै घणों उपकार कर घणां नें समझाय स्वामीजी विहार कीधो। ॐ

: ४३ :

कंटालिया मे १ भायो दीक्षा लेवा त्यार थयो पिण बोल्यो म्हारै माता री मोहणी है सो माता जीवै जितै तो दीक्षा आवती दीसै नहीं। कितरायक दिना पछै माता आऊखो पूरो कियो पछै फेर स्वामीजी उपदेश दियो। जद बोल्यो : स्वामीजी मगरे व्यापार करूं हूं सो मेरण्यारी मोहणी लागी।

जद स्वामीजी बोल्या : माता तो एक हुतो ते मर गइ पिण मेरे मेरण्या तो घणीं सो कद मरे न कद थनें दीक्षा आवै। ❋

: ४४ :

दान ऊपर भीखणजी स्वामी दृष्टंत दीधो। पाच जणां सीरमे चणा रो खेत वाह्यो। पाच सो मण चणा नीपना। पांचू जणां मतो कीधो—घर में धन ती मोकलो है था चणांरो दान धर्म करो। जब एक जणै सोमण चणां भिखारूयानें लूंटाय दिया। दूजै सोमण रा मूंगड़ा सेकाय दिया। तीजै सोमण चणानीं घूगरी रंधाय खुवाइ। चौथे सोमण चणा री रोट्या कराय पाखती खाटो करायनें जीमाया। पांचमें सोमण चणा वोसरायनें हाथ लगावारा त्याग किया। सावद्य दान में पुण्य धर्म कहै ज्यानें पूछीजै घणो धर्म किणनें थयो। ❋

: ४५ :

वलि दान ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : एक बूढो डोकरो भिक्षा मागतो फिरै। किणही अनुकम्पा आणने सेर चणां दिया। जब डोकरै किणहीनें कह्यो : एक जणै मोनें सेर चणां दिया है पिण दांत नहीं सो मोने पीस दे। जब दूजी बाई अनुकंपा आणनें पीस दिया। आगै जायनें किणहीनें कह्यो : मोने एक जणै धर्मात्मा सेर चणां दिया है दूजी बाई पीस दिया तिणसूं तूं मोनें रोटी कर दे। जब तीजी बाई अनुकंपा आण नें लूण पाणी घालने सेर चून री रोट्यां कर दीधी। ते रोटी खाय तृप्त थयो। थोड़ी देर में तृषा घणी लागी जद आगै जायनें कहै : है रे कोइ धर्मात्मा! मोनें पाणी पावै। जद चोथी बाई अनुकंपा आणनें काचो पाणी पायो। एक जणै चणा दिया, दूजी पीस दिया, तीजी रोट्यांकर जिमायो, चोथी पाणी पायो, सो चारा में घणो धर्म किणने थयो? ❋

: ४६ :

टीकमजी रो चेलो कचरोजी जालोर रो वासी सिरयारी में स्वामीजी कनें आयो। कहै भीखणजी कठै? जद स्वामीजी बोल्या : भीखण म्हारो

नाम है। जद ते बोल्यो : आपने देखवारी म्हारै मनमे घणी थी। स्वामीजी बोल्या : देखो। पछै कचरोजी बोल्यो : मोने चरचा पूछो। स्वामीजी बोल्या : थे देखवाने आया थानें काइ चरचा पूछा। तब ते बोल्यो . कायक तो पूछो। जद स्वामीजी बोल्या : थारे तीजा महाव्रत रो द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुण काइ है। जद ते बोल्यो आ तो मोनें कोइ आवै नहीं पाना मे मंडो है। स्वामीजी कह्यो : पानों फाट गयो अथवा गम गयो ह्वे तो काई करस्यो ? जद ते बोल्यो : म्हारा गुरा थानें चरचा पूछी, जिणरो थानें जाब न आयो। जद स्वामीजी कह्यो . थारा गुरा चरचा पूछी तिकाही ज चरचा थे मोने पूछो। ऊणानें जाब दियो है तो थानेइ चाला। जद कचरोजी बोल्यो . थे तो म्हारै लेखा रा दादा गुरु हो सो हूँ थासू कठासू जीतू ? जद स्वामीजी बोल्या : म्हारै तो इसा पोता चेला कोइ चाहिजे नहीं। ❀

: ४७ :

उदेपुर मे स्वामीजी कनें -एक आयो अनें बोल्यो . मोनै चरचा पूछो। जद स्वामीजी कह्यो : थे ठिकाणै आयानें काइ चरचा पूछा ? जद बोल्यो . काइक तो पूछो। जद स्वामीजी कह्यो थे सन्नी के असन्नी ? ते बोल्यो : हूँ सन्नी। स्वामी पूछ्यो : किण न्याय? जद ते बोल्यो : ना, मिच्छामि दुक्कडं, हूँ असन्नी। स्वामीजी पूछ्यो : असन्नी ते किण न्याय ? जद ते बोल्या : नहीं २, मिच्छामि दुक्कडं, सन्नी असन्नी एक ही नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ते किण न्याय ? जद ते रीस करनें बोल्यो : थे न्याय २ करनें म्हारी मत विखेर्‌यो। जातो थको छाती मे मूकी री देइ चालतो रह्यो। ❀

: ४८ :

माहढा माहै स्वामीजी रात्रि रो वखाण वाचता। आसोजी नींद घणी लै। जद स्वामीजी कह्यो : नींद आवै है ? आसोजी बोल्यो : नहीं महाराज ! बार बार पूछ्यो नींद आवै है ? जद ते कहै नहीं महाराज ! जद स्वामीजी झूठरो उघाड़ करवा वासते उत्पात बुद्धी सूँ वली पूछ्यो : आसाजी ! जीवो हो कै ? नहीं महाराज। ❀

: ४९ :

साधा मांहो माही बात कीधी, जब खेतसीजी स्वामी बोल्या: अबै तो अखैरामजी स्वामी आतमा वस कीधी दीसै है। जब स्वामीजी बोल्या: पूरी प्रतीत नहीं। आ बात किणही अखैरामजी ने जाय कही। त्यांनें गमी नहीं। पछै राजनगर चोमासो कीधो। तिहा स्वामीजी में अनेक दोष पानां में उतार आहार पाणी तोड्यो। चोमासो उतार्‌या स्वामीजी स्यूं मिल्या। खेतसीजी स्वामी अखैरामजी नें वंदनां करवा ताकीद सूं गया जब अखैरामजी बोल्या: आपांरे आहार पाणी भेलो नहीं। पछै खप करनें अखैरामजी नें समझाया। जब अखैरामजी स्वामीजी कनें आसू काढनें बोल्या: आप म्हारी प्रतीत न दीधी जिणसूँ म्हारो मन उदास थयो। खेतसीजी तो म्हारी प्रतीत दीधी। जद स्वामीजी बोल्या: म्है प्रतीत न दीधी तोही थे साचा तो म्हाने इज कीधा। गरीब साध खेतसीजी थारी प्रतीत दीधी तिणनें झूठो कीधो। इम सुणनें राजी हुवा। ❀

: ५० :

स्वामीजी पुर पधार्‌या जब मेघो. भाट आय चरचा करवा लागो। कालवादी इम कहै—"भीखणजी गाथा में तो इम कहै—एकलड़ो जीव खासी गोता, नव पदार्थ में पांच जीव कहै तिण लेखे पांचलड़ो जीव खासी गोता इम कहिणो।" जद स्वामीजी बोल्या: सिद्धां में आतमा उवे किती कहै? जद मेघो भाट बोल्यो: सिद्धां में तो कालवादी आतमा च्यार कहै है। स्वामीजी पूछ्यो: त्यां च्यार आतमां नें कालवादी जीव कहै अथवा अजीव कहै? जब मेघो भाट बोल्यो: च्यार आतमां नें उवे जीव कहै है। जद स्वामीजी बोल्या: सिद्धां में आतमां च्यार कहै ते च्यारां नें कालवादी जीव कहै इण लेखै चोलड़ो जीवतो उणारेइ ठहर्‌यो। एक लड़ म्हारी वधती ठहरी। इम कही समझायो। ते सुणनें घणो राजी थयो। ❀

: ५१ :

माधोपुर में गुजरमलजी श्रावक रे अनें केसूरामजी रे चरचारी अड़बी थइ। श्रावक में आतमां गुजरमलजी तो आठ कहै अनें केसूरामजी सात

कहै। गूजरमलजी बोल्या : चारित्र आतमा श्रावक मे नहीं हुवै तो नीलोती रा त्याग रो काइ काम ? इतलै स्वामीजी पधार्‌या। उणारै माहो माही अडवी देखनें एक जणो नेड़ो आयने छानें वातचीत कर सकै नहीं तिणसूँ दोइ पासे बाजोट मेल दिया। पछे न्याय बतायनें दोयानें स्वामीजी समझाया। स्वामीजी कह्यो : श्रावक मे पांच चारित्र नहीं ते लेखै सात आतमा इज कहणी अनें त्यागनीं अपेक्षा देशचारित्र कहिये इम कहीनें अड़वी मेटी। ❀

: ५२ :

गूजरमलजी सू स्वामीजी चरचा करता पानों बाचनें बोल कह्यो। जद गूजरमलजी कह्यो . आप मोनें अक्षर बतावो। जब स्वामीजी अखर बताय दिया अनें बोल्या : गूजरमलजी ! थारै सम्यक्त्व रहणी कठिण है आसता कची तिणसू। लोक सुणनै आश्चर्य थया। पछै अंतकाल गूजरमलजी बोल्या— केसूरामजी आदि भाया नें—स्वामीजी ओर तो श्रद्धा आचार चोखा परूप्या पिण नदी उतर्‌या धर्म था वात तो स्वामीजी पिण खोटी परूपी। भाया घणोइ कह्यो : नदी उतरवारी आज्ञा सूत्रमे भगवान दीधी छै तिणसूँ पाप नहीं। गूजरमलजी बोल्या : हीये बेसै नहीं। जब लोक बोल्या : भीखणजी स्वामी कह्यो थो, थारे सम्यकत्व रहणी कठण है सो वचन आय मिल्यो।

: ५३ :

पालीमें रात्रि वखाण ऊठ्या पछै स्वामीजी तो बाजोट ऊपर बेठा। अनें दो भाया दुकान हेठे ऊभा। चरचा करता २ दोयानेइ समझायनें गुरु कराय दिया। इतरै पाछली रात्रि पडिकमणै री वेला थइ। साधा नें कह्यो ऊठो पडिकमणो करो। ❀

: ५४ :

करेडे स्वामीजी पधार्‌या। लोक कहै—नगजी स्वामी री तेज घणो। स्वामीजी पूछ्यो : काइ तेज ? जद लोक बोल्या : नगजी गोचरी पधार्‌या। कुत्ती घणी भूसै। घणोंइ कह्यो— हे कुत्ती! साधानें मत भूस मत भूस पिण कह्यो मानें नहीं। जद्र टाग पकड़नें फेरने वणग्र-वपाण फेंक दीधी। कुत्ती पाधरी होय

गइ। जठै पछ फेर भूंसी नहीं। जद स्वामी बोल्या : कुनी पड़ो जठै जायगा पूंजी के नहीं ? जद ते गृहस्थ बोल्या : थे पूंजो जायनें। निकमा खूचणा काढो। इसा मूर्ख गृहस्थ। ❀

: ५५ :

पाली में मयारामजी गोचरी में आहार मंगायो तिणसूं आठ रोटी वधती ल्यायो। स्वामीजी गिणी नें कह्यो : आहार मंगाये उपरंत ल्याया। जब मयारामजी बोल्यो : अठै मेल द्यो अठै। जद स्वामीजी आठ रोटी काढ दीधी। मयारामजी सांधा नें धामी पिण कोइ लै नहीं। जब बोल्यो : परठ देवारा भाव है। स्वामी बोल्या : परठ नें दूजे दिन विगै टालज्यो। जब क्रोध करनें अकवक बोलवा लाग गयो। कहै : हूंतो इसा आचार्य राखूं नहीं। अकबक बोल्यो। कहै नव पदार्थ में पांच जीव च्यार अजीव री श्रद्धा ही भूठी। एक जीव आठ अजीव है। जद स्वामीजी खिमाकर विश्वासी आहार अवेर नें बोल्या : आ थारे संका है तो चरचा करांला। इम कहि उण वेला इज तावडै में विहार कीधो। उतमूण में सूत्र उत्तराध्येन थी संका मेट दीधी। प्रायश्चित्त दीधो। पछै वेणीरामजी स्वामी नें सूंप दीधो। कितरायक दिनों में छूट गयो। ❀

: ५६ :

स्वामीजी दिशां जातां एक·········साथे थयो। तेनें नीला ऊपर चालतो देखी स्वामीजी बोल्या : छतै चोखै मारग नीलां ऊपर क्यूं हालो ? जद ते बोल्यो : म्हारो नाम लियो तो हूं गाम में जाय कहिसूं भीखणजी नीला ऊपर दिशां गया। ❀

: ५७ :

रीयां पींपार वीचै एक·······मिल्यो। स्वामीजी नें एकंत लेगयो। थोड़ी वेलासूं पाछा पधार्या। जद हेम पूछै : स्वामीनाथ ! आपने कांइ बात पूछी। स्वामीजी बोल्या : आलोवणां कीधी। वलि हेम पूछ्यो : कांइ आलोवणा कीधी ? जद स्वामीजी बोल्या : कैहणो नहीं। ❀

: ५८ :

पुर वारे स्वामीजी दिशा पधार्‌या। एक · · आडो फिर्‌यो। ढोलो कूंडियो काढ्यो। झगर करवा लागो। जब एक गुवालियो आय उणनें कह्यो : या गुरा सूं मतकर। भारमलजी स्वामी कने ऊभा ज्या आश्री कह्यो या सूं कर, लडनो ह्वै तो यासूँ लड। ❀

: ५९ :

साधुपणो लेइ चोखो पाले ते मोटा पुरुप। कइ कहै—पाचमे आरा में साधुपणो पूरो पलै नहीं, इसो हिज अबारूं निभै। तिण ऊपर स्वामीजी दिष्टात दियो· किणही चौकारा नौहता फेर्‌या अने जीमण वेला एकीका ने माहै आवा दै। लोक कहै—तें चौकारा तो नोहता दिया अनें एकीका नें आवा दे ते क्यूं ? जद कहै : म्हारी पोंहच इतरीज है। अम-कडिये तो आपरै बापरै लारै धूल उडाई, किरियावर कीधो नहीं। हूं तो एकीका ने तो आवा देवूँ छूँ। जब लोका कह्यो तेंई न कीधो हूंतो कुण थारै बारणै बैठे है ? तें चोकारा नौहता देनें एकी का नें जीमावे है सो थारो जमारो विगडै है। ज्यूं लेवारी वेला तो पाच महाव्रत आदर्‌या अनें पालवारी वेला पूरा पालै नहीं तिणरो पिण इहलोक परलोक विगडै। ❀

: ६० :

साधु रो आचार बताया सूँ केइ ढीला भागल निंदा जाणै। तिण ऊपर दिष्टात दियो एक साहुकार बेटा नें सीख देवै . लेवे जिणरो पाछो देणो। न दिया लोक दिवाल्यो कहै। पाडोसी दीवाल्यो हुंतो ते सुणनें कूदै। कहै—बेटा नें सीख न दे म्हारी छाती बालै है। ज्यू साधु साधु रो आचार बतावै जद भेषधारी सुण नें कूदै। कहै—म्हारी निंद्या करै है। ❀

: ६१ :

कोइ कहै सावद्य दान मे म्हारै मौन है। यू न कहॅं—तू दे। इम कहै अनें पुण्य दरसावै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो। किण ही स्त्री कह्यो : लोटी म्हारै हाढे दीजो। समजू मन में जाणै पोतारा धणी नें दीराइ छै।

ज्यूँ सावद्य दान में पूछ्यां कहै : म्हारै मूंन है। रहस्य में पुण्य मिश्र दरसावै। समजू जाणै थांरै पुण्य मिश्र री श्रद्धा छै। ❀

: ६२ :

पुन्य री श्रद्धा वाला मिश्र री श्रद्धा वाला चौडै तो पुन्य मिश्र न परूपै पिण मन में पुन्य मिश्र श्रद्धे। ते श्रद्धा ओलखायवा स्वामीजी दृष्टान्त दियो : किण ही स्त्री ने कहै—थारे धणी रो नाम पेमो है ? जब ते कहै क्या नें हूवै पेमो। नाथू है ? क्यां नै हूवै नाथू। पाथू है क्यां नै हूवै पाथू ? धणी रो नाम आया अण बोली रहै जद समझणो इण रै धणी रो नाम ओहीज है। ज्यूँ सावद्य दान में पाप है इम पूछ्यां कहै क्या नै हूवै पाप। मिश्र है ? क्या नै हूवे मिश्र। पुण्य है ? जब मूंन रहै। जब समजू जाणै थारै पुण्य री श्रद्धा है। ❀

: ६३ :

……यानैं कहै थानक थारे अर्थे कीधो जब कहै म्है कद कह्यो थानक म्हारे वासते कीजो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दीयो : ज्यूँ डावडो कद कहै म्हारी सगाइ कीजो, पिण सगाइ किया परणीजै कुण ? डावडो। वहु किण री बाजै ? डावड़ा री। घर किण रो मंडै ? डावड़ा रो। तिम थानक पिण त्यांरो इज बाजै। तेहिज माहैं रहै तेहिज राजी हुवै। ❀

: ६४ :

तथा जमाइ कद कहै म्हारै वासते सीरो करो ? पिण जीमें परहो। जद दूजी वार फेर करै। सीरा ना सूँस करै तो क्यां नैं करै। ज्यूं ये कहै म्है कद कह्यो थानक म्हारै वासते करो। पिण त्या रै वासतै कीधां मा- है रहै परहा। जद दूजी वार फेर करै। थानक में रहिवारा त्याग करै तो क्या नें करावै ? ❀

: ६५ :

केइ कहै म्हे जीव बचावां भीखणजी जीव बचावै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : थांरा बचावणा रह्या थें मारणाइ छोड़ो। अंधारी रात्रि में किंवाड़

जडो हो अनेक जीव मरे है। किंवाड जडवारा सूंस करो तो अनेक जीवा री दया पलै। ज्यूं चोकीदार हो सो चोकी तो छोड दीधी ने चोर्‌या करवा लाग गयो। लोका नें कहै हूं चोकी देऊं छूं। सो जावता रा पइसा देवो। जब लोक बोल्या : थारी चोकी दूर रही तूं चोर्‌या ही छोड। तूं दिन रा हाट घर देख जावै ने रात्रि रा फरै चोरी करै। पइसो-पइसो घर बेठाने परहो देस्या। तू चोर्‌या छोड़। ज्यूं ये कहै म्है जीव बचावा। स्वामीजी बोल्या : थारा बचावणा रह्या मारणा छोड़ो। ॐ

: ६६ :

केइ इम कहै—हिवडा पाचमो आरो छ सो पूरो साधपणो न पलै। जद तिण ने स्वामीजी कह्यो : चोथा आरा मे तेलो कितरा दिना रो ? जद ते कहै : तीन दिना रो। स्वामीजी कह्यो : एक मूंगडो खावै तो तेलो रहै के भागै ? जद ते कहै—भागै। वलि स्वामीजी पूछ्यो : पाचमा आरा मे तेलो कितरा दिना रो ? जद त्या कह्यो तीन दिना रो। स्वामीजी पूछ्यो : हिवडा एक मूंगडो खावै तो तेलों रहै के भागै ? जद त्या कह्यो—भागै। जद स्वामीजी बोल्या : आरा रे माथे क्यूं न्हाखो ? एक मूंगडो खार्धा तेलो परहो भागै तो दोष री थाप सूं साधपणो किम रहसी ? ॐ

: ६७ :

केइ कहै—ए दोष लगावै तोहि आपा बिचै तो आछा है। काचो पाणी तो न पीवै स्त्री न राखै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : एक जणै तो तीन एकासणा किया। एकेक टक मे छै छै रोटी खाधी। एक जणै तेलो करनें आधी आधी रोटी खाधी। यामे भागल कुण ने सावत कुण ? तेलावालो भागल खोटो अने एकसनावालो सावत चोखो। ज्यूं गृहस्थ लिया व्रत चोखा पालै ते तो एकसणावाला सारीखो अनै साधुपणो लेइनै दोष सेवे ते तेलामे रोटी खाधी ते सरिषो। ॐ

: ६८ :

पालीमें लखजी बीकानेर्‌यो मूवो जद इकावन रुपिया थानक रे निमित्त उदकिया। तिण रुपिया री जायगा लेयनें लकड़ा री खटकड़ कीधी। आरंभ

थोड़ो। जद स्वामीजी नें किणही कह्यो : इनमें काइ आरम्भ है ? विशेष आरंभ नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : कोइ जनमें जद पहिला अंकूरो करै। जन्म पत्री वर्षफल तो पछै हुवै। ज्यू ओ थानक अंकूरो जिम तो हुवो। पिण लाबा आऊखावालो देखेला इण ऊपर चूनो चढ़तो दीसै है। पछै कितरायक वर्षां पछै थानक ऊपर चूनो चढ्यो जद ठेकचन्द पोरवाला कह्यो—भीषणजी कहिता था इण थानक ऊपर चुनो चढ़तो दीसै सो अबै चढै। ❀

: ६९ :

आगला नें समझावा दृष्टांत करडा दे, जब किणही स्वामीजी नें कह्यो : आप दृष्टांत करडा देवो। जद स्वामीजी कह्यो : रोग तो गम्भीर रो ढ्यो अनें कहै म्हारै खूजालो। पिण खूजाल्या साता न हुवै। हलवाणी रा डाम दिया साता हुवै। ज्यूं रोग तो मिथ्यात्व रूप करडो। ते करड़ा दृष्टांत सूं दटै। ❀

: ७० :

तिलोकचन्दजी नें चन्द्रभाणजी आचार्य पदवी रो लोभ देयनें फंटायो। जद स्वामीजी कह्यो : थानें आचार्य पदवी आणी तो कठिन है नें सूरदास री पदवी तो आवै तो अटकाव नहीं। थानें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ में छोडतो दीसै है। कितरायक वर्षां पछै तिलोकचन्दजी नें निजर कची रो नाम लेयनें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ में छोड्यो। स्वामीजी रो वचन मिल्यो। ❀

: ७१ :

एक लाडू में जहर अनें एक में नहीं। पिण समझणो हुवै ते संका मिट्या विना दोनूं नहीं खावै। ज्यूं साध तथा असाध री संका मिट्या विना वंदणा करै नहीं। ❀

: ७२ :

कई सावद्यदान में पुण्य कहै। समजू हुवै ते किमत पकी करै। असंजती नें दियां पुण्य कहो छो तो थें असंजती ने देवो के नहीं ? जद कहै म्हानें तो दियां दोष लागे म्हानें कल्पै नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टंति दियो।

एक पुरुष नें किणही कह्यो : थारे बाई रो रोग है सो सतखंडिया महिल थी पड्या थारी बाई मिटै। जद ते बोल्यो : ए बाई नो रोग तो थारे पिण छै सो पहली थे पडो। जद ते कहै म्हारा तो हाडका परहा भागै तूं पड। जद ऊ बोल्यो : थारा हाडका परहा भागै तो म्हारो रोग किसतरा जासी। ज्यूं·· कहै असंजती नें दिया म्हारो तो साधपणो परहो भागै। थें देवो थानै पुण्य होसी। जद समजू बोल्यो : थारो साधपणो भागै तो इसो दान दीधा म्हानें पुण्य किम हुसी। ❋

: ७३ :

तथा दोयजणारै घणा काल रो वैर हुंतो। पछै हेत कीधो। तिणनें नूंहतीनै जीमावा घरे ले गयो। भोजन परुसी कहै भाइजी जीमो। जब ते बोल्यो· थे पिण भेला जीमवा बेसो। ऊ भेलो बेसे नहीं। जद ते बोल्यो : था विना ए भोजन जीमण रा त्याग है। कारण भोजन मे जहरादिक है जद तो भेलो बेसै नहीं। अनै सुद्ध हुंला तो साथै बेससी। ज्यूं असंजती नें दिया पुण्य कहै। जद समजू जाणें पोते तो देवै नहीं अनैं दूजा नें पुण्य बतावे। पिण ए बात तो मूरख हुवै ते मानें। पुण्य हुवै तो पहिला पोतै कर दिखावै जद दूजा पिण मानें। ❋

: ७४ :

एक बोल्यो : भीखणजी नें कटारी सूॅं परहा मारूं। तो बाइस टोला रो वेदो मिट जावै। पछै केतलायक कालै तिणरो शील भागो। जद तिण-नें नवो साधपणो दियो। लोका मे बात फैलाई—भीखणजी नें कटारी सूॅं मारवारो कह्यो तिणसूं नवी दीक्षा दीधी। ए बात स्वामीजी पिण सुणी। बुद्धि सूॅं विचार्यो इणरो शील भागो दीसे छै पछै ते मिल्यो जद स्वामी जी पूछ्यो : थारो शील घर री स्त्री सूॅं भागो के ओर स्त्री सॅं भागो। जद ते बोल्यो : पर स्त्री सू तो न भागो घर स्त्री सूॅं पिण संघटा रूप हुवो। पूरो तो न भागो। तिण सूं नवी दीक्षा दीधी। ❋

: ७५ :

कुसलो तिलोक संकडाइ मे चालवा लागा। अनै मन में जाणें भीपणजी रा श्रावका नें फेरा। परूपणा साकड़ी करवा लागा—साधू ने तीजा पहर नीं गोचरी करणी। गाम मे रहिणो नहिं। पछैस्वामीजी मिल्या : आगै देखै तो पहलै पहर नीं गोचरी करै। जद स्वामीजी पूछ्यो : थें तीजा पहर नीं गोचरी कहो। अनैं पहले पहर किम करो। तव तड़कने बोल्या : म्हैं तो धोवण पाणी रे वासते फिरां छा। स्वामीजी वोल्या : धोवण पाणी रो दोष नहीं तो दोय रोटी ल्यायां कांइ दोप ? जद वले बोल्या : साधू नें लाडू खाणां नहीं। साधू नें घी खाणों नहीं। साधू नें किसा बछेरा बछेरी जनमावणा है। स्वामीजी वोल्या : थे कहो छो साधू नें लाडू खाणां नहीं तो देवकी रा पुत्रां लाडू वहिर्‌या इम सूत्र मे कह्यो छै। जव ते वोल्या : ऊवे तो मोटा पुरुप छा। जव स्वामीजी वोल्या : मोटा पुरुष हूं सो वली खावै इज है। जद क्रोधकर वोल्या : तुमै तेरापन्थी दान दया उठाय दीधी सो तुम नें जगत मे भाड कर देस्यां। स्वामीजी वोल्या : दो हजार आगे कहे है। जो घटता है तो दोय हजार पूरा हुवा। अनै दोय हजार पूरा है तो दोय वधता सही। पछै उठासूं नैणावै गया। स्वामीजी रा श्रावकां रे संका घाल-वारो उपाय करवा लागा। जद श्रावक पिण उणारै ठागारो उघाड़ करवा लागा। दोया में एक जणो वेलै २ पारणो करै तिणनें कह्यो . थें तो तपस्या ठीक करो छों पिण दूजो ते तो करै नहीं। जद ते वोल्यो : लोलपणो छूटा तप हूं। अनै ए लोलपी छै। जद श्रावकां तिणनें कह्यो : उवे तो थाने लोलपी कहै। तव ते वोल्यो · ओ तपस्या करै पिण क्रोधी छै। जद दूजाने कह्यो थानै ऊ क्रोधी वतावै छै। जद दोनूं भेला होय झगड़वा लागा जद लोक वोल्या :

जोड़ी तो जुगती मिली। कुशलो ने तिलोक।
ऊथपै ऊ ऊथपै। किण विध जासी मोख॥

पछै फीटा पड़नें चालता रह्या।

*

: ७६ :

बावीस टोला माहो माही उवै उणानें झूठा कहै उवै उणानें झूठा कहै। जद स्वामीजी बोल्या : कहिणी रे लेखै दोनूं साचा है। उवे ही झूठा है। अनै उवे ही झूठा है। इण लेखै दोनूं साच बोलै है। ❀

: ७७ :

पादू मे एक भाये कह्यो : हेमजी स्वामी री पछेवड़ी मोटी दीसै। जद स्वामीजी लम्बपणै चोड़पणै माप दिखाइ। उनमान नीकली। पछै स्वामीजी तिणनें निषेध्यो घणो। कह्यो च्यार आंगुल रा चटकारै वासते म्हारो माधपणो म्हे गमावा, इसा म्हानें भोला जाण्या ? इतरी थानें प्रतीत नहीं तो रसता मे काचो पाणी पीवै तो थानें काइ खवर इत्यादि घणो निषेधो। जब ते हाथ जोडने बोल्यो : म्हारै झूठी संका पड़ी। ❀

: ७८ :

टोला में थका रुघनाथजी साथै स्वामीजी गोचरी ऊठ्या। एक भायो चरखो लोढतो तिण रा हाथ सूँ आहार वहिर्‌यो। आगै रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी ! संका पडी ? जद स्वामीजी बोल्या : साक्षात् असूजतो ईज वहिर्‌यो। इणमे फेर संका काइ ? जद रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी ! दृष्टी ऊंडी राखणी। आगै था सरिखो एक नवो चेलो गुरा साथै गोचरी मे असूजतो लेता गुरा नें वरज्या जद गुरां ते आहार न लीयो। पछै एकदा विहार करता उजाड़ में तृषा घणी लागी। गुरा नें कहै मोनें तृषा घणी लागी गुरा कह्यो : साधू रो मारग है सेंठाइ राखो। पिण चेलै तृषा मरतै काचो पाणी पीधो। मोटो प्रायश्चित्त आयो। नहिं तरतो थोडा मेइ गुदरतो। जद स्वामीजी जाण्यो यानें इसो इ दरसै। ❀

: ७९ :

केइ इम कहै : हिवडा पाचमो आरो है। पूरो साधोपणो पलै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : खतमंडे तो साहूकार रे माथै अनें दिवल्या रै माथै सरिखो मंडै। धणी मांगसी तिवारे तुरत देसी। उजर करण पावै नहीं।

आकरा दीपता लेहणा। पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो मांग्या पड़ै। साहुकार तो व्याज सहित देवै अनें दिवाल्यो मूल ही में तोटो घालै। ज्यूं भगवंते सूत्र भाख्या तिम प्रमाणै चालै ते साधू अनें पाचमो आरा नों नाम लेइ सूत्र प्रमाणै न चालै ते असाध। ❀

: ८० :

वैद किण ही री आंख्या री कारी कीधी। आख ठीक हुवां वैद बधाइ मांगै। जद कहै पंचा नें पूछसूं। पंच कहसी सूझतो हुवो तो बधाइ देसूं। जद वैद बोल्या : तो नें काइ दीसे है ? जद फेरबोल्यो : पंच कहसी सूझतो हुवो तो देसूँ। जद वैद जाण्यों बधाई आय चूकी। ज्यूँ कोइ रे श्रद्धा बेसाणी नें कहै हिवै तूं गुरु कर। तब ते कहै दोय च्यार जणानें पूछसूँ तथा आगला गुरु नें पूछसूं। ते कहसी तो गुरु कर सूं। जब जाणनी इणरै श्रद्धा पकी बैठी नहीं। ❀

: ८१ :

कोइ······ नें छोडनें साची श्रद्धा लीधी। गुरू कीधा। पिण ऊणा रो परचो छूटै नहीं। वार वार जावै। जद स्वामीजी पूछ्यो यारो परचो क्यूं राखै ? जद ते बोल्यो : म्हारै आगलो सनेह है। जद स्वामीजी बोल्या : किण ही नें मेरां पकड़ ले गया। डेरो खोस लीधो। फाटका पिण दीधा। पछै घर रा मेहनत कर छुडा ल्याया। केतलायेक काले मेला मे भेला थया। ओलखने मेरां सूं मिल्यो। लोकां पूछ्यो--थारै कांइ सैंहद ? जद बोल्यो : म्हांरै भाइजी रा हाथ था फाटका लागा है सहलाणी है। आ भाइजी रा हाथ री सहलाणी है। जद लोका जाण्यो ओ पूरो मूरख है। ज्यूं यां कुगुरा रे जोग सुं तो खोटा मत मे पड्यो हो। तिण नें उत्तम पुरुषा चोखो मारग पमायो। अनै ते वली कुगुरा सुं हेत राखै तौ बड़ो मूरख। ❀

: ८२ :

सरियारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। तिहां कपूरजी पोतीया बंध हुंतो अनै पोत्यावंध री बाया पिण हुंती। संवत्छरी आया कपूरजी कह्यो : भीखणजी ! बायां सूं बोलाचाली हुइ सो खमावाने जाऊं हुं। स्वामीजी

बोल्या : खमावा तो जावो छो पिण रखै नवो कजियो करोला। जद कपूरजी कह्यो : नवो कजियो क्यानें करूं ? पछै बाया कनै जायनें बोल्यो : आपारै खमतखामणा है। थे तो अजोगाइ घणी कीधी पिण म्हारै तो रागद्वेष राखणो नहीं। जद बार्या बोली : अजोगाया थे कीधी के म्है कीधी ? इम आपसमे झगडो घणो लागो। पाछो आयनें स्वामीजीने कह्यो : भीपणजी। कजियो तो अपूठो घणो हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : म्है तो थानें पहिला इज कह्यो थो। ❀

: ८३ :

हेमजी स्वामी स्वामीजी ने कह्यो : तिलोकजी, चन्द्रभाणजी, सन्तोषचन्दजी, शिवरामदासजी, आदि टोला बारै जू जूवा फिरै ते सर्व भेला होयनै एकठा रहै तो यारोई टोलो होय जावै। जद स्वामीजी बोल्या : इसी करामात हुवै तो अठा सूइ क्यू जावै ? अठै काइ दुख थो ? ❀

: ८४ :

कह्यो : भीपणजी कोइ कसाया विचैई खोटा। जद स्वामीजी बोल्या : उणारै लेखै तो यू ही कारण कसाइ तो बकरा मारै उणारो काइ विगाड्यो ? म्है उणारा श्रावक समजाय लेवा, उणारो मत खंडन करा छा तिण सूं कहै छै। ❀

: ८५ :

भीखणजी स्वामी सरियारी सूं विहार करता सामेजी भंडारी पगा में पाग मेली बोल्यो : आज तो विहार मत करो। जद स्वामीजी बोल्या : आज तो रहा छा पिण आज पछै इसी वीणती कीज्यो मति। ❀

: ८६ :

आगरिया सूं स्वामीजी विहार करता भाया हठ घणो कीधो। पिण स्वामीजी मान्या नहीं, विहार कीधो। गाम बारै कितीयेक दूर गया। भारमलजी स्वामी बोल्या : आज तो भायां वेराजी घणा हुआ, आप विणती न

मानी तिण सूं। जद स्वामीजी बोल्या: आज तो पाछा चालो पिण आज पछै इसी विणती कीज्यो मति। ❀

: ८७ :

केलवामें परषदा बेठां ठाकर मोहकम सींहजी पूछ्यो। आपनें गाम-गाम विणतीयां आवै। घणा लोग लुगाइ आपनें चावै। नरनारी आपनें देखने राजी घणां हुवै। बाई भायाने आप वलभ घणा लागो। सो कांइ कारण? आप में इसो कांइ गुण? जद स्वामीजी बोल्या: कोइ साहूकार प्रदेश थो। तिण घरे कासीद मेल्यो। खरची मेली। सेठाणी कासीद नें देखनें राजी घणीं हुइ। उन्हा पाणी सूं उणरा पग धोवाया। आछी तरह भोजन करनें जीमावै। कनै बेठी समाचार पूछै। साहजी डीला में कीसायक है? सुखसाता है? साहजी कठै पोढै है? कठै बेसै है? कासीद जिम-जिम समाचार कहै तिम-तिम सुणने घणी राजी हुवै। पिण कासीद नें देखने राजी हुवा रो कारण धणीं रा समाचार कहै तिण सूं। तिम म्हे भगवान रा गुण बतावां छां। संसार मोक्ष रो मार्ग बतावां छा। तिण कारण लोग लुगाइ म्हासूं राजी हुवै छै। ❀

: ८८ :

वले केलवा में ठाकरां पूछा कीधी। आप आगामिक तथा गया काल नां लेखा बतावो छो सो कुण देख्या है? जद स्वामीजी बोल्या: थांरा बाप, दादा, पड़ दादा आदि पीढ़ियां रा नाम तथा त्यारी पूराणी वातां जाणो छो सो किण देखी है? जद ठाकर बोल्या: भाटा री पोथ्यां में बड़ेरां रा नाम वारता मंडी है तिण सूं जाणां हां। जद स्वामीजी बोल्या: भाटा रे झूठ बोलण रा सूंस नहीं। त्यांरा लिख्या पिण थे साचा जाणो हो तो ज्ञानी पुरषां रा भाख्या शास्त्र झूठा किम हुवै? ऊवै तो साचा ही है। इम सुणनें ठाकर घणां राजी हुवा भला जाब दीधा। ❀

: ८९ :

ढुंढार में एक गाम में स्वामीजी पधार्या, जद ठाकर अधेली रा टका पगा में मेल्या। जद स्वामीजी बोल्या: म्हे तो टका पइसा कांइ ल्यां नहीं।

जद ठाकर बोल्या : आप मोहोर लायक हो पिण म्हारी पोहच इतरीज है। अबके पधारस्यो जद रुपइयो निजर करसूँ। जद स्वामीजी बोल्या : म्है तो रुपयो मोहर आदि काइ न राखा। इम सुणनें ठाकर घणो राजी हुवो। गुणग्राम करवा लागो—आपरी करणी मोटी है। ❀

: ९० :

पुर में स्वामीजी कने गुलाब ऋषि दोय जणा सूँ · · ·रा श्रावक घणा साथे लेइने चरचा करवा आयो।   रा श्रावक ऊंधा अवला बोलै। जद स्वामीजी बोल्या : होली में राव वणाय साथै गहरीया तमासा रूप हुवै। ज्यूं थें थाने तो राव बणाया नें थें गहरीया ज्यूं बणीया दीसो हो। पिण ज्ञान री बात तो काइ दीसै नहीं। हिवै स्वामीजी गुलाब ऋषि नें पूछ्यो : शीतलजी रा टोला रा साधा नें साध सरधो के असाध ? जद ते बोल्यो : असाध सरधू छू। शीतलजी रा साध संथारो करे त्यांने काइ सरधो ? जद बोल्यो : उणा रो अकाम मरण। रघुनाथजी, जयमलजी आदि टोला वाला नें काइ सरधो ? जद बोल्यो : असाध। उणारा टोला मे संथारो करै जद ? बोल्यो : अकाम मरण। ❀

पछै   रा श्रावक बोल्या : भीषणजी नें काइ सरधो। तब स्वामीजी पहिला ही बोल्या : म्है तो थानें आगै देख्याइ नहीं अनै म्हारै थारै श्रद्धा आचार मिल जासी तो आहार पाणी भेलो कर लेवां तो अटकाव नहीं। तिवारै उणारा श्रावक कितायक बिखर गया। हिवै गुलाब ऋषि नें स्वामीजी पूछ्यो : समदृष्टि नें पाप लागै के नहीं लागै ? जब ते बोल्यो : न लागै। स्वामीजी पूछ्यो समदृष्टि स्त्री सेवै तो ? जद बोल्यो— पाप तो न लागै, पिण भेष मे सोभै नहीं। स्वामीजी बोल्या : माथै पोतियो बाधनें सेवे तो ? इत्यादिक अनेक प्रश्न पूछ्या, जद पाछा जाब देवा असमर्थ थयो, घणो कष्ट हुवो। जद क्रोध कर बोल्या : म्हासूँ चरचा करो हो पिण गोगूंदा रै भाया सू चरचा करो तो खबर पड़ै। गोगूंदा ना भाया तूँगिया नगरी ना श्रावक छै। गोगूँदा ना श्रावक अकबरी मोहर छै। जद स्वामीजी बोल्या : बलै थारै तीखो खेत्र

हुवै सो बतावो। गुलाब ऋषि बत्तीस सूत्र खाधै लिया फिरतो पिण सरधा खोटी। वली पंच महाव्रत नां द्रव्य क्षेत्र काल भाव पूछ्या। जद बोल्यो : पानां में मंड्या है। स्वामीजी बोल्या : पानो फाट जासी तो ? साधापणो थे पालो हो कै पानो पालै ? इत्यादिक घणो कष्ट कीधो। पछै स्वामीजी गोगुंदे पधार्‍या। गोगूंदे रै भायां सू चरचा करनें समझाया। सुणनें गुलाब ऋषि आयो। स्वामीजी सूँ चरचा करवा लागो। जद भाया बोल्या : महाराज थासूँ चरचा म्है करस्या। म्हारा आगला गुरु है। पछै भायां गुलाब ऋषि सूँ चरचा करने घणों कष्ट कीधो। जद क्रोध करनें बोल्यो : गोगूंदा ना भाया ठीकरी रा रुपिया छै। घणों फीटो पड़ने चालतो रह्यो। पछै गोगूँदा रा भाया स्वामीजीनै अठारै सो बाइस पानां री भगवती वैराइ। अने पन्नवणा। सूत्र वहरायो। ❀

: ९१ :

पाली में खंतिविजय संवेगी रुघनाथजी सूं चरचा कीधी। किण ही साधा नें मिश्री रे भेळो लूण वहिरायो। खंतिविजय तो कहै फाक जाणो पात्रे आय पड्यो तिण कारण अनें रुघनाथजी कहै धणींने भूलावणो अथवा परठ देणों। ब्राह्मण ने साइदार थाप्यो। ते पिण बोल्यो : फाक जाणो। पछै रुघनाथजी आचारंग काढ्यो। जद खंतिविजय रुघनाथजी कनेसूँ पानो खोसनें फाड़ न्हाख्यो। घणां लोग लुगाया सुणता कष्ट कीधो। जद संवेगियां री बायां गावा लागी— ❀

ज्ञानी गुरु जीता रे जीता सूत्र रे प्रताप ज्ञानी गुरु जीता रे।

जद रुघनाथजी घणा उदास हुवा। पछै श्रावका ने कह्यो : इणने जीतै जिसो तो भीखण है। म्है बाइसटोला साचा ज्यानेइ झूठा पाड़ै है तो ओ तो साक्षात तांवा रो रुपइयो है सो इणनें तो हठावणो सोरो है। जद त्यारा श्रावक स्वामीजी रा श्रावकां नें कहिवा लागा थारा गुरु मेवाड़ में है सो विणती मेलनें बोलावो। पछै स्वामीजी पिण मेवाड़ सूँ मारवाड़ पधार्‍या। पाली में उणांरा श्रावक स्वामीजी नें कहिवा लागा : पूजजी कह्यो है— खंतिविजय ने चरचा करनें हठावो। खंतिविजय उंधो घणो बोलै। ढंढीयारै

मूँढै मे आगुली घाली पिण दात देख्यो नथी। एक भीखन कालियो रह्यो है। इसो ऊंधो बोलै। पछै स्वामीजी विचरता-विचरता काफरला पधार्या। खंतिविजय पिण पींपार ना घणा श्रावका सूँ देवल नी प्रतिष्ठा हुवै त्या आयो। *

खंतिविजय नें घणा लोक कहै भीखणजी सूँ चरचा करणी। एकदा कुँभारा रे वास में मारग वहता साझा मिल्या। स्वामीजी नें पूछयो ताहरो नाम काइ? स्वामीजी बोल्या 'म्हारो नाम भीखण। खंतिविजय बोल्यो : उवे तेरापंथी भीखणजी ते तुम्है? जद स्वामी बोल्या : हा उवे इज। जद खंतिविजय बोल्यो : तुमारै सूँ निक्षेपा नीं चरचा करवी छै। स्वामीजी बोल्या : निक्षेपा किता? ते बोल्यो 'निक्षेप। चार—नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३, भाव ४। स्वामीजी पूछ्यो या च्यारा मे वंदना भक्ति किसानी करणी? खंतिविजय बोल्यो : च्यारूं ही निक्षेपा नीं वंदना भक्ति करवी। स्वामीजी बोल्या : एक भाव निक्षेपो तो म्है पिण वादा पूजा छा। बाकी तीन निक्षेपा नीं चरचा रही। तिणमे प्रथम नाम निक्षेपो। किणहीं कुम्भार नो नाम भगवान दियो। तिणनें थे वादो के नहीं? जद ते बोल्यो : तिणनें सूँ वादीयै? प्रभूनां गुण नथी। स्वामीजी बोल्या : गुण-वालानें तौं म्हेइ वादा छा। इम सुण जाव देवा असमर्थ थयो। हिवै स्थापना री चरचा स्वामीजी पूछी। रत्नारी प्रतिमा हुवै तो वादो के नहीं? ते बोल्यो : वादा, सोना री वांदा, रूपा री तथा सर्व धात री हुवै तो वादा। पाषाण री हुवै ता वादो के नहीं? तब ते बोल्यो : वादा। वली स्वामीजी पूछ्यो गोबर नीं हुवै तो? खंतिविजय क्रोध करनें बोल्यो 'तुम सू निक्षेपा नी चरचा करवी नहीं। तूं तो प्रभू नीं आसातना करै। अम्हनें गमे नहीं। इम कही चालतो रह्यो। स्वामीजी पिण ठिकाणै आया। पछै खंतिविजय नें लोका कह्यो : भीखणजी सूँ चरचा करो। इम बार-बार कहिवा थी खंति-विजय घणा लोका सहित आसरे दश हाटरै आय बैठो। हिवै स्वामीजी नें लोका आय कह्यो : खंतिविजयजी चरचा करवा आया है। सो आप पिण चालो। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारा भाव तो अठै इज छ। खंति-विजयजीदू इतरी दूर आया है, चरचा करवा रो मन हुसी इतरी र ओर

आ जावेला। जद लोकां वली खंतिविजय नें जाय कह्यो। आप चालो। इम कहिनें एक हाट रे आतरे ल्याय बेसाण्यो। बोल्यो : अठा सूँ तो नहीं सरकीस। पछै लोका स्वामीजी नें आय कह्यो : अबे तो आप ही पधारो। जद स्वामीजी अनें भारमलजी स्वामी पधास्या। हिवै चरचा माड़ो। स्वामीजी बोल्या : चरचा आचारंग आदि इग्यारा अंग सूत्रा री करणी। आचारंग सूत्र में एहवो कह्यो छै : ❀

सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हतव्वा—सर्व प्राण भूत जीव सत्व हणवा। एत्थ पि जाणह नत्थीत्थ दोसा—इहां धर्मनें काजें जीवहत्या दोष नहीं। अणारिय वयणमेय—ए अनार्य नो वचन छै।

एह पाठ स्वामीजी बताया। जद खंतिविजय बोल्यो : इणमें खोट है। ल्यावरे चेला आपांरी पड़त पोथी खोलेनें देख तो। तिण में पिण इम हीज नीकल्यो। तिवारे स्वामीजी बोल्या : वाचो। जद परषदा में वाचै नहीं। हाथ धूजवा लागो। तिवारे स्वामीजी बोल्या : थारो हाथ क्यूँ धूजै? हाथ ता ४ प्रकारै धूजै—एक तो कंपण वाय सूँ। के क्रोध रै वस हाथ धूजै। अथवा चरचा में हास्यां हाथ धूजै। के मैथुन रे वशीभूत। जद क्रोध रे बस बोलियो—साला रो माथो छेदिये। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारे जगत् में स्त्रिया ते मा बहिन समान है। अनैं थारे घर में कोइ स्त्री हुवै ते म्हारै बहिन। इण लेखै सालो कह्यो हुवै तो जाणवा। पिण घर में स्त्री नहीं हुवै अनै मोनै सालो कहो तो भूठ लागै। अनै थैं साधपणो लियो जद छ काय हणवारा त्याग किया सो मोनै साध तो न सरधो पिण त्रसकाय में तो छूँ। माथो छेदवारो कह्या सो मोनें हणवारो काइ आगार राख्यो। इम सुण घणों कष्ट हुवो। पछै मोतीरामजी चोधरी कह्यो : उठो परहो म्हांनै लजावो। एहता क्षमावंत साधू छै अनै थे अरल विरल बोलो। इम कही हाथ पकड उठाय ले गया। पछै स्वामीजी ने खंती-विजय पींपार आया जब लोकां जाण्यो अबै चरचा हुसी। स्वामीजी गोचरी जायै जठै ··· ·रां श्रावक कहै—पूजजी कह्या है : खंतिविजय सूँ चरचा कष्ट करो। जद स्वामीजी बोल्या : इबै करसी ता करवारा

भाव छै। पछै सरूपजी मूहतो खंति विजय ने जाय कह्यो। × × × × भीखणजी कहै है सो चरचा करो। × × पिण खंती विजय तो फेर स्वामीजी सूँ चरचा करी नहीं। स्वामीजी मास खमण रही विहार कीधो। विहार करता खंतिविजय रे उपाश्रय कने ऊभा रह्या तो पिण बोल्यो नहीं। फेर एकदा पाली मे खंति विजय सूँ चरचा हुइ। मिश्री रे बदलै लूंण आया खंतिविजय कहै पात्रे आय पड्यो तिण सूँ खाय जाणों। जद स्वामीजी बोल्या : गुल रै बदलै किण ही अमल बहिरायो, मिश्री रे बदले सोमलखार बहिरायो ते पिण थारै लेखै खाय जाणो पात्रै आय पड्यो तिण कारण। जब घणों कष्ट हुवो शुद्ध जाब देवा असमर्थ। ❀

: ९२ :

पींपार नों वासी चोथजी बोहरो पाली में दुकान माडी। चोमासो उतरया स्वामीजी तिण रो कपडो लेवा गया। दोय वासती बहिराय पूछा कीधी—हूं थानै असाध सरधूं। थानैं वासती दीधी मोनै काइ हुवो ? जद स्वामीजी बोल्या : किण ही खाधी तो मिश्री नै जाण्यो जहर तो ऊ मरै के न मरै ? जद ऊ बोल्यो : न मरै। उणरो गुण मारवारो नहीं। तिम म्है साध। त्यानै तुमैं असाध जाण नें बहिरायो तो थारै जाणपणा री खामी, पिण साधां नैं बहिरायां धर्म छै। ❀

: ९३ :

स्वामीजी अमरसींगजी रे स्थानक गया। माहै खेजडी नो रूंख देखी स्वामीजी बोल्या : रात्री में लघु परठता हुस्यो जद इणरी दया किम रहै ? तब त्यारो साधु स्वामीजी री कूट काढनै बोल्यो। जद स्वामीजी बोल्या : आ कूट काढवा री वाचणी थारे मनसूं इसीख्या के गुरां दीधी ? जद अमर-सींगजी चेला नें निषेध्यो। स्वामीजी नें बोल्या: ओ तो मूरख छै थें मनमें कांइ आणज्यो मती॥ ❀

: ९४ :

गुमानजी रो चेलो रतनजी बोल्यो हूं भीखणजी सूं चरचा करूं। जद गुमानजी बोल्या : म्है पिण भीखणजी सूँ चरचा करतां संकां छा। सो थांरी कांइ आसंग ? जद रतनजी पूछ्यो—क्यूं संको ? जद गुमानजी बोल्या : भीखणजी सूँ चरचा करतां तिणरो जाब पकड़ उणरी जोड़कर ग्रहस्थ ने सीखायने गाम २ में खराबी कर देवै। तिण कारण भीखणजी सूँ चरचा करतां संका। ❀

: ९५ :

पाली में स्वामीजी चोमासो कीधो जद बावेचां हाटरा धणी नें कह्यो : तोनै भाड़ो द्यां तूं हाट म्हांनै दे। जद हाट रो धणी बोल्यो : अबारूं तो स्वामीजी उतर्‌यां है, सो आखी पेड़ी रुपियां सूं जड़ देवो तो ही न द्यूँ। स्वामीजी विहार किया पछै भलाइं लीज्यो। पछै बावेचां जेठमलजी हाकम कनैं जाय कूँचींयां न्हाखी। कह्यो—के तो भीखणजी रहसी के म्है रहस्या। जद हाकम बोल्यो : इसो अन्याय तो म्है नहीं करां। वसती में वेश्या कसाई पिण रहै त्यां ने पिण न काढां। तो भीषणजी नें किम काढां, हाकम दृष्टान्त दियो—विजयसिंहजी रो राज है मोती बालदियो। तिणरे लाख बळद तिण सूं लखी बालदियो बाजतो। ते लूण लेवा मारवाड़ आवतो। जद जाटां रा खेत भेळै। जद जाटां विजयसिंहजी कनै पुकार करी। राजाजी बालदिये नें कह्यो—जाटां रा खेत भेळो मती। जद मोती बोल्यो : म्है तो आवसूं जद यूं ही होसी। राजाजी कह्यो : यूं ही होवै तो म्हारे देश में आयो मती। म्हारै लूंण है तो दूजा बालदिया घणाइ आवसी। अन्याय तो करवा देवां नहीं। तिम हिज जेठमलजी कह्यो थे—जास्यो तो ओर व्यापारी आण वसासां पिण साधा ने काढां इसो अन्याय म्है करां नहीं। जद बावेचां कूंचियां लेइ आप आपरे घर गया। ओर कोइ उपाय नहीं मिल्यो। जब ब्राह्मणानें कह्यो : थांने दान देवां तिणमें भीषणजी पाप कहैछै। सो म्है तो अब दान देवा नहीं। जद ब्राह्मणां स्वामीजीनें आय कह्यो : म्हांने दियां आप पाप कहो सो बावेचा म्हाने देवे

नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : थानै बावेचा पाच रुपइया देवै तो पिण म्हारै ना कहिवारा त्याग है। जद ब्राह्मण बावेचा नें जाय कह्यो : बापूजी पाच रुपइया रो हुकम कियो है। इम सुण बावेचा घणा फीटा पड्या। तो पिण स्वामीजी रात्रि में बखाण बाचै जठै बावेचा ढोलक बजावै। गावै। बखाण में विघ्न पाडै। जद भाया कह्यो : महाराज। दूजी जायगाँ उतरो : स्वामीजी बोल्या : खेतसीजी नव दिक्षित है सो देखा परीषह खमवा किसायक सेंठा है। कितरायक दिना वेदो कियो पछै बावेचा लातर गया। पर्यूषणा में इंद्रध्वज काढ्यो। स्वामीजी रा मूंढा आगै घणी वेला ऊभा रही गावै बजावै तान करै। जद केइ श्रावक बावेचा सूँ वेदो करवा लागा जद स्वामीजी कह्यो : वेदो मत करो। याने रोको मति कारण ए प्रतिमा नें भगवान न माने है सो के तो भगवान कनै करै अनै के भगवान रा साधा कनै करै। जद बावेचा बोल्या एतो समी समी विचारै। इम कही चालता रह्या। ※

: ९६ :

नाडोलाइ रो सोभाचन्द सेवग तिणनें बावेचा कह्यो : भीखणजी खैरवै है सो त्यारा अवर्णवाद विश्वर जोड। सतरै प्रकार नीं पूजा रचे है तिण माहीं सूँ तोने दश बीश रुपया देश्या। जद सोभाचन्द बोल्यो : भीखणजी सू वात करनै पछै विश्वर जोडसू। इम कही खैरवै आयो। स्वामीजी ने वंदना कीधी। स्वामीजी बोल्या : थारो नाम सोभाचन्द ? जद ते बोल्यो : हा महाराज। वली स्वामीजी पूछ्यो : तूँ रोडीदास सेवग रो बेटो ? ते बोल्यो : हा महाराज। पछै सोभाचन्द बोल्यो : आप भगवान नें ऊत्थापा छो ए वात आछी न कीधी। जद स्वामी बोल्या : म्हे तो भगवान रा वचना सूँ घर छोड साधपणो लियों सो म्हे भगवान नें क्यानै उथापां। वले सोभाचन्द बोल्यो : आप देहरो उथापो। जद स्वामीजी बोल्या : देवल रो तो हजारा मण पत्थर हुवै। म्हे तो सेर दाय सेरइ क्यानें ऊथापा। जद ते बोल्यो . आप प्रतिमा ऊथापी प्रतिमां ने पत्थर कहो। जद स्वामीजी बोल्या म्हे तो प्रतिमा नें क्या नै ऊथापा। म्हारै झूठ बोलवा रा सूस है। सो मैं तो सोना री प्रतिमा ने सोना री, रूपा री ने रूपा री, सर्वधात री प्रतिमा ने सर्वधात री कहा। पाषाण री प्रतिमां ने

पाषाण री कह्यां। इम सुण सोभाचन्द घणो हरख्यो। ओ हो इसा पुरुषां रा हूं अवगुण किम बोलूं। इसा पुरुषां रा तो गुण करणा चाहिजे। इम विचार दोय छंद जोड़्या। स्वामीजी नें सुणाय वंदनां कर पाछो आयो। वावेचां पूछ्यो छंद जोड़्या के ? सोभाचन्द बोल्यो : हां जोड्या। बस इस सुण उण सेवग नें साथे लेइ स्वामीजी रा श्रावका कने आय बोल्या : ओ सोभाचन्द सेवग निरापेक्षी है। भीखणजी नें जाणै जिसा कहसी। कहै भाइ भीखनजी किसायक है। जद सोभाचन्द बोल्यो : काइ कहिवावो उणांरी श्रद्धा उणां कनैं आपारी श्रद्धा आपां कनै है। तो पिण वावेचां मांनैं नहीं बोल्या : तूँ कह। पछै सोभाचन्द बोल्यो : भीषणजी में गुण अवगुण मोनें दरसै जिसा कहसूं। जद वावेचा फेर बोल्या : तो ने दरसे जिसाइ कहै। जद सोभाचन्द छंद जोड़्या तिका कहिवा लागो। ❋

छन्द

अनभय कथणी रहिणी करणी अति आठुँइ कर्म जीपै अधिकारी।
गुणवंत अनंत सिद्धंत कला गुण प्राक्रम पौंहोच विद्या पुण भारी।
शास्त्र सार बतीस जाणै सहु केवल ज्ञानी का गुण उपकारी।
पंचइंद्री कूं जीत न मानत पाखंड साध मुनिंद बड़ा सतधारी।
साधवा मुक्तिका वास बन्दा सहु भिक्खम स्वाम सिद्धत है भारी।
स्वामी पर भाव के साधन साच है बाचै है सूत्रकला विस्तारी।
तेरा ही पंथ साचा त्रिऊं लोक में नाग सुरेन्द्र नमें नरनारी।
सुणि बात है साच सिद्धंतसु ज्ञान की बोहत गुणी करणी बलिहारी।
पृथवी के तारक पंचमें आरमें भीषण स्वामी का मारग भारी ॥१॥

इम सुण वावेचा तो सरक गया। अनै स्वामीजी रा श्रावक राजी होय बीस पच्चीस रुपइया आसरे दिया। ❋

: ९७ :

स्वामीजी कनें देहरापंथी आयनें बोल्या : थानें नदी उतर्‌या में धर्म है तो म्है फूल चढ़ावा तिणमें पिण धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : एक कानीं नदी कड़ियां तांइं अनै एक कानीं गोडा सुधी। एक कानीं सुकी तो म्है सुकी

ऊतरा। पिण घणा पाणीवाली २।४ कोस री अवलाई सुं इ टलै तो टाला। अनै थें फूल चढ़ावो सो एक तो सूका फूल पड्या है। एक २।३ दिनारा कुमलाया फूल है। एक काची कलिया है थे किसा चढ़ावो ? जद उवे बोल्या : म्है तो काची कलिया नखा सूं चूंटी चूंटी चढावा। जद स्वामीजी बोल्या : थारा परिणाम तो जीव मारवा रा अनै म्हारा परिणाम दया पालवा रा। इण न्याय नेदी ऊपरै फूला रो दृष्टान्त न मिलै। ❀

: ९८ :

किणही पूछ्यो भीषणजी थें ओर टोला वाला नें असाध सरधो तौ यानें रुघनाथजी रा साध, ए जैमलजी रा साध यूं क्यूं कहो। जद स्वामीजी बोल्या : कोइरै किरियावर थया गाम मे नेंहता फेरै। जद कहै अमकड़ीया रै नेंहतो खेमासाह रे घर रो। अमकड़िया रै नेंहतो पेमासाह रा घर रो। अनै त्या दिवालो काढ्यो हुवै तोही साह बाजै। ज्यूं साधूपणो न पालै अनै साधू रो नाम धरावे तो ते द्रव्य निक्षेपा रे लेखै साधइ बाजै। ❀

: ९९ :

किणही पूछ्यो एतला टोला है ज्या मैं साध कुण अनै असाध कुण ? जद स्वामीजो बोल्या . कोइनैं आख्या न सूझै तिण पूछ्यो सहर मैं नागा किता अनें ढकिया किता ? जद वैद्य बोल्यो : आख्या मे औषध घाल नै सूझतो तो हू कर देऊं अनें नागा ढकिया तूं देखले। ज्यूं ओलखणा तो म्है बताय द्या नै साध असाध तूं देखलै। पहिला नामलेइ असाध कह्यां आगलो कजियो करै। तिणसूं ज्ञान तो म्है बताय द्या पछै किमत तूं करलै। ❀

: १०० :

वलि किणही पूछ्यो यामे साध कुण अनै असाध कुण ? जद स्वामीजी बोल्या . किणही पूछ्यो सहर मे साहुकार कुण दिवाल्यो कुण ? लेयनै पाछो देवै तो साहुकार। लेयनै पाछो न देवै माग्या झगड़ो करे ते दिवाल्यो। ज्यूं पाच महाव्रत लेयनै चोखा पालै ते साध अनैं न पालै ते असाध। ❀

: १०१ :

कोइ बोल्यो अणुकम्पा आणनें काचोपाणी पाया पुन्य है कारण उणरा जीव बचावारा परिणाम चोखा है। पाणी रा जीव हणवारा भाव नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ कटारी सूं किणही ने मारवा लागो। जद ते बोल्यो : मौनें मार मती। जद ते आदमी बोल्यो : म्हारा तोने मारवा रा भाव नहीं। हूँ तो कटारी नीं कीमत करूं छूं। आ कटारी किसियक वहणी छै। जद ते बोल्यो : बूडी थारी कीमत म्हारी तो ज्यान जावै छै। ज्यूं जीव खवायां परीणाम चोखा कहै त्यारी श्रद्धा खोटी। ❀

: १०२ :

........रे ठिकाणैं स्वामीजी पूछ्यो : थे कितरी मूरत्या छो। जद उणां कह्यो : म्हे इतरी मूरत्यां छा। स्वामीजी ठिकाणै पधारया पछै उणा नें किणही कह्यो: थाने तो भीखणजी भगत कीधा। जद ऊ स्वामीजी कनें आय पूछ्यो थे कितरी मूरत्या छो। जद स्वामीजी बोल्या : ऊ तो अवसर उण वेला इज थो म्है तो इतरा साध छा। ❀

: १०३ :

स्वामीजी घर में थका दिशा गया। तिहा सोजत रा महाजना रो साथ थयो। पाछा आया जद ते तो लोटियां ने वार-वार मांजै काचो पाणी सू घणो धोवै। अनै बोल्यो : भीखणजी थेंइ मांजो। जद स्वामीजी बोल्या : हुं तो लोटिया में न गयो हूँ तो दिशां दूर गयो। जद ऊ बोल्यो : हुं किस्यो लोटिया में गयो। जद स्वामीजी बोल्या : तो इतरो क्यू मांजो। ते बोल्यो : लोटियो कनै हुंतो। स्वामीजी बोल्या : थारो मूढो माथो पिण कने हुंतो इण ने रगड़ो कै नहीं ? ❀

: १०४ :

.........कहै भीखणजी घर में थकां भाई भाई-न्यारा हुवा जद ऊंखल में घाल थाली भांग नें आधो आध कीधी। जिणरो प्रश्न हेमजी स्वामी

पूछ्यो। घर में थका थाळी भागी कहै सो वात साची के झूठी। जद स्वामीजी बोल्या : इसा म्है भोळा नहीं सो पहिलाइ रुपीया रो पूण करा। म्है तो ओ काम नहीं कियो। अनैं रुघनाथजी रा गुरु बुदरजी तो घर मे थका ऊंट हीज मार्‍यो। खरवार लेइ आवता धाड़ आइ। जद जाण्यो कपड़ो इ लेजासी अनैं ऊंट इ लेजासी। इम विचार तरवार सू ऊंटनीं फींचा काटी मार न्हाख्यो। गृहस्थपणा री काइ वात ? वाकी म्है तो घर मे छता थाळी भागी नहीं। ❀

: १०५ :

स्वामीजी घर मे छता सासरे जीमवा गया। लुगाया गाल्या गावा लागी। ओ कुण काळोजी कावरो इम गावै। जद स्वामीजी बोल्या : थें खोडा आधा नें तो चोखो वतावो अनै मोनै ऊंधी वोलो। स्वामीजी रो साळो खोड़ो हुंतो तिणसू स्वामीजी कह्यो थें खोटाने तो चोखो कह्यो अनैं चोखाने खोटो कह्यो। इम कही विना जिम्या भूखाइ उठ गया। घर मे थका झूठ नीं चिड़ हुती सो झूठ न सुहावतो।

: १०६ :

घर मे छता कंटाळिया मे कोइ रो गहणो चोर ले गयो। जद चोर नदी सू आधा कुम्भार ने बोलायो। कुम्भार रे डील मे देवता आवतो तिणसूं तेहने गहणो वतावा वुलायो। कुंभार स्वामीजी नें पूछ्यो : भीखणजी अठै किण रो भर्म धरै। जद स्वामीजी इण रो ठागो उघाड करवा कह्यो : भर्म तो मजन्या रो धरै है। हिवै रात्रि आधे कुम्भार देवता डील अणायो। घणा लोक देखता हाका करै। न्हाखदे रे २। जद लोक वोल्या : नाम वतावो। जद वोल्यो ओ-ओ-ओ—मजन्यो रे मजन्यो गहणो मजन्ये लियो। जद अतीत घोटो लेइ ने उठ्यो। मजन्यो तो म्हारा वकरा रो नाम है, म्हारै वकरे रे माथै चोरी देवो। जद लोका ठागो जाण्यो। स्वामीजी लोका नं कह्यो : थे सुझता तो गहणो गमायो अनै आधा कना सूं कढावो सो गहणो कठासूं आसी ? ❀

: १०७ :

भीखणजी स्वामी नें घर में छतां वैराग आयो। जद कैरां रो ओसावण तांबारा लोटिया में घालनें ठामां री बंडेल में मेल्यो। घणी वेलां सूं पीवता कष्ट घणों हुवो। तिवारे विचास्यो साधपणो दोहरो घणों। वले विचास्यो इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै। नवो साधपणो लियां पछै इकावना रे आसरै हेमजी स्वामी ने स्वामीजी कह्यो : इसो जाण नै साधपणो लियो। पिण इसो पाणी पीवारो कदेइ काम पस्यो दीसै नहीं। जद हेमजी स्वामी बोल्या : इसा वैराग सूं आप घर छोड़्यो जद उणां में किसैं लेखे रहो। ❀

: १०८ :

टोलावाला मांही थी नीकलिया जद रुघनाथजी कह्यो। भीखणजी अवारूं पांचमो आरो है दोय घड़ी चोखो साधपणो पालै तो केवल ज्ञान पामैं। जद स्वामीजी बोल्या : यूं केवल ज्ञान उपजै तो दोय घड़ी तो नाक भींच ने इ बेठा रहां। वलि प्रभव स्वामीजी आदि पंचमां आरा मे हुंता त्यां चोखो साधपणो न पाल्यो काइ? ❀

: १०९ :

रुघनाथजी रा टोला मांहीं निकल्या जद रुघनाथजी आंख्या में आंसू काढवा लागा। जद स्वामीजी विचास्यो—घर छोड़तां यां विचै तो म्हारी मा घणी रोइ हुंती। इम विचार नैं छोड़ दीधा। ❀

: ११० :

गुणसठै रा साल चवदे साधा सूं तथा चवदै आर्यां सूं देवगढ़ में भीखणजी स्वामी विराज्या हुंता, तिहां तीन ··· आय बोल्या : भीषणजी म्हैं तीन जणां त्यांनेइ पूरो आहार नहीं मिल्यो, तो थानैं इतरा ठाणां नै आहार किण रीते मिलै। जद स्वामीजी बोल्या : द्वारका में हजारा साधां नैं आहार पाणी मिलतो थो अने ढंढण रे अंतराय सो एकलानें ई कठिण।

: १११ :

घर में छता रजपूत ने साथै बोलावो लेइ किणही गाम जातां रजपूत बोल्यो : तमाखू विना आघो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ठाकरा आगै चालो दिन थोड़ो है। रजपूत बोल्यो : तमाखू बिना अबे तो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी पाछै रही नै आरणिये छाणै ने नान्हो बाटी पुडी बांधनै कह्यो : ठाकरां तमाखू चोखी तो है नहीं इसड़ी है। जद तिण रजपूत चिवठी भरनें सूंघी अनै बोल्यो · ठीक इज है। जद स्वामीजी पुडी उणनै सूंपी। इसी चतुराइ करनें कुशलै ठिकाणै आया। ※

: ११२ :

सिरयारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। विजैसिंहजी नाथदुवारै आवतां वर्षा रा जोग सूं सिरयारी में रह्या। मुसद्दी स्वामीजी रा दर्शण करवा आया। प्रश्न पूछवा लागा—पहली कूकडी हुइ के अंडो। पहली घण हुवो के अहिरण। पहिला बाप हुवो के बेटो। इत्यादिक अनेक प्रश्ना रा जवाब स्वामीजी दिया युक्ति सहित। जद मुसद्दी राजी होय बोल्या · एह प्रश्न घणी जगाइ पूछ्या पिण इसा जाब किणही दीधा नहीं। आपारी बुद्धी तो इसी है किणही राजा रा मुसद्दी थया हुंता तो घणा देशा रो राज एक घरे करता इसी आपरी बुद्धी है। जद स्वामीजी बोल्या : पछै ऊ जाय कठै। मुसद्दी बोल्या : जाय तो नरक में। जद स्वामीजी बोल्या ·

बुद्धी जिणारी जाणीयै। जे सेवै जिन धर्म।
ओर बुद्धी किण काम री। सो पड़िया बाधै कर्म॥

जिण बुद्धी फंलाया नरक मे पडै ते बुद्धी किण कामरी जब मुसद्दी घणा राजी हुवा। ※

: ११३ :

जोधपुर में स्वामीजी पधारया। जद· भेला होय चरचा करवा आया। ऊंधी अंवली चरचा करवा लागा। जीव बचायां कांइ हुवै ? विजयसिंहजी पडहो फेरायो तेहनों काइ थयो ? इत्यादिक राज में डोढी लगावा लागा जद स्वामीजी बोल्या · सूत्र मे किसनजी री नरक गति कही। इत्यादिक सर्व चरचा सूत्र खोलने राजाजी फनैं करी जब लातर गया। ※

: ११४ :

रुघनाथजी स्वामीजीनें पूछ्यो विजयसिंह जी पड़हो फेरायो, तालाव कूवां पर गलना नखाया। द्वीवां पर ढाकणां दिराया, बूढ़ा मा बापरी चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों में राजाजी नें कांइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या: राजाजी समदृष्टि है के मिथ्यात्वी? इम पूछ्या जाब देवा असमर्थ थया। ❀

: ११५ :

किणही कह्यो : भीखण जी थे अनै……एक होय जावो। जब स्वामीजी बोल्या : महाजन, कुंभार, जाट, गूजर, सर्व एक थावो के नहीं? जद ऊ बोल्यो : म्हें तो एक न थावां। यांरी जाति इज ओर है। जद स्वामीजी बोल्या ए पिण मूलगा मिथ्यात्वी है। गाजीखां मूलाखां रा साथी है। त्यां पूछ्यो गाजीखां मूलाखा- कुण थया। जद स्वामीजी कह्यो : एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी प्रदेश गया। त्या ब्राह्मण माल मोकलो कमायो। केतले एक काले ब्राह्मण आऊखो पूरो कीधो। जद ब्राह्मणी, पठाण रा घर में पेठी। दोय पुत्र थया। एकण रो नाम गाजीखां, दूजारो नाम मूलाखां दियो। केतले एक कालै पठाण पिणं काल कर गयो। जद ब्राह्मणी सर्व धन पुत्र लेई देश आइ। माल देखनें घणां न्यातिला भेला हुवा। कोइ भूवाजी कहै कोइ काकी कहै। हिवै ब्राह्मणी कहै डावडां नें जनेउ द्यो। जिमणकर घणां ब्राह्मणां नें जिमाया जनेउ देवा पुत्रां ने हेलो पाड्यो - आवरे वेटा गाजीखां आवरे, वेटा मूलाखां। नाम सुण ब्राह्मण कोप कर बोल्या : हे पापणी! ए कांइ नाम? ब्राह्मण रा नाम तो श्रीकृष्ण, रामकृष्ण, हरिकृष्ण, हरिलाल, कै रामलाल, श्रीधर इत्यादिक हुवै।। अनै एहतो मुसलमान रा नाम है। कटारी काढ नें बोल्या : साच बोल ए किण रा पेट रा है। नहीं तो तोने मारस्यां। अनै म्हेंइ मरस्यां। जद आ बोली : मारो मती। सर्व बात मांड नें कही। एतो पठाण रै पेट रा है। जद ब्राह्मण बोल्या: हे पापणी। म्हानें भ्रष्ट किया। अवै गंगाजी जाय स्नान पाणी रा लेपकरी शुद्ध थास्या। जद आ बोली : वीरा आ दोनूं डावड़ानेइ ले जावो अनै शुद्ध करो। सो फेर ब्रह्म भोजन करने जिमा सूं। जद ब्राह्मण

बोल्या . एहतो पठाण रा पेट रा मूलकाइ असुद्ध छै सो सिद्ध किम हुवै। म्है तो मूल का सुद्ध छा। थारो अन्न खाधो तिणसूं तीर्थ जाय सुद्ध थास्या पिण मूलगा असुद्ध सुद्ध किम हुवै। भीखनजी स्वामी कह्यो : कोइ साध नें दोप लागा प्रायश्चित्त लेइ सुद्ध हुवै। पिण एतो मूलागा मिथ्यात्वी श्रद्धा ऊंधी गाजींखां मुल्लाला रा साथी। ते सुद्ध किम हुवै। सुद्ध श्रद्धा आवै अनें पछै नवी दीक्षा रूप जन्म थया शुद्ध हुवै।

: ११६ :

किण ही पूछ्यो - भीखणजी ए पिण धोवण उन्हो पाणी पीवै साधु रो भेष राखै लोच करावै ए साधु क्यूं नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : ए बणी बणाइ ब्राह्मणी रा साथी है। ते बणी बणाइ ब्राह्मणी किम ? स्वामीजी बोल्याः एक मेरा रो गाम हो। जठे उत्तम घर नहीं। महाजन आवै सो दुख पावै। मेरा ने कह्यो · अठै उत्तम घर नहीं सो म्हे थानै लागत द्या छा अनैं अठे ऊत्तम घर विना रोटी पाणी री अवखाइ पड़ै। जद मेरा सहर मे जाय महाजना नें कह्यो : म्हारै गाम वसो थारो उपरसरो राखस्या। पिण कोई आयो नहीं। जद एक ढेढा रो गुरु मुवो। तिणरी स्त्री गुरडी तिणनें मेरां ब्राह्मणी बणाइ। ब्राह्मणी जिसा कपड़ा पहराया। जायगा कराय तुलसी रो थाणों रोप्यो, जागा धवलकी। मेरणिया ब्राह्मणी जिसो घर कर दियो। दोय रुपिया रा गेहु मेल्या अधेलीना मूंग, अनैं एक रुपया रो घी मेल्यो। कह्यो महाजन आवै जिणा नै पइसा लेइ रोटिया कर घालयोकर। महाजन आवै ज्या नें मेर ते ब्राह्मणी नो घर वताय देवै। कैतलं एक कालेच्यार व्यापारी घणा कोशा रा थाका आया। मेरा ने कह्यो उत्तम घर वताओ जद ब्राह्मणी रो घर वतायो। व्यापारी आयनें बोल्या . बाइ रोटिया करनें घाल। जद इण गवारी जाडो रोटिया कर माहिं सुरड़ो घी घाल्यो। दाल करी तिणमे काचरियां न्हाखी ते महाजन जीमता वखाण करे। फलाणा गाम री राधण देखी। अमकडिये सहर नीं राधण देखी। पिण इसी चतुराइ कोइ देखी नहीं। दाल किसीक स्वाद हुइ है। माहें काचरिया घालने बहुत चोखी वणाइ है। जद आ बोली वीरा काचरी रा स्वाद री तो तिखण मिली हुती तो खबर पड़ती। जद अ बोल्या : तीखण काइ। जद आ बोली : काचरिया मंदारवानें

छुरी न मिली। अ बोल्या : छुरी न मिली तो किण सूं वंदारी? जद आ बोली : दाता सूं बनाखी म्हानें है। जद ए बोल्या : हे पापणी म्हानैं भिष्ट किया। थाली पटकवा लगा। जद आ बोली : रे वीरां थाली मती भांगज्यो अमकड़ियै डूमनी मांगनै आणी है। व्यापारी बोल्या : तुं जातरी कण है। जद आ बोली रे वीरां हूँ बणी बणाइ ब्राह्मणी छूं। जात री तो गुरडी छूं। अनै मेरां मोने ब्राह्मणी बणाइ छै। मांडनै सारी बात कही। भीखणजी स्वामी बोल्या : तिम ए धोवण उन्हो पाणी पीवै पिण समकित चरित्र रहित तिण सू बणी बणाइ ब्राह्मणी रा साथी है। ॐ

: ११७ :

अमरसिंहजी रे जीतमलजी हेमजी स्वामी ने कह्यो : हेमजी सोजत में भीखणजी चोमासो कीधो। तिहा नजीक अमरसिंहजी रा साधा पिण चोमासो कियो हुंतो। सो लागतै चोमासै तो मिश्रवाला नें उडावतानें इसो दृष्टांत दियो—अमरसिंहजी रा बड़ेरां रुघनाथजी जैमलजी रा बड़ेरा नें गुजरात मारवाड में आण्या। जद मांहों माहिं गाढो हेत थो। दोय तीन पीढी ताइं तो हेत रह्यो। पछै रुघनाथजी जयमलजी कोहलोजी ए बूदरजी रा चेला सो अमरसिंहजी रा क्षेत्र जोधपुर आदि दरहा लिया। जद हेत रह्यो नहीं। ज्यूं एक साहुकार जिहाज में बैस समुद्र पार व्यापार करवा गयो। पाछो आवता कपड़े री मंजूस में एक गर्भवती ऊंदरी आइ सो व्याई। साहुकार देखिनें बोल्यो इणनें समुद्र में नहीं न्हाखणी। जावता करै। पछै साहुकार पोता रे घरै आयो। थोड़ा दिनां में ऊंदरी रो परिवार बध्यो। जद ऊंदरी बोली : ओ साहुकार उपगारी है। सो इणरो आपा नें बिगाड करणो नहीं। साहुकार पिण ऊंदरा ऊंदरया ने दुख न दै। एक दोय पीढ्या तांइ तो ऊंदरा ऊंदरया बिगाड़ कस्यो नहीं। पछै बिगाड़ करवा लागा। साहुकार ना कपड़ा करंड़िया कुरटवा लागा। ज्यूं दो तीन पिढियां ताइ तो अमरसिंहजी रा साधां सूं हेत राख्यो। पछै अमरसिंहजी रा क्षेत्र दाबवा लागा। श्रावक श्राविका फारवा लागा। बैसते चौमासै तो ए दृष्टांत दीधो। तिणसूं अमरसिंहजी वाला तो राजी रह्या। मिश्रवाला ने समझावा लागा। पछै उतरते चोमासै फतैचन्दजी गोटावत बोल्यो : भीखणजी मिश्रवाला ने

इज निषेधो पिण ए पुन्यवाळा नेडा बेठा त्यां नें क्यूं नहीं निषेधो। जद स्वामीजी बोल्या . एक जाट खेती बाइ। जवार घणी नीपनीं। पाकी। च्यार चोर आय नें सिटा री गाठा बाधी। जाट देख उत्पात सूं विचार आय ने, बोल्यो ' थारी जाति काइ है? एक जणो बोल्यो हूँ तो रजपूत। दूजो बोल्यो . हूँ साहुकार। तीजो बोल्यो : हूँ ब्राह्मण। चोथो बोल्यो हूँ जाट छूँ। जद जाट बोल्यो राजपूत नें—आप तो धणी हो सो लेखै रो लेवो हो। महाजन बोहरो है सो ठीक। ब्राह्मण पुण्य रो लेवे सो ही ठीक। पिण ओ जाट किण लेखै लेवै? इण नें म्हारी मा कनें ओलंभो दिवावसूं। इम कहि गाठ पटक जवार मे ले जाय बावळिया रै उणरी पाग सूं बाध दियो। फेर पाछो आयनें बोल्यो म्हारी मा कह्यो है रजपूत तो लेखै लेवै धणी है। बाण्यो ते पिण ठीक बोहरो है। पिण ब्राह्मण किसै लेखै लेवे ? ब्राह्मण तो दियो लै। बिना दियो किम लै? चाल म्हारी मा कनें। इम कही इणनें पिण पकड ले जाय नें बावळिया रे बाध दीधो। फेर आय नें बोल्यो : रजपूत तो लेखै लेवै पिण तूं बाण्या किण लेखै ले। तूं किसै दिन मोनें धान दियो हो। अनें कद म्हारो बोहरो थयो। इम कहि ले जाय नें तीजै बावळिया रे इण नें बाध दियो। फेर पाछो आय नें बोल्यो : ठाकरा धणी हुवै सो जावता करै कै चोरया करें। इम कहि इणनै इ पकड ले जायनें बाध दियो। रावले जाय नें पकड़ाय दिया। ❀

बुद्धि सूं च्यारा ने पकड़्या माल राख्यो। अनै एक साथै च्यारा सूं झगड़तो तो कद पूगतो। ज्यूं मिश्रवाला माहि सूँ तो केइ समझाया अवे पुन्यवाला री वारी। पछै पुन्य री श्रद्धा वाला नें निषेधवा लागा। इसा भीखणजी स्वामी कलावान। ❀

: ११८ :

किणही कह्यो . मोनें असंतजी ने दान देवार त्याग करावो। जद स्वामीजी बोल्या ' थें म्हारा वचन सरधिया प्रातीतिया रुचिया जिण सूँ त्याग करो हो का म्हानै भाडवानै त्याग करो हो। इम कहिनें कष्ट कीधो। ❀

: ११९ :

पींपार में एक जणै गुरु कीधा। तिण रा घर का डरायो। कहै—पाछो जाय ने समकत दे आव। जद ते पाछो आय ने बोल्यो : थारी समगत पाछी उरही ल्यो। सूस कराया ते पाछा उरहा ल्यो। जद स्वामीजी बोल्या : डाम-दियोडा पिण पाछा लेणी आवै है कै। ❀

: १२० :

पुर सू विहारकर भीलवाडै आवता मारग में हेमजी स्वामी खेद पाया। जद चन्द्रभाणजी चोधरी ने कह्यो : आज तो खेद घणी पामी। जद चन्द्रभाणजी चोधरी कह्यो—भीखणजी स्वामीजी कहिता था प्रदेशा में झासना थया विना निर्जरा हुवै नहीं। ❀

: १२१ :

रिणिहि गॉम में जीवो मू हतो नगजी भलकट ने कहै भाइजी ! भीखणजी स्वामी कहिता था—धान माटी सरिखो लागै जद संथारो करणों बाकी आऊषो थोड़ो जाणी। जैसो आज आय वीती है पिण म्हासूं संथारो हुवै नहीं। इम करता तिण हिज रात्रि आउखो पूरो कियो। ❀

: १२२ :

किणही पूछ्यो महाराज साधा रै असाता क्यूं हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि भाठो उछाल नै हेठो माथो मांड्यो अनै पछै भाठो उछा-लण रा त्याग किया तो आगै भाठो उछाल्यो ते तो लागै पछै सूंस किया तो पछै न लागै। ज्यूं आगै पाप कर्म बांध्या ते तो भोगवै पछै पापरा त्याग किया तिण रो दुःख न पड़ै।

: १२३ :

दामोजी सीहवा गाम रो वासी पाली में भेषधारया रे थानक जाय भेष धारयां सूं चरचा कीधी। तिणमें केयक जाब तो दिया ने केयक जाब आया नहीं। पछै स्वामीजी नें कह्यो : चरचा कीधी पिण जाब पूरा आया नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : दामां साह बोदी धूंणी नें दोय तीर लेइ

संग्राम माड्या किम जीतै। तीरा रो भाथडो पूठै बाघ जुद्ध किया जीते। ज्यूं भेषधाख्या सूँ चरचा करणी तो पक्का जाब सीखनै करणी कच्चा जाब सूं न करणी। ❀

: १२४ :

किणही पूछ्यो—भीखणजी कोई बालक भाठा सूं कीड्या मारतो तिण रो भाठो खोसनें डरह्यो लियो तिण ने काइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या . उणरा हाथ में काइ आयो। जद ऊ बोल्यो : उण रें हाथ मे भाठो आयो। जद स्वामीजी बोल्या . अवै थेंइ विचार लेवो। ❀

: १२५ :

पुर भीलवाडै विचें स्वामीजो पधारता ढुंढार नीं तरफ रो एक भायो मिल्यो। तिण पूछ्यो आपरो नाम काइ ? जद स्वामीजी बोल्या ' म्हारो नाम भीपण। जद ऊ बोल्यो भीपणजी रो महिमा तो घणी सुणी है सो आप एकला रूंख हेठै बेठा हो। म्हे तो जाण्यो साथै आडम्बर घणो हुसी। घोड़ा हाथी रथ पालखी प्रमुख घणो कारखानों हुसी। जद स्वामीजी बोल्या . इसो आडम्बर न राखा जद हिज महिमा है साधुरो मारग ओ हिज है। इम सुणनै राजी हुवो। ❀

: १२६ :

काचो पाणी पाया पुण्य सरधे ते पुण्य री सरधावाळा बोल्या . भीषणजी मिश्र री श्रद्धा घणी खोटी है। जद स्वामीजी बोल्या ' किणरी १ फूटी किणरी २ फूटी। ज्यूँ या री तो एक फूटी है अने थारी दोनूं फूटी है। ❀

: १२७ :

रुघनाथजी वाला बोल्या : भीषणजी देखो जोधपुर मे जैमलजी वाळा रे थानक आधाकर्मी आरम्भ घणो हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : या रे तो आरंभ थयो अनैं थीजारै आरंभ हुंतो दीसै है। कच्चा रा पक्का हुता दिसै है। ❀

: १२८ :

किणहि पूछ्यो भीषणजी कोइ बकरा मारतां नें बचायो तिण नें काइ थयो। जद स्वामीजी बोलया : ज्ञान सूं समझाय नें हिंसा छोड़ाया तो धर्म छै। स्वामीजी दोय आंगुली ऊंची कर ने कह्यो—ओ तो रजपूत अनै ओ बकरो यां दोया में बूडै कुण। मरण वालो बूडै कै मारण वालो बूडै। नरक निगोद में गोता कुण खासी। जद ऊ बोल्यो : मरण वालो बूडै। जद स्वामीजी बोल्या : साधू बूडता ने तारे राजपुत ने समझावै बकरा नें मार्‌यां तूं गोता खासी। इम ज्ञान सूं समझायनैं हिंसा छोड़ावै ते मोक्ष रो मारग है। पिण साधू बकरा नों जीवणों बाछै नहीं। जिम एक साहुकार रै दोय बेटा एक तो करड़ी जागा रो ऋण माथै करै अनै दूजौ करड़ी जागा रो ऋण ऊतारै। पिता किण नै बरजै। ऋण माथै करै तिण ने बरजै पिण ऊतारै तिण ने न बरजै। ज्यूं साधू तो पिता समान है अने रजपूत नें बकरा दोनूं पुत्र समान है। या दोयां में कर्म ऋण माथै कुण करै। अनै कर्म ऋण उतारै कुण। रजपूत तो कर्मरूप ऋण माथै करै है अनै बकरा आगला कर्मरूप ऋण भोगवै उतारै है। साधू रजपूत नें बरजै तूं कर्मरूप ऋण माथै मतकर। ए कर्म बाध्या घणा गोता खासी। इम रजपूत नें समझायनें हिंसा छोड़ावै। ❋

: १२९ :

वलि संसार नां उपकार ऊपरै अने मोक्ष ना उपकार ऊपरै स्वामीजी दृष्टांत दियो। किणही नें सर्प खाधो। गारडू झाड़ो देइ बचायो। जद ऊ पगां लागे बोल्यो . इतरा दिन तो जीतब माइता रो दियो हुंतो। अने अबे आज सूं जीतब आपरो दियो। माता पिता बोल्या—थें म्हाने पुत्र दियो। बहिना बोली—थे म्हाने भाई दियो। स्त्री राजी हुइ—चूड़ो—चूनड़ी अमर रहसी सो आप रो प्रताप है। सगा सम्बन्धी राजी हुवा—आछो काम कीधो लाख रुपिया देवै ते बिचै ए उपकार मोटो। पिण ए उपकार संसार नों। हिवे मोक्ष नों उपकार कहै छै। किणहि ने सर्प खाधो उजाड़ मे तिहा साधु आया। जब ते कहै मोनें सर्प खाधो झाड़ो देवो। जद साधु कहै : म्हांनै झाड़ो आवै तो है पिण देणो न कल्पै। जद ऊ बोल्यो :

भोनें ओखध बतावो। साधु बोल्या : ओषध जाणा छा पिण बतावणो नहीं। जद ऊ बोल्यो : थे यूँही मूंढो बाँध्या फिरो छो क काइ था मे करामात पिण है। जद साधु बोल्या : म्हामे करामात इसी है ज्यो म्हारो कह्यो माने तो किणहि भव मे सर्प खावै नहीं। जद ऊ बोल्यो : जिका काइ बतावो। जद साधु बोल्या : सागारी संथारा करदै। इण उपसर्ग सूँ बच्यो जद तो बात न्यारी, जहीं तो च्यारूंइ आहार ना त्याग। इम सागारी संथारो कराय नवकार सिखायो च्यारू शरणा दीधा परिणाम चोखा रखाया। आऊखो पूरोकर देवता हुवो मोक्ष गामी हुवौ। ओ उपकार मोक्ष नों ※

: १३० :

वलि संसार ना तथा मोक्ष ना मारग ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : एक साहूकार रै दोय स्त्रीया एक तो रोवण रा त्याग किया धर्म में घणीं समझै। अनै एक जणी धर्म मे समझै नहीं। केतले एक काले प्रदेश मे भरतार काल कीधो। सुणने धर्म मे न समझै ते तो रोवै विलापात करै। समझै ते रोवै नहीं समता धारनें बेठी। लोग लुगाई घणा भेला हुवा। ते सर्व रोवै तिण नें सरावै—ए धन्य है पतिव्रता है। न रोवै तिण नें निंदै—आ पापणी तो मूओ इज वाछती थी। इण रे आसूंई आवै नहीं। अनै साधु किणनें सरावै। साधु तो न रोवै तिणनें सरावै। ए प्रत्यक्ष मोक्ष रो मारग न्यारो अने लोक रो मारग न्यारो। ※

: १३१ :

केइ कहै आज्ञा बारै धर्म जद स्वामीजी बोल्या आज्ञा माहीं धर्म तो भगवान परूप्यो। पिण आज्ञा बारै धर्म कहै ते किण रो परूप्यो। ज्यूँ किणही पूछ्यो : थारे माथै पाग ते कठा सूँ आइ। जद साहुकार हुवै ते तो पैंतो बतावै साईदार भरावै अमकहियै बजाज कनें लीधी अमकहियै रंग-रेज कनें रंगाइ। अनैं चोरनें ल्यायो हुवै तिण सूं पैंतो बतावणी आवै नहीं थोडा में अटक जावै। ज्यूं आज्ञा बारै धर्म कहै तथा अव्रत सेवाया धर्म कहै ते ठाम ठाम अटकै पैंतो पूगावणी आवै नहीं। ※

: १३२ :

कोइ स्वामीजी कनें चरचा करवा आयो। दान दया री व्रत अव्रत री चरचा करता ठोड ठोड अटकै। अरड़ बरड बोलै। न्याय री एक चरचा छोड दूजी पूछै दूजी छोड़नै तीजी पूछै पिण प्रथम न्याय री चरचा ते पार पुगावै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : घर रो धणी खेत बाढे ते तो प्रांछ री प्राछ उतारै। अनैं चोर आय पड़ै तो बाटा बरड़ो करै। एक कठा सूं तोडै एक कठा सूं तोड़ै ज्यूं थे घर रा धणी होय न्याय री एक चरचा पार पूगाय दूजी करो। चोर जिम मत करो। ❀

: १३३ :

भेपधारी चरचा करता आचार सरधा री न्याय री चरचा छोडने जीव बचावा रो वेदो घालै। जद स्वामीजी बोल्या : कुबदी चोर हुवै ते चौरी करनें लाय लगाय जावै। लोक तो लाय रे धन्धे लाग जावै नें आप माल लेय नें चाल तो रहै। ज्यू आचार तो शुद्ध पालणी आवै नहीं तिणसूं आचार नी न्याय श्रद्धा री चरचा छोड़नै लोकां सूं लगावणी वातां करै। ए जीव बंचाया पाप कहै। दान दया उठाय दीधी। भगवान नें चूका कहै। इम लोका नें लगावै पिण न्याय रा अर्थी नहीं। ❀

: १३४ :

कुमार्ग सुमार्ग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। भगवान रो मारग अनैं पाखंडियां रो मारग किम ओलखिये। भगवान रो मारग तो पातसाइ रस्ता जेहवो सो कठैइ अटकै नहीं। अनैं पाखिंडियां रो मारग ढांढां री डांड़ी समान। थोड़ी ड़ाड़ी दिसै अनैं आगै उजाड़। ज्यूं थोडो सो दान शीलादिक बताय ने पछै हिंसा में धर्म बतावै। ❀

: १३५ :

केइ पाखंडी इम कहै भीषणजी री इसी श्रद्धा बकरो बचाया पछै ऊ कूंपला खावै काचो पाणी पीवै अनेक आरंभ करै तिण रो पाप पाछै सूं आवै। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारै तो आ सरधा छै—असंयती नें बचाया

ऊ अनेक आरम्भ करसी। तिण री अनुमोदना रा पाप उण वेलाइज भगवान देख्यो जिनरो लाग चूको, अनै थें तपस्या रो धारणों कोइ नें करावो आगामी काल नीं तपस्या नो धर्म मोनें हुसी इम जाणनें धारणों करावो। जद थारे लेखै असयती ने बचाया ऊ आरंभ करसी आगामी काल नो पिण पाप थानें लागसी थारी श्रद्धा रे लेखै। कारण धर्म आगामी काल नों पाछा सू आवे तो पाप पिण लागसी। अनैं भगवते तो कह्यो : असजती नें बचाया जितरो पाप ज्ञानी पुरुषा देख्यो तितरो उण वेलाइज लाग चूको। ❀

: १३६ :

किणही पूछ्यो थें कोइनें सूस करावो ते सूस परहा भागै तो थानें पाप लागै। जद स्वामीजी बोल्या : किणही साहुकार सो रुपिया रो कपडो बेच्यो। नफो मोकलो थयो। लेणवालै एक-एक रा दो-दो कीधा तो उणरो नफो उण साहुकार रै आवै नहीं। तथा ऊ कपडो लेण-वालो आगै जायनै सर्व कपडो वाल देवै तो तोटो उणरा घर मे पडै पिण साहुकार रै घर मे नहीं। ज्यूॅ म्है सूस दिराया तिणनों नफो म्हानें ह्वै चूको आगलो सूस चोखा पालसी तो नफो उणनें। अनैं भांगसी तो पाप उणनें लागसी पिण म्हानैं न लागै। ❀

: १३७ :

फेर स्वामीजी दृष्टात दियो। किणहि दातार साधू नें घृत बहिरायो। साधू नैहराइ राखी। तिण घृत सू अनेक कीड्या मूइ तो पाप साधू नें लागो पिण दातार नें न लागो। अनें साधू ते घृत हरप सहित तपसी नें दीधो पोते न खाधौ तिणरे तीर्थङ्कर गोत्र बध्यो ते नफो साधू रै थयो। आप आपरा भाव प्रमाणै नफो हुवै। ❀

: १३८ :

किणही पूछ्यो असजती जीव नें पोख्या पाप कह्यो छो ते किण न्याय। जद स्वामीजी बोल्या : किणही रै रुपिया री नोली कडिया बधी देखनैं चौर लारै न्हाठो। आगै तो साहुकार अनैं लारै चौर न्हाठो जाय। इम न्हासता चौर आखड़नै हेठो पड्यौ जब किणही चोर नें अमल खवाय पाणी पायनैं

सेंठो कियो। तो ते अमल खवावण वालो साहुकार रो वैरी जाणवो वैरी ने साभ्क दियों तिण कारण। ज्यूं छ काया रा हणवावाला नें पोखै ते छ काया रो बैरी जाणवो वैरी नें साभ्क दियो तिण माटै। ❀

: १३९ :

किणही खेत वायो। खेत पाको इतलै धणी रे वालो दुखणी आयो। जद किणही ओषध देइ सांतरो कीधो। साजो हुवो जद खेत काढ्यो। सहाज देणवाला नें पिण पाप लागो। ज्यूं पापी रे साता कीधा धर्म कठासूं। ❀

: १४० :

किणही राजा दश चौर पकड़्या। मारवारो हुकम दीधो। तिवारै एक साहुकार अरज कीधी। महाराज एक २ चौर ना पाच सौ २ रुपिया देऊं चौरा नें छोडो। राजा कह्यो : चोर दुष्ट घणा है सो छोड़वा योग्य नहीं। साहुकार फेर कह्यो नव नें तो छोड़ो। तो पिण राजा मानै नहीं। इम साहुकार घणी अरज कीधी जद पाच सौ रुपइया लैयनै एक चौर नें छोड्यो। नगरी नां लोक साहुकार नें धन्य २ कहिवा लागा। गुण-ग्राम करै। वंदी छोड़ाय नें मोटो उपकार किधो। चोर पिण घणो राजी हुवो। साहजी म्हा सूं घणो उपकार कीधो। पछै चौर पोता रै ठिकाणै आय चोरां रै न्यातिला नें समाचार कह्या। ते सुणनें द्वेष चढ्या। ते चौर ओरा नें लेइ आयो। शहर रे दरवाजै चिठी वाधी : नव चौर मार्‍यां तिणरा इग्यारा गुणा निनाणवै मनुष्य मार्‍या पछै विष्टालो कर सूं। साहुकार नें न मारूं। साहुकार रा वेटा पोता सगा संबंध्या ने पिण न मारूं। पछै मनुष्य मारवा लागो। किणरोइ वेटो मार्‍यो, किणरो भाइ मार्‍यो, किणरो ही वाप मार्‍यो। शहर में भयंकार मंड्यो। नगरी नां लोक साहुकार नें निंदवा लागा। तिण रै घरै जाय रोवा लागा : रे पापी थारै धन घणो हुंतो तो कूवा में क्यूं नहीं न्हाख्यो। चोर छुडायनै म्हारा मनुष्य मराया। साहुकार लातरियो। शहर छोडणै दूजै गाम जाय वस्यो। घणो दुखी थयो। जे लोक गुण करता तेहिज अवगुण करवा लागा। संसार नो उपकार इसो है। मोक्ष रो उपकार करै ते मोटो तिण में कोइ ज़ोखो नहीं। ❀

: १४१ :

सिरयारी मे वोहरे खींवेसरे पूछ्यो : नरक मे जीव जावै तिणनें ताणै कुण। जद स्वामीजी बोल्या : कूवा मे पत्थर न्हाखै तिणनें खैंचनवालो कुण। भारे करी आफेइ तले जाय तिम जीव कर्म रूप भारे करी माठी गति मे जाय। ❀

: १४२ :

वलि वोहरै खींवेसरे पूछ्यो : जीव देवलोक में जावै तिण नें लेजावण वालो कुण। जद स्वामीजी बोल्या : लकडा नें पाणी मे न्हाख्या ऊंचो आवै ते कुण ही ल्यावै नहीं पिण हलकापणा रा योग सू तिरै। तिम जीव पिण कर्मे करी हलको थया देवगति मे जावै। ❀

: १४३ :

किणही पूछ्यो : जीव हलको किम हुवै, जद स्वामीजी बोल्या : पइसो पाणी मे मेल्या डूबै अनैं उण ही पइसा नें ताप लगाय कूट २ नें वाटकी कीधी ते तिरै। उण वाटकी मे पइसो मेलै तो ते पइसो पिण तिरै। तिम जीव तप संयमादि करी आतमा हलकी कीधा तिरै। ❀

: १४४ :

कोइ साधा री निंदा करै अनैं आप कुवद करनैं अलगो रहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : किणही गाम में एक चुगल रहतो। सो एकदा फोजवाला आया ज्याने लोका रो धन धान वताय दियो। फोजवाला केयक तो गया अनैं केयक गया नहीं। गाम रा लोक वारे न्हास गया था सो केयक पाछा आया। चुगल धन थान वतायारी वात सुणनैं लोका ओलंभो दीधो। अरे इसा काम करै। जब ऊ चुगल फौजवाला नें सुणायनैं बोल्यो : हूं वतावतो तो अमकडिया नो खोडो उठै गड्यो ते वता देवतो, फलाणारो खोडो उठै गड्यो ते वता देवतो। उणरो धन फलाणी जागा गड्यो ते पिण वता देवतो। इम कुवद करनै वाकी रह्या ते पिण वताय दीधा। तिम निंदक कुवद हुवै ते निंदा करतो कूड बोलनै अलगो रहै। ❀

: १४५ :

केयक स्वामीजी नें कहिवा लागा : इसी सरधा तो कठेइ सुणी नहीं। थें दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी बोल्या : पर्यूपणा में कोइनें आखा घालै नहीं आटो घालै नहीं। पर्यूपण धर्म रा दिना में ओ धर्म जाणै तो ओ दान देणों बंद क्यूं कियो। आ बात तो घणा काल आगली है जद तो म्हैं हा ही नहीं फेर आ थाप किण कीधी। ❀

: १४६ :

केयक बोल्या : भीखणजी थांरा श्रावक कोइनें दान देवै नहीं। इसी श्रद्धा थांरी है। जद स्वामीजी बोल्या : किणही शहर में च्यार बजाज री हाटा हुंती। तिणमें तीन तो विवाह गया। पाछै कपड़ादिक नां ग्राहक घणा आया। हिवै एक बजाज रह्यो ते राजी हुवै के वैराजी। जद ते बोल्या : राजी हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : थें कहो भीखणजी रा श्रावक दान नहीं देवै तो जे लेवाल ते सर्व थांरे इज आसी। अने थें कहो ते धर्म थानें इज हुवै, थे वेराजी क्यूं थया। थें निंदा क्यूं करो। इम कहि कष्ट कीधो। पाछो जाब देवा समर्थ नहीं। ❀

: १४७ :

स्वामीजी नवी दिक्षा लीधा पछै केतलैएक वर्सं तीन जणिया दिक्षा लेवा त्यारी थइ। जद स्वामीजी बोल्या : थें तीन जणिया साथै दिक्षा लेवौ अनैं कदाचित एकण रो वियोग पड़ जावै तो दोयां नें कल्पै नहीं सो पछै संलेखणां करणी पड़ै। थारो मन हुवै तो दिक्षा लीज्यो। इम आरै कराय तीन जण्यां नें साथै दीक्षा दीधी। पछै मोकली आर्या थइ पिण स्वामीजी री नीत ठेट सूं इ इसी तीखी हुंती। ❀

: १४८ :

दया उपर स्वामीजी तीन दृष्टात दिया—

चौर हिंसक ने कुसीलिया, यारे ताइ हो साधा दियो उपदेश।
याने सावद्य रा *निरवद्य किया*, एहवी छै हो *जिन* दया धर्म रेश।
भव जीवा तुमें जिन धर्म ओलखो ॥१॥

किणही मेश्री नीं हाटे साधु उतर्‌या। रात्रे चौर आया। हाट खोली। साधु वोल्या : थें कुण हो। जव ते वोल्या : म्है चौर छा। साहुकार हजार रुपइया री थेली माँहे मैली है सौ म्है परही ले जास्या। जव साधा उपदेश दीधो : चौरी ना फल माठा है। आगे नरक निगोद ना दुख भोगवणा पडसी। भिन्न २ करनै भेद वताया। ए धन खासी तो घर का सगला अनै दुख थानें भोगवणो पडसी। इम समझायनें चौरी ना त्याग कराया। साधा रा गुणग्राम चोर करता थका प्रभात थयो। एतलै हाटरो धणी आयो। पेढी नें नमस्कार करी थोडो लटको साधा नेंइ कीधौ। चौरा नें देखनै पूछ्यो : थें कुण हो। ते वोल्या : म्है चोर छा। थें हुडी वटायनै हजार रुपइया री थेली माय नै मेली, सो म्है देखता हा। रात्रि मे आय लेवा लागा। साधा म्हानें देखनैं उपदेश दे समझायानैं चौरी ना त्याग कराया। सो या साधा रो भलो होइज्यो। म्हाने डूवता नें राख्या। मेसरी सुण नें साधा रे पगा पड्यो, गुण गावा लागो। म्हारें हाटे आप भलाइ उतर्‌या। म्हारीं थेली राखी। एह धन चौर ले जावता तो म्हारा च्यार वेटा कुवारा रहिता। अवै च्यारूइ परहा परणावसू। ते आपरो उपगार है। मेसरी इम कह्यो पिण साधू तिण रो धन राखवा उपदेश न दियो। चोरा नें तारवा उपदेश दियो।

वकरा ने मारणहार कसाइ हाथ में कत्ती साधा कनै आय उभो रह्यो जद साधा पूछ्यो : तू कुण है। जद ऊ वोल्यो : हूँ कसाइ छू। जद साधा पूछ्यो : थारे काइ किसव। जव ते वोल्यो : घरे वीस वकरा वध्या त्यारे गलै कत्ती करनै वेचसूँ। जद साधा उपदेश दियो : सेर धान खाणों पडै तिण रै अर्थ इसा पाप करे। जद कसाइ वोल्यो : मोनें तो भगवान कसाइ रे घरे मेल्यो है सो मोने दोष नहीं। जद साध वोल्या : भगवान् क्यानें मेलै। थें आगै माठा कर्म किया तिण सू कसाइ रै कुल उपनों। वलै इसा कर्म करै तो नरक मे जाय पडसी। इम भिन २ करनैं समझायो। वकरा मारवा रा जावजीव पचखाण कराया। कसाइ वोल्यो : म्हारै घरै वीस वकरा वध्या है सो आप कह्यो तो नीलो चारो नीरू अनैं काचो पाणी पाऊ। आप कह्यो तो एवड़ मे ऊछेरू कडि घालने वाजर मे

छोड़ूं। आप कहो तो आपने आण सूंपू। धोवण उन्हो पाणी पाज्यो। सूखो चारो न्हाखज्यो। साधा रो एवर न्यारो उछेरज्यो। जब साध बोल्या : थारे सूंसा रो जावतो कीजै। सूंस चोखा पाळजै। इम सूंसा री भलावण देवे पिण बकरा री भलावण न देवे। कसाइ साधा रा गुण गावै : मौनै हिंसा छोड़ाइ तारयो। बकरा जीवता बचिया ते पिण हरखित हुवा।

कोइ एक पुरुष पर स्त्री नो लंपट। ते साधां कने पर स्त्री गमन नो पाप सुणीने त्याग किया। घणो राजी होय साधा रा गुण गावै : आप मौनें डूबतानैं तारयो। नरक जाता नें राख्यो। अनैं उवा स्त्री शील आदर्‍यो सुणनें उणरे कनें आयने बोली : हूं तो था उपर इकतार री धार बेठी थी सो मो सागे गृहवासो करो नहीं तो कूवा में जाय पड़सूं। जब तिण कह्यो : मोनें तो उत्तम पुरुषा पर स्त्री नो घणो पाप बतायो। तिण सूं म्हे त्याग कीधा। म्हारै तो था सूं काम नहीं। जब स्त्री क्रोध रे वस कूवा मे जाय पडी।

हिवे चोर समझ्या अनैं धन धणी रे रह्यो। कसाइ समझ्यो अनैं बकरा बच्या। लंपट शील आदर्‍यो ने स्त्री कूवा मे पड़ी। चोर कसाइ लंपट या तीना नें तारवानें उपदेश साधा दियो। आ तीनानें साधा तार्‍या। ए तीनूंइ तिरया। तिण रो साधा नें धर्म थयो। अनै धणी रो धन रह्यो बकरा जीवा बच्या तिण रो तो धर्म अनैं स्त्री कूवा मे पडी तिण रो पाप साध ने नहीं। केइ अज्ञानी कहे : जीव बच्या अनैं धन रह्यो तिण रो धर्म। तो उणरी श्रद्धा रे लेखै स्त्री मूइ तिण रो पाप पिण लागै। ❀

: १४९ :

किण ही कह्यो जीव बचिया ते धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : कीड़ी नें कीड़ी जाणै सो ज्ञान कै कीड़ी ज्ञान। जद ऊ बोल्यो : कीड़ी नें कीड़ी जाणे सो ज्ञान। कीडी नें कीड़ी सरधे सो सम्यक्त्व के कीड़ी सम्यक्त्व। जद ते बोल्यो : कीड़ी नें कीड़ी सरधे ते सम्यक्त्व। कीडी मारवा रा त्याग किया तिका दया के कीड़ी रही जिका दया। जद ऊ बोल्यो

कीडी रही तिका दया। जद स्वामीजी बोल्या : कीडी वायरा सूं उड़ गई तो दया उड गई, जद ऊ विमासी विचारनै बोल्यो : कीडी मारवा रा त्याग किया तिका दया पिण कीडी रहीं सो दया नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : थन्न दया रा करणा के कीडी रा करणा। जद ते बोल्यो : थन्न दया रा करणा। ❀

: १५० :

किण ही कह्यो सूत्र मे साधू नें जीव राखणा कह्या। जद स्वामीजी बोल्या : ते ठीक ही छै। ज्यूँ रा ज्यूं राखणा किण ही नें दुख देणो नहीं। ❀

: १५१ :

×× रे श्रावका रे पूरी पिछाण नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : कोइ भाड साधू नों रूप वणायनै आयो। तिण नें पूछै थें किण टोला रा। जद तिण कह्यो म्हैं डूंगरनाथजी रै टोलै रा। थारो नाम काइ। कहै म्हारो नाम पत्थरनाथ। काइ भणिया हो। तव ते कहै भणियो तो काइ नहीं पिण बाइसटोला चोखा नें तेरापंथी खोटा या जाणू छूं। जद थे मोटा पुरुष मत्थेन वदामि तिक्खुतो आयाहिण पयाहिण इम कहि वाद्यौ। इसा अजाण है पिण न्याय निरणो नहीं। ❀

: १५२ :

स्वामीजी वाचता एक जणो आय बोल्यो : स्वामी धम्मो मगल कहो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती सुणो। जद ते बोल्यो : स्वामीजी धम्मो मगल सुणावो। जद स्वामीजी बोल्या : भगवती कीसो अधम्मो मंगल है। ओहि धम्मो मगल ईज है गाम जाता सकुन लेवै गधा तीतर बोलावै ज्यू सुणो ते तो वात ओर अनैं निर्जरा हेते सुणो तो वात ओर। ❀

: १५३ :

किण ही पूछ्यो : उजाड में साधु थाको नें सहजे गाडो आवतो थो तिण गाडा उपर साधू नें बेसाण ने गाम में आण्यों। उणने काइ थयो जद स्वामीजी बोल्या : गाड़ो नहीं होनें पुणिया ते गधेड़ा आवता ते उपर

वेसाणनै गाम में आण्यों तिण नें कांइ थयो। जद ऊ बोल्यो : गवेरी वात क्यूं करो। स्वामीजी बोल्या : थे गाड़े वेसाण आण्या धर्म कहो तो गधे वेसाण आण्या हि धर्म। साधू रे तो दोनूं ही अकल्पनीक है। ❀

: १५४ :

फतूजी आदि पाच जण्या ने चंडावल में स्वामीजी कह्यो : थारे कपडो चाहिजै सो लेवो। त्यां मांग्यो तिण प्रमाणे दीधो। मन में संका पड़ी कपड़ो वधतो दीसै। तिवारै अखैरामजी स्वामी नें मेलनैं त्यारे ठिकाणे सूं कपड़ो मंगायनै मापियो तो कपड़ो वधतो नीकल्यो। पछै स्वामीजी त्यानें घणी निपेधी। आगमिया काल नीं अप्रतीत जाणनैं पाचूं जण्या ने साथे छोड़ दीधी। ❀

: १५५ :

ढूंढार में एक भाया रे वीरभाणजी री संका पड़ी। पछै स्वामीजी कनै आयो। सामायक नों उपदेश दियो। जद ते वोल्यो : सामायक तो न करूं कदाच सामायक में थानें स्वामीजी महाराज कहिणी आय जावै तो मोनें दोप लागै। जद स्वामीजी वोल्या : एक मुहुरत नो संवर कर। इम कही संवर कराय पछै उण सूं चरचा कर भिन २ भेद वताय उण री संका मेटनै पगा लगाय दियो। ❀

: १५६ :

नाथजी द्वारा में नैणसिंहजी रो जमाई उदेपुर सूं आयो। नैणसिंहजी कह्यो महाराज यानें समझावो। जद स्वामीजी समझावा लागा। तिणनें पूछ्यो साधा नें आधाकर्मी थानक में रहिणो के नहीं। जद ते वोल्यो : टीक है न रहिणो। वलि स्वामीजी कह्यो : केयक साध नाम धरायनै आधाकर्मी थानक में रहै है। जद ते वोल्यो : रहै छै तो कठेयक सूत्र में चाल्यो हुवैला। वली स्वामीजी पूछ्यो : साधू नें किवाड़ जडनो नहीं, नित्य पिण्ड एक घरणों लेणो नहीं। जद ऊ वोल्यो : आ बात तो साची कही। किवाड़ जड़ै सो साधु रे कांइ रुखालनों है। किंवाड़ जड़ै सो साध हीज नहीं।

जद स्वामीजी कह्यो : केइ किंवाड़ जड़े है। एक घर नों नित्य पिण्ड लैवे है। जद ते बोल्यो : हा महाराज किवाड जड़े है नित्य पिण्ड लैवे है तो कठेयक सूत्र में चाल्यो इज हुवेला। जद स्वामीजी जाण्यों ओ तो समजतो कोइ दीसै नहीं बुद्धि तिखी नहीं तिणसू। ❀

: १५७ :

कोइ सू चरचा करता बुद्धी तो जावक काची देखी अनैं लोक कहै स्वामीजी इणने समझावो। जद स्वामीजी बोल्या : दाल हुवै तो मूग मोट चणा री हुवै पिण गोहा री दाल न हुवै। ज्यू हलुकर्मी बुद्धीवंत हुवै ते समझै पिण बुद्धी हीण न समझै। ❀

: १५८ :

किणही कह्यो आप उद्यम करो तो कानी कानी हलुकर्मी जीव जगत में घणाइ है समझै जिसा। जद स्वामीजी बोल्या : मकराणा रा पत्थर मे प्रतिमा होयवारो गुण तो है पिण इतरा करणवाला कारीगर नहीं। यू समजै जिसा तो घणाइ है पिण इतरा समझावणवाला नहीं। ❀

: १५९ :

वैणीरामजी स्वामी स्वामीजी नें कह्यो : हेमजी नें वखाण अस्खलित परवरा मूहडै तो आवै नहीं जोडता जाय अनैं वखाण देता जाय। जद स्वामीजी बोल्या : केवली सूत्र व्यतिरिक्त इज हुवै। उणारे सूत्र रो काम नहीं। ❀

: १६० :

वैणीरामजी स्वामी बालपणै था। जद स्वामीजी नें पूछयो हींगलू सू पात्रा रगणा नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारै तो पात्रा रगीयाइ है थारै संका हुवै तो तू मत रग। जद वैणीरामजी स्वामी बोल्या : म्हारा कैलूडा थी रगवारा भाव है। जद स्वामीजी बोल्या : कैलू लेवा जाय जद ऊरली कानीं तो पीलो कचा रंगरो केलू अनें आगे लाल पका रंगरो केलू पड्यो देखनें थारे लेखै पहिला देख्यो सोही लेणो। चोखो केलू हेरै तो ध्यान तो सुरगै रगरो इज ठहर्यो इम कहिनै समझाया समझ गया। ❀

: १६१ :

कोइ कहै पात्रा नें दुरंगा क्यूं रंगो। जद स्वामीजी बोल्या : कुंथुंवारी निगै चौखी तरै पड़े। एक रंग सूं दूजै रंग उपर आवै जद दीसणो सोहरो। कोरो हींगलू बोभल पिण हुवै। कालो फोरो हुवै। वासी उतारणो सोरो। इत्यादिक अनेक कारण सूं जू जूवा रंग देवै ते पिण सूत्र में वरज्या नहीं। ❀

: १६२ :

बालपणै बैणीरामजी स्वामी खूंचणा काढ़ता। स्वामीजी आप विना जोया विना पूंज्या पग सरकाया। एक दिन बैणीरामजी स्वामी तो अलगा बेठा हा अनें स्वांमीजी गुप्त पणै पूंजनै पग सरकायो नें साधां नें कह्यो ऊ बेणो अलगो बेठो देखै है। इतलै बैणीरामजी स्वामी बोल्या : ऊ स्वामीजी विनां जोया पग सरकायो। जद ओर साध स्वामीजी कानी देखनें हसवा लागा। पछै साधा कह्यौ पूंजनें पग सरकायो। जद लचखाणां पड्या अनै पगां आय लागा। ❀

: १६३ :

पींपार में बैणीरामजी स्वामी दुजी हाट में बैठानें स्वामीजी हेला पाड्या ओ बैणीराम ३। इम दोय तीन हेला पड्या पिण पाछा बोल्या नहीं। जद गुमानजी लुणावत नें कह्यो बैणो छूटतो दीसै है। जद गुमानजी बैणीरामजी स्वामी नें जाय कह्यो थांनें हेलो पाड्यां बोल्या नहीं तिण सूं स्वामीजी आ बात कही बैणो छूटतो दीसै है। इम सुणनें बैणीरामजी स्वामी डरिया आयनें पगा लागा। जद स्वामीजी बोल्या रे मूरख हेलो पाड्या पिण पाछो बोलै नहीं। बैणीरामजी स्वामी नरमाइ करनें बोल्या महाराज मैं सुणियो नहीं। पछै घणीं नरमाइ करी। इसा बनीत तो बैणीरामजी स्वामी इसा जब्बर स्वामीजी। ❀

: १६४ :

बैणीरामजी स्वामी कह्यो हूं थली में जाऊं चन्द्रभाणजी सूं चरचा करूं। जद स्वामीजी बोल्या : थारै उणा सूं चरचा करवारा त्याग है।

इसो हिज अवसर देख नें ए त्याग कराया। इसा स्वामीजी अवसर ना जाण। ❀

:१६५:

मेणाजी आर्या नें अनें वेंणीरामजी स्वामी नें स्वामीजी बोल्या : ए आख्या रो ओपध घणो करै सो आख गमावता दीसै है। तो पिण ओपध छोड़्यो नहीं। पछै आँख्या घणी कची पड गइ।ओषध घणो कीधो तिण सू आँख्या नें जोखो थयो। ❀

: १६६ :

गुजरात सू सिंघजी आय नाथद्वारै मे स्वामीजी कनें दीक्षा लीधी। पछै कितरा एक दिन तो ठीक रह्यो पछै सिरयारी मे अयोग्य जाण नें छोड दियो। ते माहडै परह्यो गयो। पछै खेतसीजी स्वामी बोल्या : सिंघजी नें प्रासश्चित देइनें पाछो उरह्यो ल्यो, हू जाय नै ल्यावूं। जद स्वामीजी बोल्या : ते लेवा योग्य नहीं। तो पिण कमर बाधने ल्यावा नें त्यार थया। जद स्वामीजी कह्यो उणा भेलो थें आहार कीधो है तो था भेलो आहार करवारा त्याग है। इम सुननें मोटा पुरुष कोइ ल्यावानें गया नहीं। इसा जब्बर भीखणजी स्वामी। पछै सिंघजी रा समाचार सुण्या ऊनो राली ओढनें घरटी रे जोडै सूतो है। ❀

: १६७ :

दोय साधा रे माहो माहि अडवी लागी। स्वामीजी कनै आया। इणरे लोट माहीं थी पाणी रा टपका पडता ऊतो कहै इती दूर आयो ऊ कहै इतरा पावडा। परस्पर विवाद करै। समझाया समझै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : थें दोनू जणा डोरी ले जायने जायगा माप आवो। जद दोनू जणा अड़वी छोड नें सुद्ध होय गया। ❀

: १६८ :

वली दोय साधारै आपस मे अडवी लागी अनैं ऊ कहै तूं लोलपी। ऊ कहै तू लोलपी। इम परस्पर विवाद करता स्वामीजी कने आया

तो पिण विवाद छोड़ै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : दोनूं जणा विगैरा त्याग करो आज्ञा रो आगार राखो। पहिलॉ आज्ञा मागै तेहिज कह्यो। एक जणै च्यार मास रै आसरै विगै न खाधी पछै आज्ञा मागी। जद दूजे रेइ विगैरो आगार होय गयौ। इम कहिनें समजाया। ❋

: १६९ :

नाथजी द्वारा में ५६ रे वर्षे स्वामीजी रै वायरा कारण सूं १३ मास रै आसरै रहिणौ पड़्यौ। तिहॉ हेम गोचरी गया। दाल चणा री नें मूंगा री भेली हुइ। स्वामीजी देखनें पूछ्यो : आ चिणा री मूंगा री दाल भेली कुण कीधी। जद हेमजी स्वामी बोल्या : मैं भेली आणी। जद स्वामीजी बोल्या : कारण वाला रै वासतै ऊदेरी मागने न्यारी ल्याणी तो अलगी रही एह भेली क्यूं कीधी। पछै हेमजी स्वामी बोल्या : अजाण में भेली हुइ। जद स्वामीजी घणा निषेध्या। जद एकान्त जायगा जाय सूता उदास थया। पछै स्वामीजी आहार कर आयनें कह्यो : ओगुण आपरी आतमा रा सूझै है कै म्हारा। जद हेमजी स्वामी बोल्या : माहाराज ओगुण तो म्हाराइ सूझै। जद स्वामीजी बोल्या : ठीक है आज पछै सावचेत रहिजै। ऊठ जा आहार कर इम कहिनै आहार करायो। ❋

: १७० :

काफरला में खेतसी स्वामी नें हेमजी स्वामी गौचरी गया तिहा धोवण विनां चाख्यां भेलो थयो। तिवारै खेतसीजी स्वामी कह्यो : हेमजी आज विनां चाख्या धोवण भेलो कीयो है। माफक निकलीयो तो स्वामीजी इसा निषेधता दिसै है बाकी काण राखै ज्यूं कोइ नहीं। पछै काफरला नां देहरा में पाणी चाख देख्यो चोखो नीकल्यो जद मन राजी हुवो। ❋

: १७१ :

कारण वाला साधा रै वासतै दाल मंगावता तो दोय कानीं मेलता। कांइ चरकी हुवै, काइ खारी हुवै, किणही में लूण घणो हुवै, किणही में

लूण थोडो हुवै। कारणीक नें काइ भावै काइ न भावें। तिण सू जू जूआ भेलता। इसो कारणीक री जावतो करता। ❀

: १७२ :

काकडोली मे सेंहलोता री पोल मे स्वामीजी उतस्या। पिचावनै री साल रात्रि में पोलरी बारी खोल नें स्वामीजी वारै दिशा गया। जद हेमजी स्वामी पूछ्यो : महाराज बारी खोलवारो अटकाव नहीं काइ। जद स्वामीजी बोल्या : ए पाली रो चोथजी सकलैचो दर्शन करवा आयो। घणों सकीलो तो ओ छै पिण इण बातरी सका तो उणरेइ न पडी। तो थारै आ सका कठा सूं पडी। जद हेमजी स्वामी कह्यो : महाराज म्हारै सका क्या नें पडे हू तो पूछा करू छू। जद स्वामीजी बोल्या : तू पूछै छै इण रो अटकाव नहीं। इणरो अटकाव हुसी तो म्हे क्याने खोलस्या।

: १७३ :

ज्यारो आचार खोटो श्रद्धा पिण खोटी इसा तो समदृष्टीहीण गुरु, इसा ही श्रद्धा भ्रष्ट सम्यक्त्वहीण श्रावक। ते कहै म्हानें भीखणजी साध श्रावक सरधै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : कोयला री तो राव, काला वासण मे राधी, अमावस नीं रात्री, आधा जीमण वाला, आधाइ परुसण वाला, जीमता जाय नें खुखारो करें। कहै खबरदार कालो कू खो टालज्यो। काइ टालै। सर्व कालो ही कालो भेलो हुवो। ज्यूं श्रद्धा आचार नो ठिकाणो नहीं ते साध श्रावक किम हुवै। ❀

: १७४ :

रा श्रावक बोल्या : भीखणजी इण बातरो तार काढो। जद स्वामीजी बोल्या : तार काइ काढै डाडाइ सूझै नहीं। ज्यू आधाकर्मी आदिक मोटा दोष ही सूझै नहीं तो छोटा दोषा री खबर किम पडे। ❀

: १७५ :

वाय रै वेग घरटी माडी। पीसती जाय ज्यू उडतो जाय। आखी रात्री पीसनें ढाकणी मे उसास्थो। ज्यूं साधपणो श्रावक पणो लेय नें जाण २ नें दोष लगावै अनें प्रायश्चित्त लेवै नहीं त्यारै लारै क्यू ही विशेष रहै नहीं। ❀

: १७६ :

धामली में आर्य्यां विना भूलाया चोमासो कियो। तिया आहार पाणी री संकडाइ घणी रही। किणही स्वामीजी नें पूछ्यो महाराज धामली में आर्य्यां विना भूलाया चोमासो कियो त्यां नें काइ दंड देस्यो। जद स्वामीजी बोल्या : प्रथम तो दड उ गाम देवैईज है। पछै भेला थया जद त्यां आर्य्यां नें प्रायश्चित देइ सुध कीधी। ❀

: १७७ :

धनांजी री प्रकृति करड़ी जाण नें स्वामीजी विचारयो आ भारमलजी सूं निभणी कठिन है। साहमी बोलै जीसी है। यूं जाणनें छोड़णरो उपाय करनें कला सूं पर पूठे छोड़ दीधी। ❀

: १७८ :

छै लेश्या हुंती जद वीर मे, हुंता आठुंइ कर्म।
छद्मस्थ चूका तिण समे, मूरख थापै धर्म।
चतुर नर　　समजो　　ज्ञान विचार।

ए गाथा जोड़ी जद भारमलजी स्वामी कह्यो : छद्मस्थ चूका तिण समें ओ पद परहो फेरो लोक वैदो करै जिसो है। जद स्वामीजी बोल्या : ओ पद साचो के भूठो। जद भारमलजी स्वामी कह्यो : है तो साचो। जद स्वामीजी बोल्या : साचो है तो लोका री कांइ गिणत है। न्याय मारग चालता अटकाव नहीं। ❀

: १७९ :

सम्वत अठारै तेपनै स्वामीजी सोजत चोमासो कीधो। पछै विचरता २ माहढै पधार्‌या। तिहां सिरयारी सूं गृहस्थपणै में हेमजी स्वामी दर्शण करवा आया। पौल रा चौंतरा उपर तो स्वामीजी पोढया अनें हेठे माचो बिछाय नें हेमजी स्वामी सूता। जद साध अनें स्वामीजी मांहों मांहि साध आर्यां नें क्षेत्रां में मेलवारी वातचीत करै। उण साध नें उण गाम में मेलणो फलाणै नें अमुक गामें मेलणो है। पिण सिरयारी मेलवारी बात न कीधी।

जद हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ सिरयारी में साध आर्य्यां मेलवारी वात ही न कीधी। जद स्वामीजी करडें वचनें करी घणा निषेध्या। फरमायो गृहस्थ सुणता वात हीज न करणी साधा रै विचै बोलवारो काम हीज काइ। हेमजी स्वामी नें करडी घणीं लागी। मूंन साभने सूय रह्या। पछै प्रभाते हेमजी स्वामी तो दर्शण करनें सिरयारी कानी नींवली रो मारग लीधो अनें स्वामीजी कुशलपुर कानीं विहार कीधो। आगै जाता स्वामीजी नें कायक सकुन पाछ हुवा जद पाछा फिरस्या। आप पिण नींवली कानीं पधारथा। हेमजी स्वामी री चाल तो धीरे नें स्वामी री चाल उतावली सो आय पूगा। हेलो पाडथों हेमडा म्हैइ आवा हा। सुण नें हेमजी स्वामी ऊभा रहिनें वन्दना कीधी। पछै स्वामीजी बोल्या : आज तो था ऊपर हीज आया हा। जद हेमजी स्वामीजी बोल्या : भलाइ पधारथा। स्वामीजी बोल्या : तू साधपणो लेऊ २ करता नें ललचावता नें तीन वर्ष आसरै हुवा सो अवै समाचार पका कहि दै। हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ साधपणो लेवारा भाव खराखरी है। स्वामीजी बोल्या : म्हा जीवता लेसी कै, चल्या पछै लेसी। आ वात सुणनें घणी करडी लागी। स्वामीनाथ इसी वात करो। आप रै सका हुवै तो नव वर्ष पछै कुशील रा त्याग कराय देवो। स्वामीजी बोल्या : त्याग है थारै। चट त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नें बोल्या : परणीजवारै वासतै नव वर्ष थें राख्या है कै। हा स्वामीनाथ। जद स्वामीजी बोल्या : एक वर्ष तो परणीजता लागै वाकी आठ वर्ष रह्या। तिण में एक वर्ष स्त्री पीहर रहै। पाछै रह्या सात वर्ष तिण मे दिनरा त्याग है। थारै लारै साडै तीन वर्ष रह्या तिका मे पाँचूं तिथ्यारा थारै त्याग है। वाकी दोय वर्ष नें च्यार महिना आसरै रह्या। इम संकोचता २ पोहर रो लेखो करता पछै घडिया रै लेखै छ मास रो कुशील आसरै वाकी रह्यो। वली स्वामीजी फरमायो : परण्या पछै एक दोय छोरा छोरी होयनै स्त्री मर जावै तो सर्व आपदा पोता रै गलै पडे। दुखी हुवै। पछै साधपणो आवणो कठिन है। इम कही नें वलि उपदेश देवा लगा : जाव जीव शील आदर लै, जोडलै हाथ। एतलै खेतसीजी स्वामी बोल्या : जोडलै २ हाथ जोड लै, स्वामीजी केवे है। जद हाथ जोड्या। स्वामीजी पूछ्यो शील अदराय

देऊं। इम बार बार पूछ्यो। जद हेमजी स्वामी बोल्या अदराय देवो। जद स्वामीजी जावजीव पाच पदां री साख करनें त्याग कराय दिया। हेमजी स्वामी बोल्या : अबे सिरयारी वेगा पधारज्यो। जद स्वामीजी बोल्या : अबारूं तो हीराजी नें भेला हां सो साधा री पडिकमणो परहो सीखजे। इम कहिनें नींबली में आया। ए सर्व बात ऊभां कीधी। नींबली में आया पछै हेमजी स्वामी कनें मिठाइ थी तेहनो बारमो व्रत निपजायो। भारमलजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो। अबै थारै नचीताई थइ। आगै तो म्हें हां अनें अबें पाखंड्या सूं चरचादिक रो काम पड़ै तो हेमजी हेइज। पछै हेमजी स्वामी बोल्या : म्हें शील आदस्यो ते बात अबारूं लोका में प्रसिद्ध न करणी। स्वामीजी बोल्या : हूं न करू। हेमजी स्वामी तो सिरयारी आया नें स्वामीजी चेलावास पधास्या। वेणीरामजी स्वामी नें सर्व बात कही। हेमजी शील आदस्यो पिण कह्यो बात प्रसिद्ध न करणी। वेणीरामजी स्वामी सुणनें घणा राजी हुवा। स्वामीजी नें घणा प्रशंस्या। आप वडो भारी काम कीधो। म्हें घणी इज खप कीधी, पिण काइ टब लागी नहीं, आप आछो काम कीधो। अनें शील आदस्यो ते वात प्रगट करणी छानें न राखणी। आप भलांइ मत कहो। वेणीरामजी स्वामी बात प्रसिद्ध कर दीधी। चेलावास रा बाया भाया राजी घणा हुवा। म्हे तो पहिलाइ जाणता हा हेमजी दीक्षा लेशी। पछै स्वामीजी सिरयारी पधास्या। हेमजी स्वामी वनोला जीमें। महा सुदि १३ शनैश्चर वार दीक्षा रो मुहुर्त ठहरायो। पछै बाबा रो वेटो भाइ रावले जाय पुकास्यो। जद ठकुराणी स्वामीजी नें चाकरा साथै कहिवायो : गाम में रहिज्यो मती। पछें गाम रा पंच भेला होय नें हेमजी स्वामी नें साथ लेइ रावले गया। जद ठकुराणी हेमजी स्वामी नें गहणा कपडा सहित देखनें बोली हूं तो नें यूं को यूं गहणा कपडां सहित परणाय देस्यूं। म्हारा दोलत सिंह रो सूंस है। जद हेमजी स्वामी जाब दीधा परणावो तो गाम में कुंवारा डावड़ा घणाइ है। म्हारै तो सूंस है। इम कही स्वामीजी कनें आय बेठा। स्वामीजी नें गाम में रहिवारी आज्ञा लेय नें पंच पिण पाछा आया। माघ सुदी १५ पछै हेमजी स्वामी रे छ काया हणवारा त्याग हुंता अनें न्यातिलां कह्यो फागुण वदि दूजरै साहवै बहिन नें परणाय

दीक्षा लीज्यो । सो ऊणा री कह्यो मान्यो । पछे स्वामीजी नें आय पूछ्यो । जद स्वामी जी निषेध्या । रे भोला अनर्थ करे है । एक दिन पिण न उल्लघणो । पछै पाछा आयनें जे बीजरे साहवै वहिन परणाय दीक्षा लेणी इसो कागद कीधो ते फाड न्हाख्यो । अनें घरका नें कह्यो : थें इसा दगा करो । म्हारा त्याग भगावो जद लोक बोल्या : भीखणजी समझाया दीसै है । पछै इकवीस दिन बनोला जीमी नें माघ सुदी १३ नें १८५३ गाम बारे दीक्षा थइ । वडला रे नीचै हजारू मनुष्य भेला थया । घणा उछव मोच्छव सहित स्वामीजी रे हस्ते दीक्षा लीधी । आगै सर्व बारै सत हुंता पछै तेरह थया । तठा पछै वधवो कीधा वधोतर थइ । वक चूलिया मे कह्यो स १८५३ पछै धर्मरो घणों उद्योत हुसी ते वात आय मिली । दीक्षा देइ स्वामीजी विहार कीधो । पछै घणो उपकार थयो ।

❀

: १८० :

कच्छ देश थी पाली में टीकम दोसी आयो । अनेक बोला री सका पडी ते मेटवा । जद पाली मे · रे श्रावका कह्यो टोडरमलजी थारी सका मेट देशी । थें थानक मे चालो । इम कही थानक मे ले गया । पछै टोडरमलजी सू चरचा कीधी । टीकम दोसी रा प्रश्ना रो उत्तर आयो नहीं । जद टीकम दोसी बोल्यो या प्रश्ना रा जाव देणवाला तो एक भीखणजी स्वामी इज है और कोइ दिसै नहीं । इम कही ठिकाणैं आयो । कैतलायक दिना पछै स्वामीजी मेवाड सू मारवाड पधारया । सिरयारी होयनें गुण सठ वर्ष पाली चोमासौ कीधो । टीकम दोसी मोकला प्रश्न पूछ्या ज्यारा जाव स्वामीजी दीधा । टीकम दोसी बोल्यो : वंकचूलीया में कह्यो संवत अठारे तेपनें पछे धर्म रो उद्योत होसी । इण वचन रै लेखै तो तेपना पहिली साध नहीं इम सभवै । जद स्वामीजी फुरमायो इहाँ साध नहीं इसो तो कह्यो नहीं । स० १८५३ पछै धर्म रा घणा उपकार आसरी उद्योत कह्यो छै । तेपनें पहीली थोडो उद्योत छो तेपना पछै घणों उद्योत । इम कहीनें समझायो ।

❀

: १८१ :

भारमलजी स्वामी बालक था जद स्वामीजी फरमायो : गृहस्थ खूचणों काढै तिसो काम न करणो। गृहस्थ खूचणों काढै जिसो काम करे तो तेला रो दंड। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : कोइ झूठोइ खूचणों काढै तो। जद स्वामीजी कह्यो : झूठो खूचणों काढै तो आगला पाप उदै आया। तो पिण भारमलजी स्वामी बड़ा वनीत सो वचन अंगीकार कियो। इसा वनीत उत्तम पुरुष हुवै ते खूचणों कढावै हीज किण लेखै। ॐ

: १८२ :

बालपणै भारमलजी स्वामी नें आखी उत्तराध्ययन उभा २ चितारणी इसी आज्ञा स्वामीजी दीधी। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ कदाचित नींद में हेठो पड़ जाउं तो। जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूजनें खूणैं उभा रहो। इण रीते आखी उत्तराध्ययन री सभाय अनेक वार कीधी। इसा वैरागी पुरुष। ॐ

: १८३ :

साध आर्य्यां री प्रकृती करड़ी देखता तो तिणरी खोड़ स्वामी मेटवानें इम दृष्टान्त देता। कषाय रो टूक, जाणै वासति रो टूक, सर्पनीं परै फू, इम कहि नें प्रकृती सुधारवारो उपाय करता। ॐ

: १८४ :

.....वखाण वाणी देवै सूत्र सिद्धांत वाचै छेहड़े जीव खुवाया पुन्य मिश्र परूपै सावद्य अनुकंपा में धर्म कहै तिण उपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : बाया रात्रि में संसार लेखै चोखा २ गीत गावै अनै छेहड़े जाता मोस्यो मारू गावै। ज्यूं पहिला तो वखाण में अनेक वाता कहै पिण छेहड़ै सावद्यदान सावद्यदया में पुण्य मिश्र परूपै। ॐ

: १८५ :

विजयचंदजी पटवा नें आसकरण दाती कह्यो : विजयचंदजी थारा गुरु भीखणजी कंवाड़ खोलनें मेड़ी में उतस्या। इम सुण नें विजयचंदजी

बोल्या : न उतरै। जद आसकरणजी कह्यो : विजयचंद भाइ म्हारी प्रतीत तो राख। जद विजयचदजी बोल्या : थारी प्रतीत पूरी है। तू झूठाबोलो है। इम कहिनें निषेधीयो पिण साधा नें आयनें पूछियो तक नहीं। पछै आ वात स्वामीजी सुणनें बोल्या : विजयचदजी पटवारै जाणै क्षायक सम्यक्त्व दीसै है। साधा मे अनेक दोप लोक कहै इणा नें सुणावै पिण साधा नें पाछो पूछवारो इज काम नहीं इसो दृढ धर्मी। ❀

: १८६ :

एक दिवस विजयचदजी आथण रा स्वामीजी कनें सामायक प्रतिक्रमण करवा आया। वादला मे दिन दीसै नहीं जद स्वामीजी नें अर्ज करी महाराज उदक चुकाय दिरावो। जद स्वामीजी उदक चुकाय दिरायो। बाद मे तावडो निकल्यो दिन घणों दिस्यो जद स्वामीजी बोल्या साधा रै रात्रि मे पाणी पीणो नहीं गृहस्थ रै रात रा सूस न हुवै तेह थी रात्रि में पाणी परहो पीयै। इम सुण नें विजयचदजी पगा पड्या अनें बोल्या : मोटा पुरुषा आप तो अवसर ना जाण छो मोनें निगे न पडी। इसा साधा रा वनीत सो पक्की नरमाइ करी। ❀

: १८७ :

नानजी स्वामी हेमजी स्वामी नें कह्यो : हेमजी ! भीखणजी स्वामी म्हा साधा नें तो हाट मे वेसाणता। कठ मिलाणवाला भाया आडा वेसता। परसेवो घणों हुतो। उपकार रै वासतै कष्ट रो अटकाव नहीं इम स्वामीजी फुरमावता। उन्हा लै चोमासै सिरयारी पक्की हाटै स्वामीजी वखाण देता, भीखणजी स्वामी भारमलजी आगै जोडै विराजता, पाखती कंठ मिलावण-वाला भाया वेठता, बीजा साध माहै वेसता। गर्मी रो वडो कष्ट। इण पर परिपह सहि नें उपकार कीधो। ❀

: १८८ :

स० १८५६ रे वर्ष पान्च साधा सू नाथ द्वारै चोमासो कीधो। भारमलजी स्वामी १ खेतसीजी स्वामी २ हेमराजजी स्वामी ३ तो एकातर

करता। स्वामीजी आठम चवदश रा उपवास करता। अनें उदैरामजी बेलै २ पारणों पारणा में आम्बिल। खेतसीजी स्वामी उदैरामजी नें आहार अधिक देवै। जद स्वामीजी वरज्या। फरमायो : वेला रो पारणो है आहार उनमान सू द्यो। तो पिण अधिक देवा री चेष्टा देख ने स्वामीजी फुरमायो : खेतसी ! उदैरामजी री मोत थारे हाथे हुंती दीसै है। केतलायक वर्षा पछै मारवाड़ में इगसठै री साल उदैरामजी आम्बिल वर्द्धमान तप करता इकतालीस ओली तो हुइ एक अठाइ कीधी। अठाइ रो पारणो खारचिया कीधो। डील में कारण जाण नें चेलावास भारमलजी स्वामी कनें आवतां कराड़ी गाम में थाका।

जद भोपजी तपसी चेलावास आय ने समाचार कह्या। जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी भोपजी तपसी आदि जाय नें खाधे वैसाण चेलावास लेय आया। घास रो विछावणों कर ऊपर सूवाण्या। पछै हीराजी हेमजी स्वामी नें कह्यो : आप लिखणों काइ करो। उदैरामजी स्वामी नें पाणी पावो। जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी दोनूं जणा आया। खेतसीजी स्वामी मोरा पाछै हाथ देय नें बैठा कीधा। इतलै आख्या फेर दीधी। भारमलजी स्वामी फरमायो सरधो तो थारे च्यारूं आहार ना त्याग है। खेतसीजी स्वामी रे हाथ में हीज चालता रह्या। जद खेतसीजी स्वामी कह्यो : मोनें स्वामीजी फुरमायो थो के उदैरामजी री मोत थारै हाथै आवती दीसै है। सो स्वामीजी रो वचन आय मिल्यो। ॐ

: १८९ :

सोजत रा वजार में छत्री त्या स्वामीजी विराज्या। वरजूजी नाथाजी आदि सात आर्य्यां ओर गाम थी आया। स्वामीजी नें वंदणा कीधी अनें बोल्या उतरवा नें जायगां चाहिजे। जद स्वामीजी पोते उठनें नजीक उपाश्रय जड्यो हुंतो त्या आर्य्यां नें साथै लेयनें आया अनें बोल्या : छैरे कोइ भायो इण उपाश्रे री आज्ञा देणवालो। जद एक भायो बोल्यो : म्हारी आज्ञा है। ओर जायगा सूं कूची ल्याय नें तालो खोल कवाड खोल दिया। पछै माहै आर्य्यां नें उतार नें आप पाछा ठिकाणें पधारिया।

एह समाचार नाथाजी रे मूहडै सुण्या ज्यू हीज लिखिया छै। आर्ज्यां नें कमाड खोलायनें न उतरणो इसी परूपे ते अजाण छै। आ तो रीत थेट स्वामीजी थकारी है। ❀

: १९० :

खैरवारा भगजी दीक्षा नें त्यार थया। जद काका वावा रा भाया वेदो घणों कियो। इम कहै 'माह री आज्ञा नहीं। जद स्वामीजी फरमायो थारी आज्ञा री जरुरत नहीं। पछै वडी वहिन री आज्ञा लेयने दीक्षा दीधी। पछै त्या वेदो घणो कीधो। स्वामीजी रे मूढा मूढ झगडो घणा दिना ताइ कीधो पिण स्वामीजी काइ गिणत राखी नही। पछै भगजी नें स्वामीजी पूछ्यो तोने उवे पाछो लेजावैला तो तू काइ करैला। जद भगजी वोल्यो घर मे लेजावेला तो म्हारे च्यारू इ आहार ना त्याग है। स० १८५६ री ए वात छै। अनें पछै साठै चोमासो सिरयारी कीधो तिहा चोमासा मे ते काका वावा रा भाया वेदो मोकलो कियो। स्वामीजी न्याय मारग चालता कोइ री गिणत राखी नहीं। ❀

: १९१ :

देसूरीवाला नाथूजी साध नें जीभ रो लोलपी जाणने घृत दूध दही मिष्टान कडाइ विगं खावारी मर्यादा साधा रै वाधी स० १८५६ रे वर्ष। ❀

: १९२ :

वीरभाणजी ने स्वामीजी फरमायो : पन्ना नें दीक्षा देवारी आज्ञा नहीं। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपा रे आहार पाणी रो सभोग भेलो नहीं। पछें वीरभाणजी पन्ना नें दीक्षा दीधी। जद स्वामीजी आहार पाणी नो सभोग तोड नाख्यो। पछै इन्द्रया सावद्य इसी विपरीत सरधा ले उठ्यो ❀

: १९३ :

ओटा सोनार नें दीक्षा दीधी। तथा वीरा कुंभारी नें दीक्षा दीधी। समपणै प्रवर्त्या नहीं तिणसू महाजन विना ओर नें दिक्षा देवा री रुचि उतरी ❀

: १९४ :

टीकम दोसी रे अनेक बोला री संका पड़ी। गुणतीस ओलीया आस रै लिखनें ल्यायो। चरचा करवा लागो। बोले घणो। जद स्वामीजी ओलीया वाच २ नें उणरा जाब लिख नें वंचाय देता। २६ ओलीया रै आस रै तो संका मेट दीधी। जद घणों रोयो अने बोल्यो आप न हुंता तो म्हारी काइ गति हुंती। आप तीर्थंकर केवली समान हो। इत्यादिक घणा गुण कीधा। स्वामीजी री जोड़ा सुण ने घणो राजी हुवो। ए जोड़ा नहीं एह तो सूत्रा री नियुंक्ति छै। घणी सेवा करनें पाछो कच्छ देश गयो। वलि संका पड़ी जद चौविहार संथारो कीधो। म्हारी संका तो सीमंधर स्वाम मेटसी। पन्द्रह दिन आसरे संथारो आयो। आऊखो पूरो कियो। ❀

: १९५ :

चंद्रभाण नीकलवा लागो जद स्वामीजी बोल्या : सलेखणा संथारो करणो सिरै पिण साधा ने छोड़नें अपछंदापणो सिरे नहीं। जद ऊ बोल्यो : म्हैं अनें भारमलजी दोनू संलेखणा करा। जद स्वामीजी बोल्या : आपे दोनू जणां करा। जद चंद्रभाणजी बोल्या : थां साथे तो न करू भारमलजी साथै करूं। स्वामीजी फेर कह्यो आपे करा। पछै चन्द्रभाण तीलोकचंद दोनूं जणा मान अहंकार रे वस टोला बारे नीकल्या। ते सहु विस्तार तो स्वामीजी कृत रास थी जाणवो। ते जाता थका बोल्या : विश्वा तो म्हाराइ घटेला पिण थारा श्रावका नें तो दाहै वाल्या आकड़ा सिरखा करूं तो म्हारो नाम चंद्रभाण है। जद चतुरोजी श्रावक बोल्यो : थें तो थोड़ा कोश हालो अने हूं कासीद मेल नें ठाम २ खबर कराय देसू सो थानें मन करनें पिण कोइ वंछै नहीं। पछे दाहै बलिया आकडै जिसा थें इज हुवोला। बाद में उठा सू चालता रह्या। पछै आगै रुघनाथ जी मिल्या। त्या कह्यो : थें म्हा में परहा आवो। थारी रीत राखस्यां। .... . .
पछै रोयट रा भाया नें किणहि कह्यो भीखणजी रा टोला सूँ चंद्रभाण तिलोकचंद दोनूं भणणहार साध नीकल गया। जद श्रावक बोल्या : भीखणजी तो पगै है तौ कै उवैतौ है। जद भाया बोल्या : भीखणीजी है

तो साध ओर मोकलाई हुंता दीसै है। या नीकलियो रो लिगार अटकाव नहीं। पछै स्वामीजी उणानें अवगुण वाद बोलता जाण नें उणा रे लारे-लारै विहार कीधो तिण सू एक वर्ष मे सात सो कोश आसरै चालणों पड्यो। थेट चूरू ताइ पधास्था। खेत्रा मे कठैइ टीप लागी नहीं। उणा दोना विहार करता अनेक कूड कपट कीधा। जिण गाम जावता तिण गाम रो मारग तो न पूछता अनें दूजा गाम रो मारग पूछता कारण लारे भीखणजी आवैला तिण सू। पाछै लारे सू स्वामीजी पधारता अनें लोका नें पूछना उवे किसै गाम गया है। जद लोक कहै फलाणे गाम रो मारग पूछता हा। पछै स्वामीजी पोतारी बुद्धी सू विचार नें देखता उण गामरो मारग पूछ्यो है तो फलाणै गाम गया दिसै है सो तिण हिज गाम चालो। जद साध कहता उवे तो उण गाम रो मारग पूछ्यो कहता था अनें आप अठि नें क्यू पधारो। जद स्वामीजी फरमायो हू जाणू छू उणारी कपटाइ। उण गाम रो मारग पूछ्यो तो उण गाम नहीं गया अठिनें इज गया दिसै है। आगै जाय नें देखता तो बैठा लाधता। अनें कदेइ गोचरी करता मिलता। साध देख नें बडो आश्चर्य करता। आप बडी तोली। उवे लोका रे सका घाले ते ठाम २ स्वामीजी सका मेट निसक किया। श्रावक श्राविका ने सुद्ध कर दिया। उणाने ओलखाय दिया। मोटा पुरुप बडो उद्यम कियो। भलो जिन मारग दिपायो। चूरू कानीं पधास्था जद आगे चंद्रभाणजी तीलोकचदजी पहिला सिवरामदासजी नें सतोखचदजी नें फटाय नें आहार पाणी भेलो कर लियो। पछै स्वामीजी पधास्था जद सिवरामदासजी सतोखचंदजी स्वामी जी नें आवता देखनें मत्थेन वदामि कहिनें उभा थया। जद चंद्रभाणजी कह्यो आपा रे थारे आहार पाणी तो भेलो नहीं नें थें वदणा क्यू कीधी। जद सिवरामदासजी सतोखचदजी बोल्या : आपा रा गुरु है सो वदना तो करस्या इज। पछै उणा दोया सू स्वामीजी बात करनै समझाया। चद्रभाण नें ओलखाय दियो। पछै स्वामीजी तो पाछा मारवाड पधास्था। लारा सू उणा चंद्रभाण तीलोकचद सू आहार पाणी तोड दियो। उणा नें ओलख पिण लिया। बोल्या : या नें जिसा स्वामीजी कहता था जिसाइ निकलिया। पछै सिवरामदासजी संतोकचद जी दोनू सुलभ

पणें रह्या। उवे दोनूं इ विमुख रह्या तो पिण स्वामीजी उणारी गिणत राखी नहीं। इसा साहसिक पुरुष एकान्त न्याय रा अर्थी। ❀

: १९६ :

सामजी रामजी बूंदी रा वासी। श्रावगी जातिरा वेद। दोनूं भाई वेलारा (जोडै जनम्या)। उणीयारो सूरत एक सरीखी दिसै। केलवे दीक्षा लेवा आया। तिहा सामजी दीक्षा लीधी सं० १८३८ रे वर्षे। पछै थोडा दिनां पछै नाथजी दुवारै में खेतसीजी स्वामी घणा वैराग सूं घणा महोच्छव सू रंगूजी नें खेतसी जी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी। जिन मारग रो उद्योत घणों थयो। पछै थोड़ा दिना सू' राम स्वामी दीक्षा लीधी। खेतसीजी स्वामी सूं सामजी तो बड़ा अनें रामजी छोटा। केतलै एक काले साम राम रो टोलो कीधो। न्यारा विचरी नें स्वामीजी रा दर्शण करवा विहार करने आवै। जद खेतसीजी स्वामी सामजी रै भोलै रामजी नें वंदणा करै एक सरीखो उणियारो तिण सूं। जद ते कहै हूं रामजी छूं साम जी तो उवै छै। इण मुजब घणीं वार काम पड़्यो जद स्वामीजी बुद्धी सूं कह्यो : रामजी थें पहली खेतसीजी न वदना किया करो जद खेतसीजी जाण लेसी लारै बाकी रह्या जिकै सामजी छै। इसी बुद्धी स्वामीजी री। ❀

: १९७ :

कोटावाला दोलतरामजी रे टोलै रा च्यार साध स्वामीजी भेला आया। वर्धमानजी १ बड़ो रूपजी २ छोटो रूपजी ३ सूरतोजी ४। तिण में छोटो रूपजी बोल्यो : मोनें ठंडी रोटी न भावै। जद स्वामीजी आहार नीं पांती करता ठंडी रोटी ऊपर एक२ लाडू मेल दियो। कह्यो : जे ठंडी रोटी छोडै ते लाडू ही छोड़ देवो। उन्हीं रोटी लेवे तिणरे लाडू न आवै। जद अनुक्रमें आप आपरी पांती ऊठाय लीधी। कोइनें पिण ठडी उन्हीं बोलवारो काम नहीं। ❀

: १९८ :

गाम जाढण में आसरै छव साधा सूं स्वामीजी पधार्‌या। गाम में एक रजपूत रे आरो। जिहां दोय ... " ... आया सो आरामा हीं थी

लापसी ले आया। पछै साधा नें पिण लोका कह्यो आरा माहीं थी और साध लापसी ल्याया सो थें पिण लेइ आवो। जद साधा कह्यो : म्हानें तो आरा मे जाणो कल्पै नहीं। पछै साधा आयनें स्वामीजी नें समाचार कह्या जद स्वामीजी जाण्यों पाली जावा छा कोइ म्हारो नाम अणहुंतोइज ले लेवै। इम विचारी नें कनें जाय पूछ्यो थें आरा माहिं थी लापसी ल्याया के नहीं ल्याया। जद उवें बोल्या : थें क्यूं पूछो थारे म्हारे किसो आहार पाणी भेलो है। स्वामीजी बोल्या : थेंई पाली जावो हो अनैं म्हेंई पाली जावा छा सो ल्याया तो होवो थें अनें कोइ नाम लेवे म्हारो इण वासते पूछा हा सो म्हारा पात्रा तो थें देख लेवो अनें थारा म्हानें दिखाय देवो। जद तडकनै बोल्या : म्हें ल्याया २ नें फेर ल्याया। जद स्वामीजी बोल्या : तडको क्यूं यूं हिज कहो नी म्हारै रीत है सो म्हें ल्याया। इम बुद्धि सूँ साच बोलाय नें ठिकाणें आया। ॐ

: १९९ :

स्वामीजी टोला में छता दरजी रे गोचरी गया। जद दरजी बोल्यो : थारो चेलो काले गुल ले गयो सो आज दिन थानें कल्पै नहीं। जद स्वामीजी ठिकाणें आयनें सर्वने पूछ्यो के काले दरजी रे घर सू गुल कुण ल्यायो। पिण सर्व नट गया। पछै स्वामीजी सर्व नें लेय ने दरजी रे घरे आया। दरजी ने पूछ्यो गुल ले गया ते यामे सू किस्यो है सो ओलखने बतावो। जद दरजी जयमलजी रो चेलो रायचन्द बालक हुतो तिणनें बतायो। जद स्वामीजी तिण ने जाण लियो एहिज गुल ल्याय नें नट गयो दीसै है। इम ठागा रो झूठ रो उघाड कर दियो। ॐ

: २०० :

पीपाड मे रो श्रावक मालजी, स्वामीजी सूं चरचा करता स्वामीजी पूछ्यो मालजी ! छव कायरा जीव खावै तो काइ हुवै। जद तिण कह्यो पाप हुँ। वली पूछ्यो खवाया काइ हुवै। तिण कह्यो पाप ह्व। जद स्वामीजी बोल्या : भारमलजी स्याही गाल ने लिखज्यो मालजी पाणी पाया पाप कहै है। जद मालजी उतावलो बोलवा लागा म्हें पाणी पाया

पाप कद कह्यो जद स्वामीजी बोल्या : पाणी छकाया माहें छै के वारै। जद बोल्यो है-है-है लिखज्यो मती २। इम कष्ट कर नें चालतो रह्यो। ❀

: २०१ :

भिलाड़े स्वामीजी विराज्या तिहा ·· ···रा श्रावक आय प्रश्न पूछ्यो : भीखणजी किणही श्रावक सर्व पापरा त्याग किया तिणनें आहार पाणी वहिरायां काइ हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : धर्म हुवै। जद उण कह्यो : थारे तो श्रावक नें दिया पाप री श्रद्धा है थे धर्म क्यू कह्यो। जद स्वामीजी बोल्या : थें पूछ्यो सो प्रश्न संभालो। श्रावक सर्व पापरा त्याग किया, जद ते श्रावक रो साध ईज थयो। ते साध नें दिया धर्मईज छै। ❀

: २०२ :

स्वामीजी माहिं थी नीकली नवो साधपणों पचखवानें त्यार थया। जद कनें साध था ज्यारी प्रकृति देखी। भारमलजी स्वामी रो पिता किसनोजी त्यारी प्रकृति करडी हुंती। आहार वधतो मंगावै। अधिकाइ री रोटी वधै तो उत्तरती लेवे नहीं। चोखी न देतो कजियो करै। जद भीलाडा में भारमलजी स्वामी ने कह्यो : थारो पिता तो साधपणे लायक नहीं सो परहो छोडस्या। थारो काइ मन है। जद भारमलजी स्वामी फरमायो : म्हारै तो आप सूं काम है। आपरी इच्छा आवै ज्यूं कराइजै। पछै किसनोजी नें स्वामीजी कह्यो : थारै म्हारै आहार पाणी भेलो नहीं। इम निसुणी किसनोजी वोल्यो : म्हारा वेटा नें ले जासूं। जद स्वामीजी वोल्या : ऊ न आवै सो उणरी इच्छा। जद जवरन भारमलजी स्वामी नें लेयनें दूजी हाटे जाय नें वेठो। आहार पाणी ल्याय नें करावा लागो। जद भार-मलजी स्वामी वोल्या : हुंतो न करूं। नित्य धामें पिण करै नहीं। तीजो दिन आयो जद घणीं मनुहार करवा लागो जद भारमलजी स्वामी कह्यो : थारा हाथ रो आहार करवारा जावजीव त्याग है। पछै भीखणजी स्वामी नें आण सूंप्यो। वोल्यो : ओ तो थासूं इज राजी है। था कने इज राखो। थें नवी दीक्षा न लीधी है जितरे म्हारोइ ठिकाणों वाधो। जद स्वामीजी

लेजाय ने जेमलजी ने सूप्या। जद जैमलजी बोल्या : देखो भीखणजी री बुद्धि। किसनोजी नें म्हानै सूपता तीन घर वधावणा हुवा। म्हें तो जाणां म्हारै चेलो पानें पड्यो। किसनोजी जाणें म्हारो ठिकाणों बंध्यो। भीखनजी देखै म्हारो दलिद्र टल्यो। पछें केतलै एक काले किसनोजी आदि दोय साध आरा माहीं थी लापसी ल्याय ने चूकाय ने विहार कीधो। मारग मे तृपा घणीं लागी। लापसी खायोडी अनें उन्हाले रा दिन। तृपा घणीं लागी सो सहन करी पिण काचो पाणी न पीधो। आऊखो पूरो कर गयो। आरा माहिं थी लापसी ल्याया सो तो उणा रा टोला री रीत है पिण नेम मे दृढ रह्यो। काल कर गयो पिण काचो पाणी पीधो नहीं। ❀

: २०३ :

स्वामीजी कनें अथवा साधा कनें लोक वखाण सुणवा आवै। त्यानें वरजै। जद स्वामीजी दृष्टान्त दियो। जिनऋप जिनपाल नें रेणा देवी तीन वाग तो वरज्या नहीं अने दक्षिण नो वाग वरज्यो। झूठ वोली सर्प खावारो भय वतायो। जाण्यो दक्षिण रो वाग जासी तो मोनें खोटी जाणस्यै। ठागा रो उघाड होय जासी। यू जाणनें दक्षिण नो वाग वरज्यो। ज्यू , वाइस टोला, चोरासी गच्छ, तीन सो त्रेसठ पाखड, त्यारे जाता तो विशेप न वरजै अनै शुद्ध साधा कनें जाता वरजै। कारण भीखणजी कनें गया म्हानें खोटा जाण लेसी। उवे म्हारा श्रावक उरह्या लेसी तिणसू वरजें। ❀

: २०४ :

तथा लोका ने साधा सू भिडकावै। जद स्वामीजी बोल्या : आगे भगू पुरोहित पिण वेटाने भिडकाया। कह्यो साधा रो विश्वास कीज्यो मती। वारै कह्णा थी वेटा पिण साधा ने खोटा जाणें। पछै साधा सूं मिल्या जद वाप नें खोटा जाण ने दीक्षा लीधी। जिम " पिण साधा नें खोटा कहै। पिण उत्तम जीव हुवै ते साधा री सगत करनें त्यानें ओलखीनें ठाय आवै। ❀

: २०५ :

आछा २ खेत्र देखनें '' '''' थाणें वेसें। जद स्वामीजी बोल्या : थाणें न वेसै, खाणें वेसै है। असल थाणों तो अमीचंदजी रो सो सेंतालीसै मारवाड़ में विखो पड़्यो जद दूजा ठाणावाळा तो चोमासा में पणां २ विहार कर गया अनें अमीचंदजी तो चोमासा में पींपाड सू पर्यूपणा में भादवा विद १४ नें रात रा वाजरी रा गाड़ा ऊपर वेसीनें गया। मारग में तृषा लागी जद काचो पाणी अलगल पीधो। ते पिण जाट रा हाथ रो। तिण सूं खरो थाणों अमीचंदजी रो सो पगै न हाल्या। ❀

: २०६ :

किणही स्वामीजी नें कह्यो थें अनें वाइस टोला एक होय जावो। जद स्वामीजी पूछ्यो थें अनें आड़ी जाति गिवारादिक भेला हुवो के नहीं। जद ते वोल्यो : नहीं हुवा। जद स्वामीजी वोल्या : तिम हिज म्हें अनें '' '' '' भेला न हुवा। आडी जात ते महाजन रै घरै जनम लिया इज महाजन हुवै। ज्यूं '' '''' नें पिण सम्यक्त्व साधपणो आया इज भेला हुवा : ❀

: २०७ :

..... रा श्रावक वोल्या : पड़िमाधारी श्रावक नें सूजतो आहार पाणी दिया काइ हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ नें काचो पाणी पावै तथा मूळा खवावै तिण में थें काइ सरधो छो। जद ते वोल्या : म्हानें तो पड़िमाधारी कोइज वतावो। वीजी वात में तो म्हें न समझा। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो : कोइ वोल्यो मोनें कीड़ी कूंथूवो दिखावो। जद तिण नें पूछ्यो तो नै हाथी दीसै है के नहीं। जद ते वोल्यो के हाथी तो मोनें दीसै नहीं। जद तिण नें कह्यो हाथी पिण तोने न सूझै तो कीड़ी कूंथुवा किस तरे सूझसी। ज्यूं जीव खवाया में पाप ते पिण थें न जाणो तो पडिमाधारी नें अव्रत सेवाया पाप थारे किम वेसै। आ चरचा तो घणीं झीणी है। ❀

: २०८ :

केइ कहै पोथी आगणे मेलणी नहीं। पूठ देणी नहीं। पोथी पाना तो ज्ञान है। तिणरी आशातना करणी नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : पोथी पाना नें थें ज्ञान कहो छो ता पोथी पाना फाट गया तो काइ ज्ञान फाट गयो। अथवा पोथी पाना सिड गया तो काई ज्ञान सिड गयो। पाना उड गया तो काइ ज्ञान उड गयो। पाना बल गया तो काइ ज्ञान बल गयो। पाना चोर ले गया तो काइ ज्ञान नें चोर ले गया। पाना तो अजीव है। अनें ज्ञान जीव है। अक्षरा को आकार तो ओलखणे रे वासते छै। पाना मे लिख्या त्यारो जाणपणो ते ज्ञान है। ते आतमा छै। आपरे कनै छै। अनें पाना अनेरा छै। ❀

: २०९ :

· गृहस्थ्या ने कहै . अनेरा ने अन्नादिक दीधा पुन्य है तथा मिश्र है। जद गृहस्थ बोल्यो : थारे आहार बध्या थे अनेरा ने देवो के नहीं। जद ते कहै म्हे तो न द्या। म्हानें कल्प नहीं। म्हें देवा तो म्हारो साधपणों भागै। अनें थें अनेरा नें देवो तिणमे थानै पुण्य है तथा मिश्र है। तिण उपर स्वामीजी दृष्टात दियो . जिको वायरो वाज्या हाथी उड जाय तो रुइ री पूणी क्यू नहीं उडै। अवश्य उडै ईज। ज्यू साधू सू अनेरा नें दान देवा थी साधु रो व्रत भागै तो गृहस्थ नें पाप क्यू नहीं लागैं। लागै इज। ❀

: २१० :

हिंसाधर्मी कहै हिंस्या विना धर्म नहीं हुवै। वलि दृष्टात देइ कहै : दोय श्रावक था तिण मे एक जणें तो अग्नि आरभ ना त्याग किया। अनें एक जणै न कीधा। दोनू जणा पइसै पइसै रा चिणा लिया। सोगन न कीधा तिण तो सेकनें भूँगडा कीधा। अनें सोगन कीधा ते कोरा चिणा चाव रह्यो है। इतलै मासखमण रै पारणैं मुनिराज पधार्‌या। सो जिणरै त्याग नहीं तिण तो भूगडा वहिरायनें तीर्थंकर गोत्र बाध्यो। अनें त्यागवालो वेठो जुलक २ जोवै। ऊ काइ वहिरावै। इण न्याय हिंसा

थी धर्म हुवे। अनें हिंसा विना धर्म न हुवै। इम कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : दोय श्रावक हुंता। तिणमें एक श्रावक तो जाव-जीव लगै शील आदस्यो। अनै एक जणैं कुशील ना त्याग न किया। परणीजीयो। पछै तिणरै पाच पुत्र थया। मोटा हुवा। धर्म में समझा। वैराग आयो। दोय बेटानें हरख सूं दीक्षा दीधी। घणो हरख आयो तिण सूं तीर्थंकर गोत्र बाध्यो। थे हिंस्या में धर्म कहो सो थारे लेखै कुशील में पिण धर्म ठहस्यो। हिंसा विना धर्म नहीं तो कुशील विना पिण धर्म नहीं थारे लेखै। इम कह्या कष्ट थयो। पाछो जाव देवा असमर्थ। ❋

: २११ :

कोइने वेरी न करणो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : है रे कोइ वेरी। जद संसार में तो कहै देनी उधारो। अनें धर्म लेखै है रे कोइ वैरी तो कहै पूछै नी करली चरचा। करली चरचा पुछ्या जाव न आवै जद आफेई वेरी हुवै। है रे कोइ वेरी तो कहे काढनी खूचणों। खूंचणों काढ्या आगलै नें दोरी लागै जद क्रोध में आयनें आफेई वेरी हुवै। ❋

: २१२ :

भीखणजी स्वामी ने किणही कह्यो। आप तो पुखता हो। वर्षा में घणा हो सो पडिकमणो बेठा इज करो। इतरी खेद क्या नें करो। जद स्वामीजी बोल्या : म्है जो पड़िकमणो बेठा २ करां तो लारला सूता २ करवारो ठिकाणो है। ❋

: २१३ :

पुर माहै स्वामीजी फरमायो, दश प्रकारे श्रमण धर्म। जद जैचंद वीराणी बोल्यो : महाराज! दश प्रकारे यति धर्म। जद स्वामीजी फरमायो भलाइ महात्मा धर्म कहोनी। ❋

: २१४ :

कोइ साध वार २ उपयोग चूकै पिण नीत में फरक नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : धान रो कुणको पड्यो देखने किणही साध नें

गुरां कह्यो। ओ धान रो कुणको पड़्यो है सो पग दीज्यो मती। जद तिण कह्यो : स्वामीनाथ! को देचूं नीं। थोडी वार थी फिरतो २ आयनें पग दे दीधो। जद गुरु बोल्या : थानें इण ऊपर पग देणो वरज्यो थोनीं। जद ऊ साध बोल्यो : स्वामीनाथ! उपयोग चूक गयो। जब दूजी वेला फेर फिरता २ पग दे घाल्यौ। वलि गुरां निषेध्यो, आगै थानें वरज्यो थोनी। जद वले बोल्यो : महाराज! उपयोग चूक गयो। जद गुरु बोल्या : अबै पग लागै हे तो सवेरै विगैरा त्याग है। थोडी वेला सूं फिरता २ वले पग दे दियौ। इम उपयोग चूक ने वार २ पग लागौं तो ते कुणका उपर पग देवाथी नें विगै टालवा थी राजी नहीं। पिण उपयोग मे खामी है। नीत सुद्ध है दोषा री थाप नहीं तिण सू। नीत साफ पिण उपयोग चूकै कर्मा ना उदय थी तेहथी असाध न हुवै। अनें मोहना उदय थी जाण २ नें दोष सेवै दोष री थाप करै दोष रो प्रायश्चित पिण न लेवै तिणसू असाध हुवै। ❀

: २१५ :

किणही पूछ्यो थारै नें बावीसटोला वाला रै काइ फेर? जद स्वामीजी बोल्या : एक अक्षर रो फरक। एक अकार नो फेर। साध रै अने असाध रै एक आखर रो फेर है। तेहीज म्हारे ने थारे फेर है। ❀

: २१६ :

कोइ थानक रे अर्थे रुपिया उदकै। जद स्वामीजी बोल्या : ए रुपिया थानक में रहै ज्याराहीज जाणवा जिण ऊपर दृष्टांत : अमकडिया गढ में इतरो खजीनो ते खजीनो गढपतिनो ईज जाणवो। ज्यू स्थानक रै अर्थे रुपिया ते पिण परिग्रह थानक में रहै ज्यारो हीज जाणवो।

: २१७ :

हेमजी स्वामी लिखणो करता हा। स्वामीजी नें पानो वतायो। ओल्या खागी देखनें स्वामीजी बोल्या : करसणी हल खडै ते पिण चामा पाधरी काढे है। सो ओल्या वाकी क्यू लिखी। ओल्या पाधरी लिखणी। जद हेमजी स्वामी बोल्या : तहत स्वामीनाथ! ❀

: २१८ :

स्वामीजी कनै एक ब्राह्मण आयनें पूछ्यो साधा व्याकरण भण्या हो। स्वामीजी बोल्या : म्हें तो व्याकरण कोइ भण्यां नहीं। जद ब्राह्मण बोल्यो : व्याकरण भण्यां विना शास्त्र ना अर्थ हुवै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : थें तो व्याकरण भण्या हो। जद ऊ बोल्यो : हुं तो व्याकरण भण्यो छू। थें शास्त्र ना अर्थ कर लेवो। जद ऊ बोल्यो : हुं तो शास्त्र ना अर्थ कर लेवू। जद स्वामीजी पूछ्यो : कयरे मग्गे अक्खाया इणरो अर्थ कहो। जद ऊ ब्राह्मण बोल्यो : कयरे कहता केर। मग्गे कहता मूग। अक्खाया कहता आखा न खाणा। जद स्वामीजी बोल्या : ओ तो अर्थ आयो नहीं। जद ऊ बोल्यो : इणरो अर्थ किम छै। जद स्वामीजी बोल्या : कयरे कहता किसा। मग्गे कहतां मोक्ष रा मार्ग अक्खाया कहता तीर्थंकरे कह्या। एहनों अर्थ इम छै।

: २१९ :

संवत १८५४ स्वामीजी ४ साधां सूं खेरवे चौमासो कीधो। तिहां पज्जूसणां में केयक श्रावक गच्छ वास्या कनें सुणवा गया। उपाश्रय वखाण सुणनें पाछा स्वामीजी कनें आया नें कहिवा लागा : स्वामीनाथ आज उपाश्रय वखाण सुणियो तिणमें इसी वात वाची : कुर्मापुत्र केवल ज्ञान ऊपना पछै ६ मास राज कीधो। एतलै २ साध ऊभा वंदना न करी। जद कुर्मापुत्र बोल्या : म्हांनें केवल ज्ञान उपनो है नें थें वंदना न करो सो किण कारण। जद साध बोल्या : आप केवली छौ पिण लिंग गृहस्थ नो छै तिण कारण आपनें वंदणा म्हें न कीधी। जद कुर्मापुत्र बोल्या : ठीक कही। अवै जाणीयौ। आ बात आज उपाश्रय सुणी सो साची है कांई। जद स्वामीजी बोल्या : आ वात साची जाणै जिणमें सम्यक्त्व नहीं। राज करै ते तो मोह कर्मा रा उदय थी करै। अनें केवली मोह कर्म नें क्षय कियो। सो केवली थया पछै राज किम करै। आ बात वांचणवाला में तो सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै। पिण था सुणवा वाला री पिण संका पडै है। इम कहै समजाय दिया।

: २२० :

केलवा में नगजी आख्या अखम श्रावक हुतो। बुद्धि घणी कोइ नहीं। वीरभाणजी कह्यौ म्हें नगजी नें समदृष्टी कीधो। जद स्वामीजी बोल्या : समदृष्टी आवै जिसी तो उणरी बुद्धि दीसै नहीं सो समदृष्टी किसतरै कीधो काइ सीखायो। जद वीरभाणजी बोल्या : ओलखणा दोहरा भव जीवा आ ढाल सिखाइ। अनें एक नंदण मणीयारा नो वखाण सीखायो। पछै केलवे स्वामीजी पधास्था। नगजी नें स्वामीजी पूछ्यो तू नदणमणीयारा नो वखाण सीख्यो है सो ओ मणीयो लकडा रो है के सोना रो है के रुद्राक्ष माला रो है। जद नगजी बोल्यो : शास्त्र मे चाल्यो है सो मणियो सोना रो हुं ला लकडा रो रुद्राक्ष रो कीकर हुसी। वलि स्वामीजी पूछ्यो : रे नगजी साधवीया नें जडणो चाल्यो। सो ए धवीया गाडलिया लोहारा नी छोटी धवीया है के बीजा लोहारा नी मोटी धमणि ते मोटी धवीया है। जद नगजी बोल्यो : नान्हीं धवीया क्यानें हुवै महाराज शास्त्र में कह्यो है सो धवीया मोटी हुसी। पछै स्वामीजी मन में जाण लियो सो बुद्धि बिना सम्यक्त्वी किम हुवै। बीरभाणजी सम्यक्त्वी कियो केहता सो वात कची ठैहरी। ❀

: २२१ :

कहै कोइनें रुपिया दिया उणरी ममता उतरी तिण रो धर्म हुओ। जद स्वामीजी बोल्या : किण रे बीस हल री तथा २० वीगा री खेती हुती सो १० वीगा तथा १० हल री खेती किण ही ब्राह्मण नें दीधी तो उण रै लेखै या पिण ममता उतरी। ओ पिण धर्म तिणरै लेख कहिणो। ❀

: २२२ :

पाली में हीरजी जती स्वामीजी दिशा पधास्या जद साथै २ जाय। ऊधी २ चरचा पूछै। तिण री श्रद्धा : हिंसा मे धर्म १। सम्यक्त्वी ने पाप न लागै २। सर्व जगत रा जीव मास्या एक समों ससार वधै नहीं ३। सर्व जीव नीं दया पाल्या एक समों ससार घटै नहीं ४। होणहार हुवै ज्युं हुवे

करणी रो काम नहीं केवली देख्यो जद मोक्ष पर हो जासी ५। इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामीजी कनै कहै। जद स्वामीजी पाछो जाव दीधो नहीं। मारग चालता न बोलणो जिण कारण। जद हीरजी बोल्यो : म्हैं कही जिका श्रद्धा थारै पिण बैठी दीसै है जिण सूं थें पाछो जाव दीधो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ भूंडसूंरो भिष्टो खातो हो। साहुकार दिशां जातो सेहजै दृष्टि पड़ी देखनें भूंडसूंरो बोल्यो : साहजी रो पिण मन हुओ दीसै है। ज्यूं थें पिण बोलो हो। पिण आ थारी असुद्ध श्रद्धा भिष्टा समान जाणा छा सो मन करनेइ वाछा नहीं। ❀

: २२३ :

एक दिन हीरजी प्रश्न विपरीतपणे पूछवा लागो। कहै मोनें इणरो जाव देवो। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ भिष्टा सूं भरीयो ठीकरो लेइ आयो। कहै इणमें मोनें घी तोल दो। तो असुद्ध बासण में घी कुण घालै। ज्यू असुद्ध खोटो विपरीत हुवै तिण नें शुद्ध जाव बताया गुण दीसै नहीं। जिण सूं अवारूं जाव न देवा। ❀

: २२४ :

वैरागी री वाणी सुण्या वराग आवै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : कसूंबो पोतै गलै जद वस्त्र रै रंग चढावै। पिण कसूंवा री गाठ बाधै तो पिण वस्त्र रै रंग न चढै पोते न गल्यो तिण सूं। ज्यू सुद्ध श्रद्धा आचार वंत वैरागी साधु पोते वैराग में लीन हुआ औरे वैराग चढावै। ❀

: २२५ :

केइ कहै साध रो धर्म ओर ने गृहस्थ रो धर्म ओर। जद स्वामीजी बोल्या : चोथा गुण ठाणा री अनें तेरमा गुण ठाणा री, श्रद्धा तो एक छै। अनें फर्शणा जुदी छै। काचा पाणी में अपकाय रा असंख्याता जीव अनें नीलण रा अनंता जीव चोथा छठा तेरमा गुण ठाणावाला सर्व सरधै परूपै। पिण फर्शणा में फेर। चोथा पाचमा गुण ठाणा रा धणी तो पाणी रो आरम्भ करे है। अने साधु रै त्याग है। ए फर्शणा जुदी है। हिंसा में पाप चोथा छठा तेरमा गुणवाला सर्व सरधे परूपै। इण लेखै सरधणा तो

एक। अनें चोथा पाचमा वाला हिंसा करै है अनें साधु रे हिंसा रा त्याग है। ए फर्शणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नहीं। चोथा तेरमा गुणठाणा-वाली री सरधा एक छे। तेरमा गुण ठाणावाला री श्रद्धा सू फरक पड़्या चौथा गुणठाणा रो पहलै गुण ठाणै आय जावै। ॐ

: २२६ :

रोयट मे स्वामीजी सालभद्र रो वखाण दीधो सो भाया सुण नें घणा राजी हुआ। स्वामीनाथ आगै सालभद्र रो वखाण तो घणी वार सुण्यो पिण इण रीते तो आगै सुण्यौ नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : वखाण तो ऊहीज है पिण कहिण वाला रै मू हडा मे फेर है। ॐ

: २२७ :

किणही पूछ्यौ पोसा वाला नें जागा दीधी जिणरो काइ हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : उण कह्यो म्हारी जागा मैं पोसो करो इम कहिण वाला नें धर्म। जद फेर पूछ्यो जागा दीधी जिण नें काइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : जागा किसी आघी दीधी है। जागा मैं पोसा री आज्ञा दीधी जिण रो धर्म है। जागा तो परिग्रह माहिं छ ते सेव्या सेवाया धर्म नहीं। सामायक पोसारी आज्ञा देवै ते धर्म है। ॐ

: २२८ :

कोइ कहै सामायक में पूजनें खाज खणै तो श्रावक नें धर्म है। विना पूज्या खाज खणें तो पाप लागै। जद स्वामीजी बोल्या : कीडी माछर सामायक मे चटको दियौ ते चटको काया रे दियो के सामायक रै दियौ। जद तिण कह्यो : चटको काया रै दियो। जद स्वामीजी बोल्या : पूज नें खाज खणै है सो जावता सामायक रा करै है के काया रा करे है। जद उण ऊंधी श्रद्धा सू कह्यो : जावता सामायक रा करे है। जद स्वामीजी बोल्या : खाज न खणतो तो ही समायक रा जावता तो अपूठा घणा हुंता। जे विना पूज्या खाज खणवारा त्याग। जो पूजै नहीं तो खाज खणणी नहीं। खाज न खणै तो मछरादिक ना चटका सह्यां निर्जरा घणी हुती। तिण सूं सामायक घणी पुष्ट हुती। तिण कारण पूजै सो

सामायक रा जावता रै अर्थं न पूंजै। अनै जे चटको काया रै दियो पिण सामायक रै न दियो इम तो तेहिज कहै। तो काया रा जावता रे अर्थं शरीर पूंजै ने खाज खणै छै। पिण सामायक रा जावता रै अर्थं पूंजै नहीं। जे अढाई द्वीप बारला तिर्यंच श्रावक सामायक पोसा करै ते किसी पूंजणी राखै छै। अनें सामायक रा जावता तो त्यारै पिण तीखा छै। अजैणा न करै ते हीज सामायक रा जाबता छै। ❀

: २२९ :

पोसा में श्रावक कोइ तो वस्त्र घणा राखै कोइ थोड़ा राखै। घणा राखै जिण रै घणी अव्रत। थोड़ा राखै जिण रै थोड़ी अव्रत। जद कोई कहै पोसा में पड़िलेहण न करै तो उणनें प्रायश्चित्त क्यू देवै। जद स्वामीजी बोल्या: पोसा में अण पडिलेह्या उपगरण भोगवण रा त्याग। तिण पड़िलेह्या तो नहीं अनैं भोगव्यां जिण लेखै त्याग भागा। तिणरो प्रायश्चित्त आवै। पोसा में पिण शरीर अव्रत में है। ते शरीर नीं साता रै अर्थं वस्त्रादिक आघा पाछा पूजणादिक करै ते सावद्य छै। जे वस्त्र राख्या जिणरो पड़िलेहण न करै अनै न भोगवै तो विशेष कष्ट उपजै तिण सूं पोसो अपूठो पुष्ट हुवै। ते कष्ट सहिण री समर्थाई नहीं, तिण सूं वस्त्रादिक पड़िलेही भोगवै छै। जिम कोइ रै अण छाण्यो पाणी पीवा रा त्याग। हिवै ते पाणी छाणै ते पीवा रै वासतै पिण दया रै वासते नहीं। नहीं छाणै तो दया अपूठी चोखी पालै। ते किम। जे न छाणै जद पीणो नहीं। जे अणछाण्यौ पीवारा तो त्याग अनें छाणै नहीं तो पीणो पड़ैई नहीं। इण वासतै जे छाणै ते पोता री अव्रत सेवा रै वासते छाणै। तिण में धर्म नहीं। ❀

: २३० :

केई कहै श्रावक री अव्रत सींच्या व्रत वधै। तिण ऊपर कुहेतु लगावे: नींबरा रूंख में आंबो रूंख ऊगो। नींब री जड़ीया में पाणी कूडया नींबने आंबो दोनूंई प्रफुल्लित हुवै, ज्यूं श्रावक री अव्रत सींच्या व्रत अव्रत दोनूं वधै। जद स्वामीजी बोल्या: इम अव्रत सींच्या व्रत वधै तो तिण रै लेख

जावक स्त्री सेवै तिण पिण अव्रत सेवी तिण सूं व्रत पुष्ट हुवै। तथा नींवरी जडीया मे अग्नि न्हाख्या दोनू वलै ज्यूं किणहि जावजीव शील आदर्‍यो तो अव्रत वाली तिण रै लेखै व्रत अव्रत दोनूं वलै। तथा गृहस्थ ने पारणो कराया अव्रत सींची तिण सू व्रत वधती कहै तो तिण रै लेखै उपवास कराया अव्रत सूका व्रत पिण सूक जावै। इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्या सेवाया अव्रत सींची तो उण रै लेखै व्रत पिण वधती कहिणी। तथा हिंसा झूठ चोरी मैथुन, परिग्रह रा त्याग किया कराया अव्रत सूकै तो तिण रै लेखै व्रत पिण सूकी कहिणी। ❀

: २३१ :

केइ कहै सावद्य दान मे पुन्य पाप मिश्र न कहिणो तिण सू सावद्य दान मे म्है मून राखा। जद स्वामीजी मुनी रो दृष्टान्त दियो। ज्यूं एक मुनी गाम मे आयो। साथै मोकला चेला। आटो घी गुल मू हढा सू बोलने तो मागै नहीं पिण सानी करनें मागै। आगुलिया ऊंची करै: इतरा सेर आटो इतरा सेर घी इतरी दाल इतरो गुल। जद गाम रा चौदरी पटवारी ओछो घाले जद चेला नें हुकारो करने घर हाटा रा कंलू फोडावै। जद लोक बोल्या:

मुनि मून पारसी भणै, हूकारै षट काया हणै।
अण बोल्याई उदम करै, तो बोल्या कहो काहु गति करै॥

स्वामीजी बोल्या: जिसी उण मुनि री मून जिसी सावद्य दान में थारै मून है। मू हढा सू तो मून कहिता जाए पिण श्रावक श्रावका नें जीमाया पुन्य मिश्र री आमना करै। लाडूआ री दया पलावा री आमना करै। ❀

: २३२ :

पोते हाथै तो कमाड जडै उघाड़ै अनें गृहस्थ खोलनें देवै तो लेवै नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो: जिम कोइ मानवी पर गाम जाता भगी भींट लियो। उणनें पूछ्यो तूं कुण। जद तिण कह्यो हूं भगी छं। जद तिण कह्यो म्हारो भातो भींट लियो। इम कहिता माहों माहिं

गालि रालि बोलता वथोबथ आय गया। भंगी ऊपर आय बैठो। भंगी कहै मोने छोड़। जद ऊ कहै छोडूं नहीं। जद भंगी कहै तूं कहै ज्यूं करूं मोनें छोड़। जद ऊ बोल्यो : थारी स्त्री कने चौको दराय कोरा घड़ा में पाणी मगाय महाजन रा हाट सूं आटो लेई इसी री इसी रोटी कराय देवै तो छोडूं। जद भंगी कबूल करी। उण कह्यौ जिण रीते स्त्री कनें रोटी कराय दीधी। जे समजणो हुवै ते उणनें मूरख जाणै। जे भगी री भीटी तो न खाधी नें भंगी री कीधी खाधी तिण सू उणने विवेकरो विकल जाणै। ज्यूं गृहस्थ कमाड़ खोलनै देवै ते तौ लेवै नहीं अनें अंधारी रात्रि में हाथ सू कमाड़ जड़ै उघाड़ै तिण री संक आणै नहीं। ❋

: २३३ :

केई कहै कारण पड़िया साधू नें असूझतो लेणो। अनें श्रावक नें पिण अल्प पाप बहुत निरजरा हूवै। जद स्वामीजी बोल्या : रजपूत रौ बेटो संग्राम करता न्हास जावै ते सूर किम कहीये। तिण ने राजा पटो किम खावा दे। लोकीक में आवरूं किम रहै। भूंडो दीसै। ज्यूं भगवंत रा साधु बाजे नें कारण पड़ियां असूझतो दियां अल्प पाप बहुत निरजरा कहै असूझता री थाप करै ते इहलोक परलोक में भूंडा दीसै। ❋

: २३४ :

हलुकर्मी जीव खोटा गुरु छोड़ने साचा गुरु करै। जद तथा त्यारा रा श्रावक कहै : पाली में विजैचंद पटवो रुपीया देईनै श्रावक करे है। जद स्वामीजी बोल्या : थारा श्रावक रुपिया साटै परहा जावै जद उणां थांरो मारग काई ओलख्यौ। अनै रुपिया साटै ए समझ्या कहो छो तो बाकी रा पिण रुपिया साटै परहा जाता दीसै है। इण लेखै थांरौ मारग उणां औलख्यौ नहीं। ❋

: २३५ :

सावद्य दान देवै लेवै ते वेलां साधु नें पूछें तो वर्तमान काल में मून राखणी तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : हलवाणी रा छेहड़ा दोनू

कानों वलै अनें वीचै ठंडी। उठी सू पकड्या हाथ वलै नें दूजा छेहडा सूं पकडै तोही हाथ वलै। विचासू पकड्या हाथ न वलै। ज्यू वर्तमान काले सावद्य दान में पुण्य कह्या छ काय री हिंसा लागै। पाप कह्या अंतराय पडै। तिण सूं ते काल मे मून राखणी। ❀

: २३६ :

कोई कहै भगवान् नीलोती खावा नें वणाई है। जद स्वामीजी बोल्या : थारै लेखै नाहर आया तू क्यू न्हासै। तोनेंई भगवान् नाहर रो भक्ष वणायो है। सो थारै लेखै नाहर रै खावानें तोनेंई वणायौ। जद ऊ बोल्यो : म्हारो जीव दोहरौ हुवै दुख पावै। सर्व जीव पिण इम हीज जाण। मार्‌या दुख पावै है। ❀

: २३७ :

हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किणही गृहस्थ स्वामीजी नें कह्यौ : महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रो व्यसन है। जद स्वामीजी बोल्या : काचरीया रौ अटक्यौ किसो विवाह रहे है। ❀

: २३८ :

पुर मे छाजू खाभीयो स्वामीजी कनें आयनै आबूगढ तीर्थ ताजा आ ढाल कहिवा लागौ। तिण मे गाथा। आबूगढ तीर्थ नहिं जुहारचौ। तिण एहल जमारो हारचौ। जद स्वामीजी बोल्या : आबूगढ थें जुहार्‌यौ के नहीं जुहार्‌यौ। जद छाजूजी वोल्यो महाराज म्हें तो आबूगढ कोई जुहार्‌यो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : इण लेखै थारो जमारौ तो एहल ईज गयौ। जद छाजूजी बोल्यो : बापजी म्हारा गला मे ईज घाली। ❀

: २३९ :

पुर माहें भानौ खाभीयौ स्वामीजी कनें आय बोल्यो : महाराज भीलाडा मे दया पाली। सात रुपिया रा पकवान मुरमुरीया आदि हुंता तिण में १६ जणा चूकाय गया। कलाकद वधियो सो आथण रा दही में न्हाख सवर २ सबोर गया। जद स्वामीजी कह्यौ : तू कहितोई इसो लोलपणो करै है सो

खाता किसोयक अनर्थ कीधो हुवेला। जद भानो खाभीयो बोल्यो : म्हारे साथै वर्ष पाचेक रो डावरी थो सो उणनें तो हाथ पकड़ उठाय दियो। काले ओ कीसो उपवास करेलो इम कहि डावड़ा नै उठाय दियो। जद स्वामीजी बोल्या थें तो इसौ आहार कियो है सो स्त्रीयादिक थी अकार्य ही कर उभो रहै अनें ड़ावड़ो तो इसो काम करतो नहीं। सो तो तोनें पोष्पौ ने उण ने उठाय दियो सो इसो थांरो धर्म ने इसी थारी दया है। ❀

: २४० :

भीखणजी स्वामी रुघनाथजी कनें घर छोडवा त्यार थया। जद स्वामीजी री भूआ बोली। दीक्षा लीधी तो हूं कटारी खायनें मर जासू। जद घर में छता स्वामीजी बोल्या : पूणी नहीं है सो पेट में घालै। कटारी घणी करली है सो इसी बात क्यूं करै। ❀

: २४१ :

· ·… कहै म्हे २२ टोला एक छां। अनें भीखनजी न्यारा है। जद किणही कह्यौ थारे माहों माहिं वणै नहीं नै भीखणजी सूं चरचा रो काम पड़्यां एकै क्यूं थावो। जद ·· ·· बोल्या : रजपूता रै भाया २ रै तो माहों माहिं वणै नहीं पिण चोर नै काढ़वा सर्व एकै होय जावे। ए बात स्वामीजी सुणी नै दृष्टात दियो। वास रा कुतारै माह माहि तो कजियौ। उण वास रा कुता दूजा वासवाला नै ।आवा दे नहीं। दूजा वासवाला स्वान उण वासवाला नें आवा दे नहीं आपस में माहों लाहिं कजिया घणा करै। अनें हाथी नीकल्यां सगला भेला होय नै भूसवा लाग जावें। त्या स्वान रें माहों माहिं कद एको थो। पिण हाथी री वेला सर्व एकै होय जावै। इसौ स्वान रो स्वभाव। ज्यूं ······ · माहों माहिं उवे तो उणा री श्रद्धा खोटी कहै। उवे उणा री श्रद्धा खोटी कहै। माहों माहिं अनेक बोला रो फेर आपस में केयक साध पिण न सरधै। अनै साधां सूं चरचा रो काम पड़ै जद स्वान ज्यूं एकै होय जावै। ❀

: २४२ :

बावीस टोला में केयक तो लाल वाली ठंडी रोटी में बेंद्री जीव कहै।

पगा में वाला, ज्यू रोटी में लाला यू कहै अनै केयक टोला वाला ठंडी रोटी वहिरनै परही खाए छै। जिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : कोई मूठी भरया चणा गोहूं खावै तो उणनें साधु कहीजै के असाधु कहीजै? जद ते बोल्या : गोहूं खाए तिणनें तो असाध कहीजै। जद स्वामीजी बोल्या : गोहूं खाए तिणनें असाधु कहीजै तो लटा खाए जिणनें साधु किम कहियै। जे ठंडी रोटी में जीव कहे त्यारे लेखे ठंडी रोटी खाए ते लटा रा खाणहार। ते लटा रा खाणहार नें साधु किम कहिये। इण न्याय ठंडी रोटी मे जीव कहै त्यारै लेखै ठंडी रोटी खाननहार असाध ठहर्‌या। अनै जे ठंडी रोटी खाए त्यानें पूछीजे : जे भूठ बोलै ते साध के असाध? जद ते कहै असाध। जद स्वामीजी बोल्या : थें तो ठंडी रोटी नें अजीव कहो अनै उवे वेइद्री जीव कहै। इम थारै लेखै इज भूठा बोल्या। उणा नें कहीजै : त्या भूठा बोलाने साधु किम कहीजै। तथा थें तो ठंडी रोटी नें अजीव कहो अनै उवे ठंडी रोटी मे जीव कहै। अनै अजीव ने जीव सरधै तिण नें मिथ्यात्वी कह्या छै। इम थारे लेखै ठंडी रोटी में जीव कहै त्यानें मिथ्यात्वी कहीजै। इम उणा रै लेखै उवे असाध अनै उणारै लेखै उवे असाध। अनै मुख सू कहै म्हें माहोमाहिं साध सरधा छा। एहवो त्यारै मिथ्यात्व रूपीयो अधारो घट मे छै। ※

: २४३ :

किणही कह्यो : भीखनजी थें तो जोडा घणी करो। जद स्वामीजी बोल्या : एक साहुकार रे दो बेटा। एक तो जोडै ने एक तोडै गमावै। हिवै जोडै ते आछो के तोडै गमावै ते आछो। ससार नै लेखै जोडै तिणनें आछो कहै। तोडै गमावै तिणनें आछो न कहै। इम कहीं कष्ट कीधौ। ※

: २४४ :

आगरीया में प्रतापजी कोठारी बोल्यो : स्वामीनाथ! आप जोड़ा किसतरै करो छो। जद स्वामीजी एक टोपसी में सपेतो हुंतो इतलै वायरो वाज्यो। एहवो प्रस्ताव देखनै आप गाथा जोडता थकाईज बोल्या :।

न्हानीं सी एक टोपसी।
माहें घाल्यो सपेतो।
जत्न घणाकर राखजो।
नहीं तो पड़ेला रेतो ॥१॥

ए गाथां जोड़ता बोल्या : यूं जोड़ा छां। जद प्रतापजी सुणनें घणौ राजी हुओ। ❀

: २४५ :

श्री जी दुवारा में छपना रै वर्ष एक दादुपंथी आयो। स्वामीजी रो वखाण सुणनें घणो राजी हुओ। सुणता २ एक दिन स्वामीजी ने कहै। आप श्रावकां नैं कहो सो मोनैं साता उपजावै। जद स्वामीजी बोल्या : श्रावका नें कहिनै तोनैं जीमावौ भावै पात्रा माहिं थी काढने देवो। गृहस्थ नें कहिणो हुवै तो रोट्यां वधती वहिरनें ईज तोनें परही देवा। जद दादु-पंथी बोल्यो : तो थारे श्रद्धा लोका नें वरजवारी नें कहिवारी है। जद स्वामीजी बोल्या :। देता नें ना कहो भावै थारो खोसल्यौ। पछै दादुपथी चालतो रह्यौ। ❀

: २४६ :

पोता नीं महिमा वधारवा छल सूं बोलै ते ओलखायवा अर्थे स्वामीजी दृष्टांत दियौ : किणही बेलो कियौ। ते आप रो बेलो चावो करवा उपवास-वाला रा गुण करै : तूं धन है सो इण करली ऋतु मे उपवास कियो है। जद उपवासवालो बोल्यौ : म्हें तो उपवास ईज कियो है। पिण थें बेलो कीधो है सो थानें धन है। इम छल वचन करी आप रो बेलो चावो करै ते मानी अहंकारी जाणवो। ❀

: २४७ :

रुघनाथजी री मा पिण घर छोड़नें उणा में भेप लियो हुंतो। सो डील में कारण पड्यो। जद रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी संसार रै लेखै म्हारी मा नें दर्शन दीजो। जद स्वामीजी दर्शन देवा गया। थानक जायनें त्यां आर्या नें पूछ्यो। जद आर्यां कह्यो : उवै तो गोचरी गया। जद

स्वामीजी पाछा आया। जद रुघनाथजी कह्यो : थें दर्शन दिया। जद स्वामीजी बोल्या : किसी ठीक। किण मेडी ऊपर गोचरी करै। सो हूं कठै दर्शन देवू। आ बात टोला माहि थका री छै। ❀

: २४८ :

केइ हिंसाधर्मी कहै : एकेंद्री बिचै पचेंद्री रा पुन्य घणा तिणसू एकेंद्री मार पचेंद्री बचाया धर्म घणो हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : एकेंद्री थी बेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। बेंद्री थी तेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। चउरेंद्री थी पचेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। अनें कोई पंचेंद्री मरतो हुवै तिणनें पइसाभर लटा खवायनें बचायो तिणनें धर्म हुवै के पाप हुवै। इम पूछ्या जाब देवा असमर्थ थयो। स्वामीजी बोल्या : जिम बेंद्री मार पचेंद्री बचाया धर्म नहीं तिम एकेंद्री मार पचेंद्री बचाया धर्म नहीं। ❀

: २४९ :

हिंसाधर्मी इम कह्यो : आचार्य उपाध्यायादिक बडो साधु हुंतो ते विषय रो वाह्यो गृहस्थ होयवा लागो। जद कोई श्रावक आपरी बहिन बेटी सू अकार्य करायनें पाछो थिर कीधो। तिण रो बडो लाभ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : थारा गुरु भ्रष्ट हुता हुवै तो थारी बहिन बेटी सू इसो काम करावो के नहीं ? जद ते बोल्या : म्है तो इसो काम न करावा। जद स्वामीजी बोल्या : थें इण बात रो धर्म कहो तो इसो कार्य क्यू न करावो। थें इसो काम न करावो तो बीजारै बहिन बेटी किणरै ऊगलतू पडी है। इसी ऊंधी परूपणा तो कुशीलिया कुपात्र हुवै सो करै। ❀

: २५० :

अढाई सो बेला आदि तप पूरो थया पछै आप २ री सामग्री में लाडू दरावै छै। जद स्वामीजी बोल्या ए आपरै मुतलब लाडू दरावै छै। जाणै म्हानेंई बहिरावसी। जद किणही कह्यो सामीनाथ ए लाडू किसा सगलाई बहिरे छै। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार री बेटी परणीजै जद चवरी में ब्राह्मण वेद पाठ भणतो पोता री डावरी कनें घी

चोरावा री धुन उठाई : घी चोरे २ घी चोरे २। जद डावरी बोली : स्या में चोरूं ४। जद ब्राह्मण बोल्यो : कोरूं करवूं ४। जद डावरी बोली : सुंस जासी ४। जद ब्राह्मण बोल्यो : तुम्हारा बाप नों स्यूं जासी ३। जद तिहा गीतां में जाटणी बेठी थी ते घी चोरावा री धुन में समझ गई। जद जाटणी गीत में गावा लागी : सुणजो हो वनरी रा बाबा थारो घृत सूसत है। जद

ब्राह्मण जाटणी नै कह्यौ : रंडेम करी सवादं। अर्द्धों अर्द्ध समायरे।

स्वामीजी बोल्या : ज्यूं तिण ब्राह्मण कोरा करवा में घी चोरायो। सुसजाए तो पिण जाण्यौ पानें पड़्यो सोही खरो। जाटणी ने आधो घृत पिण देणों ठहराय दियो। तिम · ·· ·· पिण सामग्री में लाडू दरावै ते सर्व न वहिरावै कायक छोरा-छोरी पिण खाय जावै। तो पिण देख पानै पड़्यौ सोही खरो। इम आप रे मुतलब ए रीत ठैहराइ है। ❀

: २५१ :

न्याय री सीख न मानें अनें अजोगाई अन्याय करै तिण ने पाधरौ करवा ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। एक साहुकार री हवेली मूंहढै रावलिया तमासो माड्यो। जद साहुकार वरज्यो। इण ठाम तमासो मत करो। लुगायां बहू बेटी सुणें थें मूहढा सू फीटा बोलो। ते कारण म्हारी हवेली रै मूंहढे तमासौ मत करो। इम समजाया पिण रावलियां मान्यो नहीं। तमासो मांड्यो। लोक घणा भेला हुआ। रावलिया तान कर रह्या। जद साहुकार हवेली ऊपर नगारा री जोड़ी चढ़ाय छोहरा नें कह्यो : नगारा बजावौ। जद छोहरा नगारा बजावा लागा। जद रामत में भंग पड्यौ। लोक वीखर गया। रावलिया रे हाथे दान पिण न आयौ नें भूंड़ा पिण दीठा। ज्यूं कोई न्याय री सीख न मानै अन्याय करै जद बुद्धिवंत बुद्धिकर कष्ट करै। कला चतुराईकर अन्याई नें पाधरो करै। ❀

: २५२ :

साधु बखाण देवै। तिहां परषदा मोकली देख नें उपगार मोकलो देखनें ········· तथा ········· रा श्रावक साधां री निंदा करे लोका ने भेला

करे तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : किणही साहुकार रै हाटे गराक घणा। भीड घणी देखनें पाडोसी देवाल्यो तिणनें गमे नहीं। जाण्यौ इण रे इतरी भीड तो हूँ पिण मनुष्या नें भेला करूँ। इम विचार कपडा न्हाख नागो हूओ। नाचवा लागौ। मनुष्य तमासो देखवा घणा भेला हुआ। जद ओ मन में राजी हूओ। ज्यू साधा कनें परिषदा देख ने तथा त्यारा श्रावका नें गमे नहीं जद ते पिण कदाग्रह करे। मनुष्य भेला करै ❋

: २५३ :

सवत १८५५ पाली चोमासै खेतसीजी स्वामी रे कारण ऊपनो रात्रि दिशा रो उलटी रो। जद स्वामीजी हेमजी स्वामी नें जगायनें खेतसीजी स्वामी रसते पडया सो आप खाच पकडने ले आया। स्वामीजी बोल्या : संसार नीं माया काची। खेतसीजी सरीपो यू होय गयौ। पछै खेतसीजी स्वामी नें सुवाणनें सिराणा माहि थी नवी पछेवडी काढनें ओढाय दीधी। थोडी वेला पछै सावचेत थया। मूहढै बोलवा लागा। जद कह्यौ : आप रूपाजी नें आछीतरै भणावजो। जद स्वामीजी बोल्या : तू तो भगवान रो स्मरण कर। रूपाजी री चिंता क्या नें करै। पछै खेतसीजी स्वामी रो पिण कारण मिट गयौ ❋

: २५४ :

सुपात्रदान री कला सीखाववा ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : किणही गाम मे साधा चोमासौ कीधो। एकातर गृहस्थ रै अतराय तुटै तो दोय महिना जोग मिल्या पातरै २ पाव २ घी वहिरावै तो चोमासा मे १५ सेर रै आसरे थयो। ४।५ रुपिया रै आसरै थयो। तिण मे रसायण आवै तो तीर्थंकर गोत्र वधै। कोई अनेक भव छेदकर देवै। अने छकाय रा प्रतिपाल करै। साता ऊपजै। अनै गृहस्थ रै आरा मोसर में व्याह मे अनेक रुपिया लगावै तिण मे पाच रुपिया तो कठीने जावै। ए शीख श्रावका नें तारवा भणी स्वामीजी दीधी। ❋

: २५५ :

किणही साहुकार आरो कियो। घणा गाम नेहत्या। लोक जीमता कायक वारदानो घट गयो। जद पर गाम रा आया ते तो जीम्या नहीं तो पिण कहे आरा जगारा है सो घटताइ आया है वधताई आया है। वली वेहिज कहै घडी दो घडी पछै जीमसा काइ कारण नहीं। अनै एक जणो उण साहुकार रो घेपी वाजार मे आय गदरा ऊपर तो लोटे है अनै मूहढा सू कहे आरो विगडयो रे विगडयो। जद किणही पूछ्यो करियावर में गुल गालवा में तो थेंई सेंमल ईज हुसो नें वारदानो घट्यो क्यू ? जद ऊ बोल्यो : नहीं सा। म्हाने पूछ्यो ही कदी। म्हानें पूछ्यो हुवै तो वारदानो घटै ईज क्यूँ। अने आरो विगडै ईज क्यूं। जद वलि उण ने पूछ्यो थें जीम्या के नहीं। जद ऊ बोल्यो : म्हे तो आछीतरै जीम लिया। पहिलाई जाणता था। इणरै वारदानो घटतो दीसे है। हिवै स्वामीजी वोल्या : इसा पूतला कुपात्रा नें पोख्या सो आरो काइ विगडै वापरा रो जमारो विगडतो दीसै है। ❀

: २५६ :

आमेट में पुर रा वाइ भाइ वादवा आया। त्या चरचा करता पूछ्यो ६ पर्याय १० प्राण जीव के अजीव। जद कोइ तो जीव कहै। कोइ अजीव कहै। इम आपस में ताण घणी करवा लागा। पछै स्वामीजी नें आय नें पूछा कीधी : महाराज ६ पर्याय ने १० प्राण जीव के अजीव। जद स्वामीजी वोल्या : जिण चरचा में भर्म हुवै ते चरचा करणीज नहीं ओर ही घणी चरचा है। इम कही समझाय दिया। ताण मेट दीधी ❀

: २५७ :

संसार नो मोह ओलखायवा स्वामीजी दृष्टात दियो। कोइ परण्यां पछै वाल अवस्था में आउपो पूरो कर गयो। जद लोक में घणो भयंकार मच्यो। लोक हाय हाय करता कहे : वापरी छोहरी रो काइ घाट हुसी। वापरी १२ वर्ष री राड़ हुई सो आ दिन किण रीत सू काटसी। इम विलाप

करै। स्वामीजी बोल्या : लोक तो जाणै ए दया करै है पिण एतो उणरा कामभोग वाछै है। जाणै ऊ जीवतो रह्यौ हुतो तो इण रै २।४ डींवरा डावरी हुता। आ सुख भोगवती तो ठीक इम वाछै पिण या न जाणै आ घणा कामभोग भोगवती माठी गति मे जाती। जिणरी चिंता नहीं तथा ऊ किसी गति मे गयो तिका पिण चिंता नहीं। ज्ञानी पुरुष हुवै ते तो मरण जीवण रो हर्ष सोग न आणै ❀

: २५८ :

हेमजी स्वामी घर मे था जद एक बहिन थी तिण नें मामौ आय मौसाले ले गयो। हेमजी स्वामी चिंता करवा लागा। भीखणजी स्वामी कनें आय कह्यौ : स्वामीनाथ आज तौ मन उदास घणो। बहिन री मन मे घणी आवै। असवार लारे मेलनें पाछी बोलाय लेहू मन मे तो इसी आवै। जद स्वामीजी बोल्या : इसा ससार ना सुख काचा। सजोग रो विजोग पड जावै। शारीरिक मानसिक दुख ऊपजै। जठे भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुखा रो कदेइ विरहौ पडै ईज नहीं। ए स्वामीजी रा वचन सुणनें सतोष आय गयौ। ❀

: २५९ :

एक आर्य्या पाली में बेलो कियो। पछै पारणा री आज्ञा मागनें आरा बाला रा घर सू दूजै दिन पारणौ करवा लापसी आणी। स्वामीजी नें दिखाई। पछै स्वामीजी विचारयौ नें पूछ्यौ थें बेलो कियो सो इण लापसी रे वास्ते ईज न कीधौ है। साच बोल। जद आर्या बोली : स्वामीनाथ मन में आइतो खरी। जद स्वामीजी ओर साध साधव्या नें आरा रै दूजै दिन जाणौ वरज दियौ। आचार्य कनें साध साध्वी त्यारी वरजणा न कीधी ❀

: २६० :

संवत १८५७ स्वामीजी पुर चौमासो कीधो। फोजवाला आवता जाण नें स्वामीजी विहार करवा लागा। जद भाया बोल्या : आप विहार क्यू करो। जद स्वामीजी बोल्या : आगै अठै टोलावाला चौमासो कीधौ।

फौज रा जोग सूं गाम रा लोक केइ परहा गया। पिण टोलावाला बोल्या : म्हैं तो चौमासा में विहार न करां। इसी अड़वी सूं विहार न कीधो। पछै फोज आई टोलावाला नागोस्यां री गुवारी में जाय रह्या। त्यांनें पकड़ने कह्यौ : माल बतावौ। मरचां री धूई दीधी। मरचां रो तो वड़ो मूंहढै वांध्यो। परीषह घणो दीधो। तिण कारण विहार करण रा भाव है। रहिवा रा भाव नहीं। जद भाया बोल्या : महाराज ! आप विहार मत करौ। म्है आपनें आछी तरै लेजावसा। आपनें मेलनें जावा नहीं। जद स्वामीजी सुसता रह्या। पछै फोज रो हलवलौ पड़यौ जद भाया तो रात्रि रा कानी २ न्हास गया। प्रभाते स्वामीजी पिण विहार करनै गुरलां पधास्या। केइ भाया पिण गुरलां आया। त्यांनें स्वामीजी कह्यौ : थें कहिता था म्है साथे आवसा सो पहिला रात्रि रा न्हास नै उरहा आया। जद भाया बोल्या : म्हैं मगरी ऊपर ऊभा देखता था। उवे स्वामीजी पधारै २। जद स्वामीजी बोल्या : अलगा ऊभा देख्यां कांई हुवै। थें कहिता था म्हैं साथै रहिसा सो साथै तो रह्या नहीं। गृहस्थ रो कांई भरोसो। गृहस्थ रे भरोसै रहिणो नहीं। ❀

: २६१ :

नींवली सूं विहार करने स्वामीजी चेलावास पधारै जद मार्ग पूछवा लागा। जद जैचंदजी श्रावक बोल्यौ : स्वामीनाथ। मार्ग तो हूं जाणूं छूं सुखे २ पधारो। आगै नीलां में ले जाय न्हाख्या। मार्ग चोखो लाधौ नहीं। जद स्वामीजी जैचंदजी नें घणो निपेध्यौ। तू कहितो थोनी : हूं मार्ग जाणूं छूं। जद जैचंदजी बोल्यौ : हूंतो मार्ग चूक गयो। जद स्वामीजी बोल्या : गृहस्थ रे भरोसै रहिणौ नहीं। ❀

: २६२ :

दूजो कोई जाब देवै तिणमैंई न समझै अनें आपरी भाषारोंई आप अजाण तिण ऊपर स्वामी जी दृष्टांत दियो : एक बाई बोली : म्हारो भरतार आखर लिखै सो बीजा सूं वंचै नहीं। जद दूजी बाई बोली : म्हारो भरतार लिखै सो आप रा लिख्या आप सूंई न बंचै। इसा जगत

में बुद्धिहीण। ज्यूं केइ आपरी भापा रा आप ही अजाण। त्यानें केवली भाष्या धर्म री ओलखणा किस तरै आवै। ❀

: २६३ :

साधु गोचरी में आहार मगाया सूं बधतो ल्यायौ। जद स्वामीजी पूछ्यो : आहार बधतो क्यूं आण्यौ। जद ऊ बोल्यौ : जोरावरी सूं न्हाख दियौ। जद स्वामीजी बोल्या : जोरावरी सूं भाठौ न्हाखै तो लेवो के नहीं। ❀

: २६४ :

एकेंद्री मार पचेंद्री पाळ्या लाभ है इम किणहि कह्यौ। जद स्वामीजी बोल्या : थारौ अगोछो किणहि खोसनें ब्राह्मण नें दियो तिण में लाभ है के नहीं। अथवा किणहि रो खोडो खोसनें लूटाय दियो तिण में लाभ है के नहीं। जद कहै : ओ तो लाभ नहीं। उण धणी रा मन बिना दीधो तिण सू। जद स्वामीजी बोल्या : एकेंद्री कद कह्यो म्हारा प्राण लूटनें ओरा नें पोखजो। इण न्याय एकेंद्री नीं चोरी लागी तिण सूं लाभ नहीं। ❀

: २६५ :

दुख ऊपना लोक विलापात करै तिण ऊपर स्वामी जी दृष्टात दियो : किण ही साहुकार गोहा रा खोडा भर्या। ऊपर दर लीपनें तीखा किया। एक पडोसी तिण पिण खोडा मे धूल खात कचरो न्हाखनै दर लीपनें ऊपर साफ कीधो। गोहा रा भाव आया। एक २ रा दोय २ हुवै। साहुकार खोडो खोल वैचवा लागौ। पाडोसी पिण गोहा री साई लेइ गराक साथै ल्याय खोडो खोल्यौ। माहै खात नीकल्यौ। रोवा लागौ। देखा देख लोग पिण रोवा लागा। देखौ बापरा रै गोहूं चाहीजै नें खात नीकल्यौ। इम कहि रोवा लागा। जद किण ही समजणै पूछ्यौ : अरे थैं माहै घाल्यौ काइ थो। जद रोवतो बोल्यो : म्है घाल्यो तो थो

हीज थो। जद ऊ बोल्यौ : घाल्यौ खात तो गोहूँ कठासूं नीकलसी ? ज्यूं जीव जिसा पुन्य पाप बांध्या तिसा उदय आवै। विलापात किया कांइ हुवै। ※

: २६६ :

चेलावास रा जूंझारसिंहजी ठाकुर, त्यां कनै रुघनाथजी आय बोल्या : म्हारै चेलो भीखन है सो बकरा बचाया पाप कहै है। दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी आय बोल्या : ठाकरां कलाल रा घर नों पाणी साधु नें लेणो के नहीं। जद ठाकर बोल्या : कलाल रा घर नों तो साधु ने लेणो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : इणा नै पूछो ए लेवै के नहीं। जद रुघनाथजी ऊठ नें चालता रह्या। ※

: २६७ :

गूंदोच में रुघनाथजी स्वामीजी सूं चरचा करता आवसगसूत्र खोलनें बतायो। ओ देखो काउसग भागनैई उंदरा ने मिनकी कना सूं छौड़ाय देणो। जद स्वामीजी उणां रा टोला माहै थका सं० १८११ रा साल रो आवसग काढ बतायो। ओ थारा देखा देख लिख्यौ। तिण में तो ओ अर्थ कोइ मंड्यौ नहीं। जद रुघनाथजी बोल्या : म्हैं तो ओर नी देखादेख ओ अर्थ घाल्यौ है। जद स्वामीजी बोल्या : इसो झूठो अर्थ घालणो कठे है। जद पोतीयां बंधणीया बोली : म्हारा पात्रा में ऊन्हो पाणी ल्यो इण में पाना परहा गालो। जद रुघनाथजी ने घणो कष्ट थयो। जिन मारग रो उद्योत थयो। घणा लोक समज्या। ※

: २६८ :

स्वामीजी सूं कोइ चरचा करतां शुद्ध श्रद्धा रा बोल बेठा तो पिण बोल्यो : आप कहो सो बात तो ठीक छै। पिण केइ बोल पूरा ग्राह्य में आवै नहीं। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो। दस सेर चावलां रो चरू चूला ऊपर चढाया ऊपरला चोखा सीज्या हाथ सूं देख्या तो सैणो हुवैते हेठला पिण सीज्या जाणै अनै मूर्ख हुवै ते जाणै ऊपरला तो

सीज्या पिण हेठै कोरा नहीं। इम विचार हेठै हाथ घाले तो हाथ वले। ज्यू चतुर हुवै ते मुदै बोल वेठा जाणै बीजा बोल पिण साचा ईज हुसी ॐ

: २६९ :

स्वामीजी सू चरचा करता न्याय निरणो बताया पिण मानै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि रोगी ने वेद ओपध पावा लागो कहै ओ ओपध पी जा रोग जातो रहसी। जद रोगी बोल्यौ : मू हढा मे तो घालू नहीं। म्हारा मौरा मे कूड दो। ओपध चोखो है तो मोरा मे कूड्याई रोग परहो जासी। जद वैद बोल्यो : पीधा विना तो रोग न जाय। ज्यूं सूत्र रो वचन साधा रो वचन सरध्या मिथ्यात्व रूप रोग जाय। पिण सरध्या विना कोरो सुणीया न जाय। ॐ

: २७० :

स० १८५४ रे वर्ष चदू वीरा नें टोला वारै काढी। जद पींपार में आयनें हेमजी स्वामी विराज्या तिण हाट घणा रा श्रावक सुणता साध आर्य्या रा अवगुणवाद बोलवा लागी। जद लोक बोल्या : या देखो थारा टोला माहै हुती सो अवे भीखनजी रा टोला रा अवर्णवाद बोले है। जद स्वामीजी सामली हाट सू ऊठने पधारनें बोल्या : आ कहै तिण रो थे साच मानौ हो तो आ आगै रुघनाथजी रा टोला मे फतूजी री चेली हुती। जद फतूजी रे माथै दोप रो मैजर पड्यौ। जद पहली तो आ चदूजी यू कहीती थी सूर्य मे खेह हुवै तो म्हारी गुरुणी में खेह हुवै। पछै इण हिज वाई रो ओढवा रो चोसरो कपडो जाच गुरुणी ने ओढायने नवी दीक्षा दराइ तिका या है। ए स्वामीजी रो वचन सुणनें लोक कानी २ वीखर गया। चदूजी पिण चालती रही। तिण रो वाप विजैचद लूणावत आदि न्यातीला पिण तिण ने अजोग जाणी। ॐ

: २७१ :

केइ कारै श्रद्धा वैठी तो पिण रो सग छोडै नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो। गाडा रा वेहूं चीला रै बीच में सुसलै घर

कियौ। गाड़ा जातां आवतां माथा में डसी री लागै। तो पिण ठिकाणौ छोडै नहीं। इतरे दूजै मुसलै कह्यो : अठै माथा में लागै सो या जागा परही छोड़। जद मुसलो बोल्यो : सैंहदी जागा छूटै नहीं। ज्यूं साची श्रद्धा री रहिस बेठी तो पिण आगला सैंहदा कुगुरु त्यारो संग छोडै नहीं। ❀

: २७२ :

सं० १८५५ पाली में हेमजी स्वामी टीकमजी सूं चरचा करता एक मेसरी बोल्यो : सर्प ने च्यार पइसा देई कालवेल्या कना थी छुडायो तिण रो कांइ थयो। जद टीकमजी बोल्यौ : चोखो धर्म थयो। जद ऊ मेसरी बोल्यो : ते सर्प पाधरो ऊंदरां नें बिल में गयौ। जद टीकम जी बोल्यौ : माहै ऊंदरो हुसी नहीं तो। ए बात हेमजी स्वामी स्वामीजी ने आय कही। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि कागला ने गोली बाही। कागलो उड़ गयौ तो कागला रो आउखो ऊभो। पिण गोली वावणवाला ने तो पाप लाग चूको। ज्यूं साप छोडायो ते साप ऊंदरां ना बिल में गयौ। माहै ऊंदरो नहीं तो उंदरा माथे भाग। पिण सर्प ने छोड़ावण वालो तो हिंसा रो कामी ठहर चूको। भीखणजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यौ इसौ जाब देणौ। ❀

: २७३ :

हेमजी स्वामी दीक्षा लेइ दशवैकालिक सीख्या। पछै उत्तराध्ययन सीखवा लागा। जद स्वामीजी बोल्या : वखाण सीख। कंठकला है तिण सूं। मुदै उपगार तो वखाण रो है। मोटा पुरुषा रे इसी उपगार नीं नीत। ❀

: २७४ :

हेमजी स्वामी नें भारमलजी स्वामी कह्यौ : म्है टोला वाला मांहि थी नीकल्या। जद केतला एक वर्षां ताई चोमासा में अंजणा देवकी रो वखाण तीन २ वार बांचता। वखाण थोड़ा तिण कारण। ❀

: २७५ :

स० १८२४ भीखनजी स्वामी तो चोमासो कटालीयै कीधौ। भारमलजी स्वामी नें वगडी करायौ। बीच मे नदी वहै सो मोटा पुरुषा पहिला कहि राख्यौ तिण सू नदी री ऊली तीर तो स्वामीजी पधारता अनें पैली तीर भारमलजी स्वामी पधारता। माहोंमाहिं वाता कर हेतु युक्ति सीख सुमति आछी तरै दर्शन देई पाछा कटालीये पधार जाता। अनें भारमलजी स्वामी वगडी पधारता। आ वात भारमलजी स्वामी कहिता था। ❀

: २७६ :

भीखनजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यौ। म्है उणाने छोड्या जद ५ वर्ष ताइ तो पूरो आहार न मिल्यौ। घी चोपर तो कठै। कपडौ कदाचित् वासती मिलती ते सवा रुपीया री। तो भारमलजी स्वामी कहिता पछैवडी आपरै करौ। जद स्वामीजी कहिता १ चोलपटौ थारै करो १ म्हारै करो। आहार पाणी जाचनें उजाड मे सर्व साध परहा जावता। रूखरा री छाया तो आहार पाणी मेलनें आतापना लेता, आथण रा पाछा गाम में आवता। इण रीते कष्ट भोगवता। कर्म काटता। म्है या न जाणता म्हारो मारग जमसी, नें म्हा मे यू दीक्षा लेसी ने यू श्रावक श्राविका हुसी। जाण्यो आत्मा रा कार्य सारसा मर पूरा देसा इम जाणनें तपस्या करता। पछै कोइ २ रे सरधा वेसवा लागी। समझवा लागा। जद थिरपालजी फतैचन्दजी आदि माहिला साधा कह्यौ लोग तो समझता दीसै है। थें तपस्या क्यू करौ। तपस्या करण मे तो म्हें छाईज। थें तो बुद्धिवान छो सो धर्म रो उद्योत करौ। लोका नें समझावो। जद पछै विशेष खप करवा लागा। आचार अनुकपा री जोडा करी व्रत अव्रत री जोड़ा करी। घणा जीवा नै समझाया। पछै वखाण जोड्या। ❀

: २७७ :

वालपणा मे भारमलजी स्वामी लिखणो करता जद वार २ लेखण कढायचो करे। पछै भीखनजी स्वामी वोल्या : थारे लेखण काढवारा

त्याग है। जद आफेइ काढ़वा लागा। इम करता २ लेखण काढवा री कला घणी चोखी आई। ❀

: २७८ :

किणहि रे रोगादिक ऊपना हाय तराय करै। जद स्वामीजी बोल्या : यूं न करणो। रोगादिक ऊपना गाढो रहणो। ज्यूं किणहि रै माथै देणो हो। देवारा परिणाम नहीं हुंता। पिण पैलै जवरी सूं लिया। जद मूर्ख तो विलाप करे। समझण हुवै ते देखे दैणो मिट्यो। पछै देणा पड़ता तो पैहलांइ टंटौ मिट्यौ। माथा रो ऋण मिट्यौ। ज्यूं रोगादिक ऊपना सैणो जाणै बंध्या कर्म भोगव्या टंटौ मिट्यौ। यूं जाण नें विलाप न करै ❀

: २७९ :

स्वामीनाथ वखाण में भैरूं शीतला नें निषेधै। जद हेमजी स्वामी वोल्या : आप देवता नें निषेधौ सो दोप करेला। जद स्वामीजी बोल्या : वरता रो समदृष्टी देवता रो है सो फोड़ा पाड़ै तो समदृष्टी इंद्र वज्र री देवै तिण सूं डरता साधा ने दुख न देवै। ❀

: २८० :

स्वामीजी बोल्या : मूओ मनुष्य काम आवै तो साधु संसार लेखै गृहस्थ रै काम आवै। साधु कनै कोइ आयो। पाच रुपिया भूल गयो। दूजो ले गयो। साधु जाणै इणरा रुपिया है। अनें ऊ ले गयो, आय नें पूछै म्हारा रुपिया अठै था सो कुण ले गयो, तो साधु वतावै नहीं। एक धर्म सुणावा रो सीजारो है। वाकी सावद्य कामारे लेखै साधु गृहस्थ रे काम आवै नहीं इसो साधु रो मारग है। ❀

: २८१ :

भीखनजी स्वामी गृहस्थ री थकी पाड़िहारी सूई कतरणी छुरी रात्रि १ तथा घणा दिना रात्रि राखता। जद ' वोल्या : साध नें सूई रात्रि राखणी नहीं। छुरी कतरणी पिण रात्रि राखणी नहीं। जद स्वामीजी

बोल्या : बाजोट मे लोह रा खीला रहै। तथा शंख पत्थर पत्थर ना ओर सिया पिण पाडिहारा रात्रि रहै छै। तथा लोह रा हमाम दस्ता आदि पिण पाडिहारा रात्रि गृहस्थ रा थका रहै तिणमें दोप नहीं तो सूई कतरणी छुरी ए पिण गृहस्थ रा थका पाडिहारा रात्रि रहै तिणमे दोप नहीं। ❀

: २८२ :

बोल्या : सूई भागै तो तेला रो प्रायश्चित आवै। जद स्वामीजी बोल्या : थारै लेखै बाजोटो भागै तो संथारो करणो। ❀

: २८३ :

बोल्या भीखनजी ए आचार नीं जोडा गावै है सो वादणा गावे है। जद स्वामीजी बोल्या : वादणा तो बगड ज्यारा गवीजै है। शुद्ध रीत प्रमाणै चालै ज्यारा वादणा कोइ गवीजै नहीं। ❀

: २८४ :

पींपार मे भीखनजी स्वामी गाथा कही।

अचित वस्त नें मोल लरावै।
समिति गुप्ति हुवै खडजी।
महाव्रत तो पाचूंइ भागै।
चौमासा रो दण्डजी।
साध मत जाणौ इण चलगत सूं।

आ गाथा सुणनें मोजीरामजी वोहरो बोल्यो : अरे जसू उरहो आवरे रा घर तो लूंट लियो ने माथै वले डंड करै। ज्यूं भीखनजी महाव्रत तो पाचूं ई परहा भागा कहै। अनै वले चौमासी रो दड कहै छै। जद स्वामीजी बोल्या : पाच महाव्रत भागा पछे चोमासी रो दड न कह्यो है। इहा तो इम कह्यो है : महाव्रत पाच भागै पिण कतरा भागै। चौमासी रो दंड आवै जितरा भागै इम कही समझाया। ❀

: २८५ :

केइ कहै सावद्यदान मे भगवान मून कही है सो वर्त्तमान काल विना पिण मून राखणी। पुन्य पाप न कहिणो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो :

तीन जणा रे इसी सरधा। एक जणो सावद्यदान में पुन्य सरधै १। एक जणो सावद्यदान में मिश्र सरधै २। एक जणौ सावद्यदान में पाप सरधै ३। या तीनूं जणां अभिग्रह कियो आ संका मिटै तो घर में रहिवा रा त्याग। अबे ए संका काढवा दरबार में तो जाए नहीं। एतो संका काढवा साधां कने ईज आवै। हिवै साधां नें पूछ्यां साधु कहै म्हारै तो मून है। तो त्यांरी संका किम मिटै। इण लेखै वर्त्तमान काले मून। सुयगडायङ्ग श्रु० १ अ० ११ तथा श्रु० २ अ० ५ अर्थ में मून कही। अनै उपदेश में भगवती श० ८ उ० ६ भगवान गौतम नें कह्यो : तथारूप असंजती नें सचित्त अचित्त सूझतो असूझतो दियां एकंत पाप। इण न्याय उपदेश में छै जिसा फल बताय समझाय साधपणो परहो देणो। ❁

: २८६ :

केइ कहै साधु सामायक पडावै नहीं तो पाड़णी सीखावै क्यूं। जद स्वामीजी बोल्या : साधु सामायक पड़ावे नहीं। सो किसो सामायक नें धको देई पाड़ै है। एक मूहूर्त्त नी सामायक कीधी। अनें १ मूहूर्त थया सामायक तो आय गई। पाडै सो तो दोष अतिचार नीं आलोवणा करे है। ते आलोवणा री भगवान री आज्ञा। जिण पाड़वारी पाटी सीखावै है। अनें वर्त्तमानकाल में पडावै नहीं। सो ते ऊठनें परहो जाय तिण आश्री पड़ावै नहीं। पिण दोष री आलोवणा कराया सीखाया दोष नहीं। ❁

: २८७ :

एक जणो स्वामीजी सूं चरचा करता ऊंधो अंवलौ बोलै। जद स्वामी जी नें किणहि कह्यौ : महाराज ! ए ऊंधो अंवलौ बोलै तिण सूं काई चरचा करौ। जद स्वामीजी बोल्या : नान्हों बालक समज न आई जितरै बाप री मूंछ्यां खाचै। पिता री पाग में देवै। पिण समज आया पछै ऊहीज चाकरी करै। ज्यूं साधा रा गुण न ओलख्या जितरे ए ऊंधो अवलौ बोलै गुण ओलख्या पछै ए हीज भाव भक्ति करसी। ❁

: २८८ :

साध राते वखाण देवै। · · · पिण राते वखाण देवै। साध बाजार में ऊतरै। देखादेख · पिण बाजार में ऊतरै। इम देखादेख कार्य करै। पिण शुद्ध श्रद्धा आचार विना पाधरी न पडै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : एक साहुकार में पोते तो समझ नहीं अनें पाडोसी नी देखादेख व्यापार करै। पाडोसी वस्तु खरीदै तिका वस्तु ओ पिण खरीदे। जद पाडोसी विचार्यौ ओ देखादेख करै है के माहें समझ है। जद पाडोसी बेटा नें कहै, अबारूं टीपणा तेज है, सो देसावरा सूं खरीदणा। टीपणा थोडा दिना मे एक २ रा दोय २ हुवे है। ए बात सुणनें साहुकार देसावर जायनें टीपणा जूना नवा खरीद्या। सो पूंजी रो नास थयो। ज्यूं साधा री देखादेख ˙ पिण कार्य करै पिण शुद्ध श्रद्धा आचार विना काइ गरज पलै नहीं। ❀

: २८९ :

किणहि कह्यौ . पिणतपस्या मास खमणादिक करै। लोच करावै। धोवण ऊन्हौं पाणी पीवै। या करणी यारी यूंही जासी काई। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि लाख रुपिया रो देवालो काढ्यो। पछै पइसा रो तेल आण्यौ तिणरो पइसो परहो दियो तो पइसा रो साहुकार। रुपिया रा गोहू आण्या नें रुपियो परहो दियो तो रुपीया रो साहुकार। इम पइसा रुपीया रो तो साहुकार थयो पिण लाख रुपीया रो देवालो काढयौ तिण रो साहुकार नहीं। ज्यूं पाच महाव्रत पचखी आधाकर्मी स्थानक निरंतर भोगवै। इत्यादिक अनेक दोप सेवै। तिण रौ प्रायश्चित पिण नहीं लेवै। ओ मोटो देवालौ लोच सूं नें तपस्या सूं कठै ऊतरै। पछे मास खमणादिक पचखे नें चोखो पालै ते तपस्या नो साहुकार पिण पाच महाव्रत भाग्या ते देवालौ किम उतरै। ❀

: २९० :

किणहि कह्यौ उघाडै मूंहडै बोलनें साधा नें वहिरावै तो वहिर लेवै अनें एक दाणा ऊपर पण पग लागा लेवै नहीं। श्रर असूझतो

गिणै ते किण कारण। जद स्वामीजी बोल्या : साधा नें वहिरावै ते मुख्य काया रो जोग है। तिण काया रा जोग सूं चालता ऊठता बेसता अजैणा करता वहिरावै तथा वहिरावता फूक देवै अनें तिणनें पहिला साधा आरै कीधी ह्वै तो घर असूझतो ह्वै। अनें साधू आरै कियो नहीं अनें ते उठतो अजैणा करै तो ऊहीज असूझतो थयौ। उघाड़ै मुख बोलै ते वचन रो जोग है, ते बोलता अजैणा सूं घर तथा बोलणवालो एक ही असूझतो नहीं ह्वै। उववाइ में कह्यौ : जे निंदा करनें देवै तो लेणौ। तो जे निंदा-करै गाल बोलै ते किसी जैणा कर। इण कारण बोलवारी अजैणा सू तेह नें असूझतो न कहीयै तिण सूं तिणरा हाथ सूं लिया दोप नहीं। ❀

: २९१ :

सं० १८५५ रे आपाढ़ महीने नाथजीद्वारा स्वामीजी घणा साध आर्य्यां सूं विराज्या। तिहा अजबूजी गौचरी उठ्या। किणहि घी वहिरायौ। आगै गया एक बाई घाट वहिरायनें पूछ्यौ : थें किण री आर्य्यां। जद त्या कह्यौ : म्हैं भीखनजी स्वामी रा टोळा री। जद ते बोली : हे राडा! थें पैलकेई म्हारी रोटी ले गई। उरही दो म्हारी घाट। इम कहि घाट लेवा लागी। जद एक ब्रजवासणी वरजे : हे कीकी! अतीत नें दियो पाछो मत ले। जद ते बोली : कुता नें न्हांख देसूं पिण इणा कना सूं तो उरहो लेसूं। इम कहि घी सहित घाट जबरी सूं उरही लीधी। अजबूजी ए बात स्वामीजी ने आय कही। जद स्वामीजी घणा विमासवा लागा। पछै बोल्या : इण कलिकाल में नहीं पिण देवै ना पिण कहै जाणनें असूझतो पिण होवै, पिण देनें उरहो लेवै ए बात तो नवीज सुणी। ब्रजवासणी रा कहिण थी बात गाम में फेली। उणरा धणी नें लोक कहै : हाटे तो थें कमावो नें घरे थांरी बहू कमावै। ऊ पिण मन में लाजै। थोरा दिना पछै राखड़ी रे दिन तो एकाएक बेटो मर गयौ। थोडा दिना में धणी पिण मर गयौ। जद सोभजी श्रावक तुकौ जोड़्यौ।

बादर साहरी दीकरी कीकी थारो नाम।
घाट सहित घी ले लियौ। ठालीकर दियो ठाम ॥१॥

कितरायक काल पछै उण रै घर साधु गोचरी गया। वहिरायवा लागी। साधा पूछ्यौ : थारो नाम काई। जद वोली : उवा हू। पापणी छू। आर्य्या रा पात्रा माहिं थी घाट लीधी ते। कोई तो परभव मे देखै म्है इण भव में देख लीधा पापना फल। इम कहि पछतावा लागी। ❀

: २९२ :

स० १८५६ नाथद्वारा मे हेमजी स्वामी, स्वामीजी नें कह्यौ : आपा श्रावका रे ईज गोचरी जावा अनुक्रम घरा री गोचरी जावा नहीं सो कारण काइ। जद स्वामीजी वोल्या : अठै द्वेप घणौ तिण सू अनुक्रमें गौचरी न करा। जद हेमजी स्वामी वोल्या : आप फुरमावो तौ हूं जाऊ। जद स्वामीजी वोल्या : भलाइ जावौ। जद मोहनगढ में गौचरी फिरता एकण घरे गोचरी गया। पूछ्यौ आहारपाणी री जोगवाई है। जद ते वाई वोली : रोटी लूण ऊपर पडी है। जद हेमजी स्वामी मैडी ऊपर दूजो घर है तिहा गौचरी गया। ऊपर लै घर वाई ऊधी अवली वोली : घणौ भौड़ कीधो। पिण रोटी दीधी। घणी वेला लागी। जद वाई जाण्यौ ए साध म्हारा इज दीसै। पाछा हेठा ऊतरता वाई वोली : आप पधारो आहार वहिरो। इम कहि वहिरावा रोटी हाथ मे लीधी। जद हेमजी स्वामी कह्यौ : वाइ तूं कहिती थी रोटी लूण पर पडी है। जद उवा वोली : म्है तो तेरापथी जाण्या था तिण सूं कह्यौ। जद हेमजी स्वामी कह्यौ : वाई छा तो तेरापथीज। थारो मन है तो दै। जद दोरीसी विना मन वोली ल्यो। पछै आगला घरा गया। आहार पाणी री जोगवाई पूछी जद ते कहै : म्हारै तो तेरापथ्या ने रोटी देवारा त्याग है। जद हेमजी स्वामी वोल्या : रोटी देवारा त्याग है। पाणी है तो पाणी वहिराव। जद ऊठनै पाणी वहिरायो। पाछै स्वामीजी ने आयने समाचार सुणाया। स्वामीजी सुणनै राजी हुआ। ❀

: २९३ :

गुरा री कीमत ऊपर स्वामीजी ताकडी री डाडी रो दृष्टात दियौ : जिम ताकडी री डाडी रे ३ वेज हुवै। विचला वेज मे फरक है तो अतर-

काणी हुवै। विचलौ वेज तंत हुवै तो अंतरकाण न पड़ै। ज्यूं देव गुरु धर्म विच में गुरु आया। जो गुरु चोखा हुवै तो देव पिण चोखा हुवै। धर्म पिण चोखो बतावै। गुरु खोटा हुवै तो देव में फरक पाड़ देवै अनें धर्म में ई फरक पाड़ देवै। जो गुरु मिलै ब्राह्मण तो देव बतावै शिव अनें धर्म बतावै ब्राह्मण जीमावौ १। गुरु मिलै जो भोपा तो देव बतावै धर्म राजा। धर्म बतावै भोपा जीमावो पाती लेवौ २। गुरु मिलै कामड़िया तो देव बतावै रामदेवजी। धर्म बतावै जमा री रात जगावौ कामड़ी जीमावौ ३। गुरु मिलै मुल्ला तो देव बतावै अल्ला। धर्म बतावै जबै करौ। एर चरंती मेर चरंती। खेत चरंती बहु तेरा। हुकम आया अल्ला साहिब रा सो गला काटूं तेरा ४। अनें जो गुरु मिलै निर्ग्रंथ तो देव बतावै असल अरिहंत। धर्म भगवांन री आज्ञा में ५। गजी में मूंदी, चासती। तीनूं एकण गोत। जिणनें जैसा गुरु मिल्या तिसा काढिया पोत। इण दृष्टाते जैसा गुरु मिलै तैसाई देव अनै धर्म बतावै। ❁

: २९४ :

केई अजाण कहै : म्हे तो ओघा मुहपती नें वांदा। म्हारै करणी सूं काई काम। तिण ऊपर स्वामीजी बोल्या : ओघा नें वांद्या तिरै तो ओघो तो हुवै है ऊंन रो अनै ऊंन होवै है गाड़र नी। जो ओघा नें वांद्या तिरै तो गाडर नां पग पकरणा। धन्य है माता तूं सो थारो ओघो पैदास हुवै है। अने मुहपती नें वांद्या तिरै तो मुहपती तो होवे है कपास री अनें कपास हुवै वणरो। जो मुहपती नै वांद्या तिरै तो। वण नें नमस्कार करणौ। धन्य है तूं सो थारी मुहपती हुवै है। ❁

: २९५ :

कोई कहै ए . . . दोष लगावै तो पिण गृहस्थ विचै तो आछा है। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियौ। एक साहुकार नीं हाटे प्रभाते कोई पइसो लेई आयौ। कहै साहजी पइसा रो गुल है। जद तिण पइसौ लेइ वांदनै उरहो लिहौ। गुल दे दियौ। जाण्यौ प्रभाते तांबा नाणा री

बोहवणी हुई। दूजे दिन रुपियो लेई आयौ। कहै साहजी रुपिया रा टका है। जद तिण रुपियो लेइ वादने उरहो लियौ। टका गिण दिया। मन में राजी हूओ आज रूपा नाणा रो दर्शण हूओ। तीजै दिन खोटो रुपियो लेई आयौ। कहै साहजी रुपइया रा टका है। जद ते राजी होय बोल्यौ : म्हारै काल को गराक आयौ। रुपियौ हाथ मे लेई देखै तो खोटो। माहै तावो नें ऊपर रूपो। अलगो न्हाखनै बोल्यौ : प्रभाते खोटा नाणा रो दर्शन हुओ। जद ऊ बोल्यो : साहजी वैराजी क्यू हुआ। परसूं तो म्हें पइसो आण्यौ सो तावो नाणो वाद्यौ। काले रुपियौ आण्यौ सो रूपो नाणौ वाद्यौ। अनै इणमें तो तावौ रूपो दोनूं है सो दोय वार वादो। जद ऊ बोल्यौ : रे मूरख परसूं तो एकलौ तावो हो सो ठीक। काले एक लौ रूपो हो सो विशेष चोखौ। उवे तो न्यारा २ हा। तिण सूं खोटा नहीं। अनै इणरै माहै तो तावो अनै ऊपर रूपा रो झोल तिण सूं ए खोटो। ए काम रो नहीं। इण दृष्टाते पइसा समान तो गृहस्थ श्रावक। रुपिया समान साधु। खोटा रुपिया समान । ऊपर भेष तो साध रो नें लखण गृहस्थ रा। ए खोटा नाणा सरीषा। ना तो साध में ना गृहस्थ मे अधवेरा ए वादवा जोग नहीं। श्रावक ही प्रशंसवा जोग अराधक। साध ही प्रशंसवा जोग आराधक। पिण खोटा नाणा रा साथी भेषधारी आराधक नहीं। ❀

: २९६ :

किणहि कह्यो टोलावाला नें वंदणा किया उवे कहै : दया पालौ। केई पाछो खमावै। अनें आप जी कहो सो कारण कांई। जद स्वामीजी बोल्या : नाथा नें कहै आदेश। जद उवे कहै आदि पुरुष कूं। पोतै आदेश झेलै नहीं। पोता मे गुण नहीं तिणसू। आदेश कियो ते आदि पुरुष कू भलायौ। गुसाइ नें कहै नमो नारायण। जद ते बोल्या : नारायण। इणरो मुदौ ओ म्हा में करामात कोई नहीं है। नमस्कार नारायण कू करौ। वैष्णु नें कहै राम २ जद उवे कहै रामजी। उणा पिण रामजी ने भलायौ। पोतै झेल्यो नहीं। फकीर नें कहै साइ साहिव। जद ऊ कहै साहिव। उण पिण साहिव नें भलायौ। जती नें कहै गुराजी वंदना। जद उवे कहै धर्म लाभ।

धर्म करो तो लाभ हुसी। म्हारै भरोसै रहिजो मती। ... नें कहै खमाउं स्वामी, वादूं स्वामी। उवे कहै दया पालौ। दया पाल्या निहाल हुसो पिण म्हानें वाद्या कोई तिरौ नहीं। इण रौ मुदौ यो है। ए पिण वदणा झेलै नहीं। घर में माल विना हूंडी सीकारणी आवै नहीं। अनें साधां नें वंदना करै। जद उवे कहै जी थांरी वंदना म्है सतकारी थानें वंदणा रो धर्म होय चूकौ। कोई कहै जी कहिणो कठै चाल्यो है। तिण रो उत्तर : राय प्रसेणी में सूर्याभ वंदना कीधी जद भगवान ६ बोल कह्या। तिण में जीयमेय सूरियाभा। ए वदना करौ ते थारौ जीत आचार है इम कह्यौ। कोई कहै जीय शब्द सूत्र में है थे जी एक अक्षर ईज किम कहो छौ। तेह नो उत्तर : ए जीय शब्द नो एक अक्षर जी ते देश है। ते देश कह्या दोप नहीं। सूत्र में कठैक तो वचन रो पाठ। वयण आवै अनें कठैक वय आवै। इहा पिण देश आयौ। तथा धर्मास्तिकाय नें कठैक तो धम्मत्थिकाए एहवो पाठ। कठैक धम्मा धम्मे आकासे। इहा पिण देश कह्यौ : तिम जीय ए पाठ नों देश जी इम कहिवे दोप नहीं। ❀

: २९७ :

स्वामीनाथ बोल्या : धर्म तो दया में है। जद हिंसाधर्मी बोल्या : दया २ स्यू पुकारौ छौ। दया राड़ पड़ी उखरली में लोटै। जद स्वामीजी कह्यौ। दया तो माता कही। उत्तराध्ययन अ० २४ आठ प्रवचन माता कहै छै। तिण में दया आय गई। जिम कोई साहुकार आउखो पूरो कियौ। लारै तिण री स्त्री रही। सो सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनें कपूत हुवै ते ऊंधा अवला बोलै। माता नें रंड़कारा री गाल बोलै। ज्यूं दया रा धणी तो भगवान ते तो मुक्ति गया। लारे साध श्रावक सपूत ते तो दया माता रा यत्न करै। अने था जिसा कपूत प्रगटिया सो राड़ २ कहि नें बोलावौ। ❀

: २९८ :

साधपणो लेई शुद्ध न पालै अनें साधरो नाम धरावै नाम धराय पूजावै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियौ : एक मुसला रै पाछै दोय

छाली नाहर दोड्या। जद मुसलौ न्हासनें बिल में पेस गयौ। बिल में आगै लूकड़ी बैठी तिण पूछ्यौ : तू सास धमण होय न्हास नें क्यू आयौ। मुसलो कुवदी ते बोल्यो : अटवी ना जानवर भेला होयनें मोनें चोधर पणौ देवै। सो हूंतो कोई लेऊं नहीं। तिण सू न्हासनें उरहो आयो। जद लूकड़ी बोली : अरे चोधरपणा मे तो वडो स्वाद है। जद मुसलो बोल्यो : थारो मन हुवै तो तू लै। म्हारै तो कोइ चाहीजै नहीं। जद लूकडी चोधरपणौ लेवा बारै नीकली। जद दोनू छाली नाहर उभा हा। सो दोनू कान पकड़ लिया। जद लोही झरती पाछी आई। जद मुशलै पूछ्यौ : पाछी क्यूं आई। तब लूकडी बोली : चोधरपणौ मे खाचा ताण घणी सो कान टूट गया तिण सूं पाछी आई। ज्यूं साधपणो लेई चोखा न पालै दोष लगावै प्रायश्चित न ले अनें साध रो नाम धरावै लोका मे पूजावै ते इहलोक परलोक मे लूकडी ज्यू खराब ह्वै। नरक निगोद मे गोता खायै। ❀

: २९९ :

किणहि कह्यौ : भीखनजी जिहा थें जावो तिहा लोका रे धसका पडै। जद स्वामीजी बोल्या : गारडू आवै गाम मे ते कहै डाकणिया नें प्रभाते नीला काटा मे बालसा जद धसका डाकणिया रै पडै। तथा त्यारा न्यातीला रै पडै। पिण दूजा लोक तो राजी हुवै। ज्यू साध गाम मे आया भेषधारी हीण आचारी ज्या रै धसका पडै। के त्यारा श्रावका रै धसका पडै। अनें हलुकर्मी जीव ह्वै ते तो घणा राजी ह्वै। जाणै बखाण सुणसा। सुपात्रदान देसा। ज्ञान सीखसा। साधा री सेवा करसा। इम राजी हुवै। . ❀

: ३०० :

स्वामीजी सू चरचा करता कोइ ऊधो अवलो बोलै : थारी श्रद्धा कपट री। आचार मे प्रपच घणो। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारी श्रद्धा आचार तो चोखौ है। पिण थानें इसीज दीसे है। आप री आख मे पीलियो हुवै जद मनुष्य पीला २ निजर आवै। लोका नें कहै 'आज-कल

गाम में पीलियो घणो वापरियो मनुष्य पीला ई पीला दीसै। जद लोक बोल्या : मनुष्य तो फरहा फूटरा है। पिण थारी आंख में पीलियो है। तिण सूं मनुष्य थारी निजर में पीला आवै है। ज्यूं श्रद्धा तो पोता री कपट री। गुरु पोता रा खोटा ते सूझै नहीं अनें साधां नें खोटा कहै कपट री श्रद्धा कहै। ❀

: ३०१ :

चोखा गुरु खोटा गुरु ऊपरे नावा रो दृष्टांत स्वामीजी दियो : तीन नावा। एक तो काठ की साजी नावा, एक फूटी नावा, एक पत्थर नीं नावा। साजी नावा समान तो साधु आप तिरै ओरां नें तारै। फूटी नावा समान भेपधारी, आप डूबै भोला नें डबोवै। पत्थर की नावा समान तीन सो तेसठ पाषंडी ते प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसै। समझु प्रथम तो त्यांनै मांनै नहीं। कदा जो गुरु किया हुवै तो छोड़णा सोहरा। फूटी नावा सरीपा भेषधारी त्यानें छोड़णां दोहरा। चतुर बुद्धिवान हुवै ते छोड़ै। ❀

: ३०२ :

भूखा मरतां रोटी रै वासते भेप पहरै त्यां नें कहै साधपणो चोखो पालजो। जद स्वामीजी दृष्टात दियो : पति मूवा तिणरी स्त्री नें सीडी रै बांधनें वालै तिण नें कहै सती माता तेजरा तोड़ज्यो। तो उवा काइ तेजरा तोड़ै। ज्यूं भूखां मरतां रोटी रै वासते भेप पहरे ते कांइ साधपणों पालै। ❀

: ३०३ :

कुगुरां रा पखपाती नें साधु सुहावै नहीं। ते ऊपर स्वामीजी दृष्टात दियो : जीमणवार में तावबालो जीमवा गयो। बीजा लोका नें कहै : पकवान तो कड़वा कीधा। जद लोक बोल्या : म्हांनें तो चोखा लागै। तोनें कड़वा लागै सो थारा डील में जुर है। ज्यूं मिथ्यात रूपियो रोग तिण नें साधु चोखा न लागै। ❀

: ३०४ :

किणहि कह्यौ : भीखनजी थें ढाला में टोलावाला रा चरित ओलपाया सो थानें किसी खबर पडी। जद स्वामीजी बोल्या : म्हें आषाड महिना रा ज्योतषी नहीं छा। काती महिना रा ज्योतसी छा। ज्यू आषाड महिना रो ज्योतषी हुवै ते आगूंच काती महिना रो धान रो भाव बतावै। ज्यूं म्हें आगमियै काल आश्री न कही। अनें काती महिना रो ज्योतषी ते भाव वर्त्ते तेहीज कहै। ज्यूं म्हें वर्त्तमान चरित्र देख्या जिसा बताया। ❀

: ३०५ :

मिथ्यात रूपियो रोग गमावारो अर्थी तिणनें सरधा आचार री ढाला विशेष प्यारी लागै तिण ऊपर स्वामी दृष्टात दियो : ज्यूं वैद कहै लो तेजरा री गोली २। तो तेजरो गमावा रो अर्थी तिणनें तेजरा री गोली विशेष प्यारी लागै। ज्यू श्रद्धा आचार री ढाला साध श्रावक नें तो प्यारी लागैईज है। अनें उण नै विशेष प्यारी लागै। ❀

: ३०६ :

मिथ्यात मिटावा स्वामीजी हेतु युक्ति दृष्टात देवे। जद किणहि पूछ्यौ : इतरा हेतु युक्ति दृष्टात क्यू आणौ। जद स्वामीजी बोल्या : नीसाणै चोट लागै है। नीसाण विना चोट नहीं। ज्यूं मिथ्यात गमावा नें अर्थे हेतु युक्ति दृष्टात देवा छा। ❀

: ३०७ :

किणहि पूछ्यौ : आप रो इसो साकडो मारग किताक वर्ष चालतो दीसे है। जद स्वामी बोल्या : सरधा आचार में सेंठा रहै। वस्त्र पात्र उपगरण री मर्यादा न लोपै। थानक नहीं बंधीजै। जठा ताई मारग चोखो हालतो दीसे है। आधाकर्मी थानक बध्या वस्त्र पात्र री मर्यादा लोप देवै। कल्प लोप नें रहिवो करै जद ढीला पडै अनें मर्यादा प्रमाणै चालै जितरै ढीला न पडै। ❀

: ३०८ :

आधाकर्मी थानक में रहै अनें घर छोड्या कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं जती रे उपासरो १। मथेरण रे पोशाल २। फकीर रे तकियो ३। भक्तां रे अस्तल ४। फुटकर भक्त रे मंढी ५। कनफड़ा रे आसण ६। सन्यासी रे मठ ७। रामसनेहिया रे राम दुवारो कठेयक कहै राममोहिलो ८। घर रा धणी रे घर ९। सेठरे हवेली १०। गाम रा धणी रे कोटरी। कठेयक कहै रावलो ११। राजा रे महल तथा दरबार १२। अने साधां रे थानक १३। नाम में फेर है बाकी सगला घर रा घर है। कठेक कसी बूही। कठेयक कुदाला बूहा। पिण छकाया रो आरम्भ तो ज्यू रो ज्यूं परहो हुओ। ❋

: ३०९ :

अमरसींगजी रो वडेरो वोहतजी ने किणहि पूछ्‌यौ : शीतलजी रा साधां मे साधपणो है। जद वोहतजी कह्यौ : उणा में तो किहा थी हूंतो मोमेंई न सरधूं। जद फेर पूछ्यौ। भीखनजी में साधपणो है। जद वोहत जी कह्यौ : उणामें तो हुवै तो अटकाव नहीं। टवे तो रूप परे है। ❋

: ३१० :

जैमलजी पुर में वखाण देतां घणी परिपदा में किणहि गृहस्थ पूछ्‌यौ : भरी सभा में मिश्र भाषा वोल्यां महामोहणी कर्म वंधै। भीखनजी साध है के असाध। जद जैमलजी वोल्या : भीखनजी चोखा साध है पिण म्हांनें भेपधारी २ कहै तिण सूं म्हेंई निन्हव कहां छां। ❋

: ३११ :

जैतारण में धीरो पोखरणौ तिणनें टोड़रमलजी कह्यौ : भीखनजी कहै थोड़ा दोप सूं साधपणौ भागै। जो यूं साधपणो भागै तो पार्श्वनाथजी री २०६ आर्य्यां हाथ पग धोया काजल घाल्या डावरा डावरी रमाया ते पिण मर ने इन्द्रनी इंद्राणियां हुई अनें एकावतारी हुई। जद धीरजी पोखरणै कह्यौ : पूज्यजी आपां री आर्य्यां रे काजल घलावौ हाथ पग धोवावो डावरा डावरी रमावा री आज्ञा दो। सो ए पिण एकावतारी होय जावै।

जद टोडरमलजी कह्यौ : रे मूरख म्हें इसो काम क्या नें करा। जद धीरजी कह्यौ : न करावो तो उणा ने सरावो क्यू । ❀

: ३१२ :

फेर टोडरमलजी धीरे पोखरणे ने कह्यौ : भीखनजी सूत्र नो पाठ उथाप्यौ। साधु नें असूझतौ दियां अल्प पाप बहुत निर्जरा भगवती मे कह्यौ है। जद धीरजी कह्यौ : पूज्यजी आप गोचरी पधारया म्हारै कटोरदान में लाडू है। ते कटोरदान गोहा में है सो वारे काढ वहिराय देसू। म्हारेई अल्प पाप बहुत निर्जरा हुसी। जद टोडरमलजी कह्यौ : रे मूरख म्हें क्या नै ल्या। जद धीरजी कह्यौ : न ल्यौ तो थाप क्यू करो। ❀

ए दृष्टात केयक तो स्वामीजी रे मूंढे सुण्या। केयक ओर जागा पिण सुण्या। तिण अनुसारे मडाय कोई संक्षेप हुंतो तिणनें उनमान न्याय जाण नै वधारयौ। विस्तार जाणनें सकोच्यो। तिण मे कोइ विरुद्ध आयो हुवै। तथा झूठ लागो हुवै आघो पाछो विपरीत कह्यौ हुवै तो "मिच्छामि दुक्कड़।"

॥ दुहा ॥

संवत उगणीसे तीए। कार्तिक मास मझार।
सुदि पख तेरस तिथ भली। सूर्यवार श्रीकार ॥ १ ॥
हेम जीत ऋष आदि दे द्वादश सत दिपत।
श्रीजीद्वारा सहर में। कियो चोमासो धरखत ॥ २ ॥
हेम लिखाया हर्ष सूं लिख्या जीत धर खत।
सरस रसै करी सोभता। भीक्खु ना दृष्टात ॥ ३ ॥
उत्पतिया बुद्धि आगला। भिक्षु गुण भडार।
हितकारी दृष्टत तसु। साभलता सुखकार ॥ ४ ॥

★